

प्राचीननाटकमणिमाला

मृच्छकटिकभाषा

संसार के उलट फेर की कहानी

महाकवि श्रीशूद्रक के प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ

का

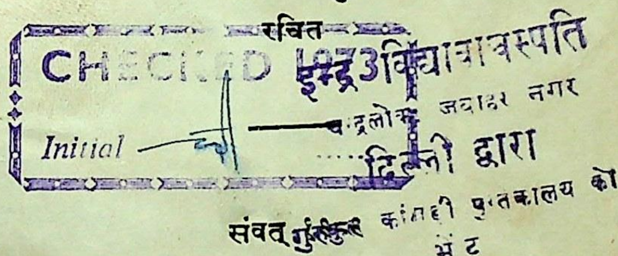
भाषा गद्य और छन्दों में अनुवाद

श्री अवधवासी भूप उपनाम

लाला सीताराम, बी० ए०,

राय बहादुर

रचित



संवत

नेशनल प्रेस, प्रयाग

यह किताब किशोर आदर्श के पास ४२६ मुट्ठीगंज इलाहाबाद में मिलेगी।

छठींवार] १९३२ =)



PREFACE

The Mrichchhakatika, ("Toy-cart" or more literally "Clay-cart") is, says Professor Wilson, "a work of great interest both in the literature and national history of the Hindus." It is "the earliest Sanskrit drama extant attributed (probably out of flattery) to a royal author, king Sudraka, who is said to have reigned in the first or second century B. C." and it is possibly on this account that in the Select Specimens from the Ancient Theatre of the Hindus, Professor Wilson has given it the first place.

"The play is in ten acts and though too long and tedious to suit European theatrical ideas, has nevertheless considerable dramatic merit, the plot being ingeniously developed and the interest well sustained by a rapid succession of stirring incidents and picturesquely diversified scenes of every day life. In fact, its pictures of domestic manners, and descriptions of the natural intercourse of ordinary men and women, followed by the usual train of social evils, make it more interesting than other Sanskrit dramas, which, as a rule, introduce too much of the supernatural, and abound in overwrought poetical fancies unsuited to occidental minds."* "The Mrichchhakatika deals not with princes and princesses but with men and women in the ordinary walks of life ; it gives us an insight in the town life of the olden days with its system of justice and police, its gambling and other vices ; and it is a fairly correct picture of the people and their manners." †

"The hero or leading character (náyaka) of the 'Clay-cart' is Charudatta, a virtuous Brahman, who by his extreme generosity has reduced himself to poverty.

---

* Monier Williams' Indian Wisdom.

† Dutt's Ancient India.

The heroine (náyiká) is Vasantasená, a beautiful and wealthy lady, who although "according to the strictest standard of morality, not irreproachable in character, might still be described as conforming to the Hindu conception of a high-minded liberal woman. Moreover, her naturally virtuous disposition becomes strictly so from the moment of her first acquaintance with Charudatta." (Monier Williams). "The masterpiece of the play, however, is Samsthanaka, the Raja's brother-in-law. A character so utterly contemptible has perhaps been scarcely ever delineated; his vices are egregious; he is coldly and cruelly malicious, and yet he is so frivolous as scarcely to excite our indignation; anger were wasted on one so despicable; and without any feeling of compassion for his fate, we are quite disposed, when he is about to suffer the merited punishment of his crimes, to exclaim with Charudatta, 'Loose him and let him go.' He is an excellent sample of a genus too common in every age in Asia, whose princes have been educated by sloth and servility, and have been ordinarily taught to cherish no principle but that of selfish gratification."*

Dr. Grierson has mentioned two other Hindi translations of this play in his Modern Vernacular Literature of Hindustan. These seem to be out of print. The importance of the play, however, I believe, will be considered sufficient apology for my including a fresh translation of it in the present series.

CAWNPORE.
28th August, 1899. SITARAM.

* Wilson's Hindu Theatre.

पहिली आवृत्ति की भूमिका

—:o:—

अवधपुरी सुखमाअवधि तामधि स्वर्गद्वारि।
जगपावनि सरयू जहाँ बहत सुहावन बारि॥
तहाँ रह्यो कायस्थ एक श्रीशिवरत्न उदार।
श्रीरघुपतिपदकमल महँ ताकी भक्ति अपार॥
सियरघुबरयुगचरनरत तासुत सीताराम।
रासिनाम कविताक्षुगम धरत भूप उपनाम॥
श्रीसुरसरि के तट नगर कानपूर करि बास।
नाटकमाला के रतन कीन्हें चारि प्रकास॥
संवत ऋतुशरनन्दशशि नभ सित छठ शनिवार।
मृच्छकटिकभाषा विरिचि करत लोकउपहार॥
देशकालइतिहास जो जानत चतुर प्रवीन।
गनैं विक्रमहु से अधिक यह नाटक प्रचीन॥
इहाँ बिलोकैं रसिकजन लोकरीति कुल-चाल।
साधारण जन महँ रही सब जैसी तेहि काल॥
दोष न गनत कुलीन करि प्रेम पातुरी संग।
देइ निबाहत प्रानहूँ पातुर प्रेम अभंग॥
जाय अदालत माँह ज्यों दुष्ट प्रकृति के लोग।
झूठ जाल रचि सिध करत नारिबधनअभियोग॥
सभ्यन संग हाकिम करत ज्यों अभियोग विचार।
निर्णय परिपाटी सकल दंडदेनव्यवहार॥
युक्ति अनूठी सहित सब शूद्रक रच्यो सँवारि।
पढ़ैं मुदित मन सुजन तेहि मेरे दोष बिसारि॥

सीताराम

नाटक के पात्र

पुरुष—

चारुदत्त—एक बिगड़ा रईस और नाटक का नायक।
रोहसेन—चारुदत्त का लड़का।
मैत्रेय—नाटक का विदूषक और चारुदत्त का साथी।
वर्द्धमानक—चारुदत्त का नौकर।
संस्थानक—राजा पालक का साला और उज्जयिनी का कोतवाल।
स्थावरक—संस्थानक का नौकर।
आर्यक—एक अहीर जो राजा पालक को मारकर पीछे राजा हुआ।
शर्विलक—एक ब्राह्मण, आर्यक का मित्र।
संवाहक—एक जुआरी, जो पीछे, बौद्धसन्यासी हो गया।
माथुर—जुए को नालवाला।
दर्दुरक—एक जुआरी।
कर्णपूरक } बसंतसेना के सेवक।
कुम्भिलक
फ़ौजदारी अदालत का हाकिम।
सेठ और कायस्थ—अदालत के सभ्य (असेसर)।
वीरक } नगर की रक्षा के अधिकारी (पुलिस के अफ़सर)
चन्दनक
शोधनक—अदालत का नाज़िर।

स्त्री—

बसंतसेना—एक परम उदार पातुरी और नाटक की नायिका।
बुढ़िया—नायिका की मा।
मदनिका—बसंतसेना की लौंडी।
धूता—चारुदत्त की स्त्री।
रदनिका—चारुदत्त की लौंडी।
विट (मुसाहिब), जुआरी, बंधुल, सिपाही, चांडाल, चेरियाँ, आदि।

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः

मृच्छकटिकभाषा

प्रस्तावना

[स्थान—एक कमरा]

(नान्दी)

जय घुटनन लपटत भुजङ्ग बैठे योगासन।
जय रोके निज प्रान किए निज बस इन्द्रिय मन॥
जयति करत संहार सृष्टि सन दृष्टि हटाये।
जयति समाधि अभंग ब्रह्म निज माहिं लगाये॥
जय जयति बैठि साकार प्रभु लाय दृष्टि निज ज्ञानमय।
निज ब्रह्मरूप आकार बिन निरखत श्रीगौरीश जय॥

शम्भुकण्ठ जनु श्याम घन, सदा करै कल्यान।
गौरीभुज सोहत जहाँ, बिजुरीरेख समान॥

(नान्दी के पीछे सूत्रधार आता है)

सूत्र—बस, बस, बहुत हो चुका, लोग उकता गये। आप लोगों से हाथ जोड़कर बिनती करता हूँ कि आज हम लोग मृच्छकटिक नाटक खेलना चाहते हैं जिसको संस्कृत में राजा शूद्रक ने रचा था।

सुघड़शरीर चकोरदृग ससिमुख बारनचाल।
द्विजवर शूद्रक नृप रह्यो बल सोइ धरत विशाल॥
सामवेद ऋग्वेद गणितविद्या पढ़ि डारी।
गजशिक्षा सब सीखि कला वैशिकिहू सारी॥
शिव की कृपा प्रसाद जोति दृग की फिर पाई।
अश्वमेध को यज्ञ कीन्ह निज कीर्ति दृढ़ाई॥

करि पूर्ण काम निज जन्म कर देइ राज निज पुत्र कहँ।
सौ बरिस दिवसदस आयु लहि पैठे नृप सोइ अग्नि महँ॥
समर चहत तप करत अरु जानत वेद अथाह।
रिपुगज से निज भुज भिरे श्रीशूद्रक नरनाह॥

और उनके इस ग्रंथ में

चारुदत्त एक द्विज रह्यो निर्धन गुणी उदार।
सोइ नगरी उज्जैनि में करत बनिज ब्यौपार॥
बसन्तसेना तहँ रही गनिका परम सयानि।
चारुदत्त के देखि गुन तापै रही लुभानि॥
तिन की प्रेमकथा सकल दुष्ट खलन की नीति।
राजा शूद्रक यह रची न्यायालय की रीति॥

उस अपूर्व ग्रन्थ का श्री अवधवासी सीताराम ने यथाशक्ति देशभाषा में अनुवाद किया है। आशा है कि आप लोग कृपा-दृष्टि से हमारा अभिनय देख कर ग्रन्थकार के परिश्रम को सफल करेंगे।

(घूम कर देख कर) अरे! हमारी संगीतशाला सूनी क्यों देख पड़ती है? नट कहाँ चले गए? (सोच कर) हाँ जाना—

पुत्रहीन घर सून है, मित्रहीन जग सून।
मूरख को सब सून है, दारिद सब से ऊन॥

गाना हो चुका; अब बड़ी बेर से गाते गाते गर्मी में घाम के सूखे कमल के बीजों की नाईं भूख के मारे मेरी आँखें कड़कड़ा रही हैं; तो अब घरवाली को बुलाकर पूँछू कि कुछ कलेवा है कि नहीं। अरे, अरे, बेर से गाते गाते सूखे कमल के डंडे की नाईं मेरे हाथ पैर कुम्हलाए जाते हैं, तो अब घर में जाकर देखूँ कि घरवाली ने कुछ बनाया है कि नहीं। (घूम के देख कर) यही तो है मेरा घर, तो अब चलूँ। (घूम कर देख कर) अरे, अरे, आज तो हमारे घर बड़ा सामान हो रहा है—माँड की नाली बह

रही है, कड़ाहों के मारे रसोई का घर ऐसा जान पड़ता है मानो धरती के मुँह पर गोदना गोदा गया है, भोजन की सुगंध से मेरे पेट की आग और भी भड़क उठी। क्या कोई पहिले का रक्खा धन मिल गया है या हमी को भूख के मारे घर में भात ही भात देख पड़ता है! हमारे घर में कलेवा करने को कुछ है नहीं और भूख के मारे हमारे प्रान निकले जाते हैं। और यहां समान नया हो रहा है; एक रंग पीस रही है, एक फूल गूँध रही है। (सोच कर) यह क्या है? अच्छा, घरवाली को बुलाकर पूछूँ (नेपथ्य की ओर देख कर)—प्यारी! इधर तो आओ।

(नटी आती है)

नटी—कहिए।

सूत्र—बहुत अच्छे आई।

नटी—कहिए क्या आज्ञा है?

सूत्र—बड़ी बेर से गाते २ (इत्यादि फिर पढ़ता है)—कुछ हमारे घर में खाने वाने को है?

नटी—जी, सब कुछ है।

सूत्र—क्या क्या है?

नटी—मीठा भात है, घी है, दही है, जो जो आप खा सकते हैं! सो सब कुछ है, सब तो भगवान ने दिया है।

सूत्र—क्या हमारे घर में सब कुछ है! या हँसी कर रही हो?

नटी—(आपही आप) अच्छा लाओ हँसी ही करूँ (प्रकाश) हाट में सब है।

सूत्र—(क्रोध से) अरे तेरा सत्यनाश हो! तू मुझे मिट्टी के ढेले की नाईं आकाश पर चढ़ा कर गिरा रही है।

नटी—(हाथ जोड़कर) क्षमा कीजिए, मैंने हँसी की थी।

सूत्र—तो आज यहां क्या सामान हो रहा है? एक रंग पीसती है, दूसरी माला गूँधती है, आँगन में फूलों का चौक पूरा हुआ है।

नटी—आज व्रत है।

सूत्र—क्या नाम है इस व्रत का?

नट—'अभिरूपपति'।

सूत्र—इसको क्यों किया?

नटी—जिसमें अच्छा वर मिले।

सूत्र—इस लोक में या परलोक में?

नटी—जी परलोक में।

सूत्र—(क्रोध से) देखिये, देखिये, आप लोग! यह हमारा भात लुटाकर परलोक का भतार मांगती है।

नटी—क्षमा कीजिए, मैंने इस लिए किया है कि दूसरे जन्म में भी आपही मिलें।

सूत्र—यह व्रत किसने बताया है?

नटी—आपके मित्र चूर्णवृद्ध ही ने तो।

सूत्र—(क्रोध से) अबे चूर्णवृद्ध! एक दिन तुझे भी राजा पालक नई बहू के जूड़े की नाईं बांध देंगे।

नटी—क्षमा कीजिए, आपही के लिये यह व्रत किया गया है। (हाथ जोड़ पैरों पर गिरती है)।

सूत्र—उठो, उठो, कहो अब इस व्रत में क्या करना चाहिये।

नटी—हम लोगों के बराबर का बाम्हन खिलाना चाहिये।

सूत्र—अच्छा, तो तुम जाओ, हम भी अपने बराबर बाम्हन ढूँढें।

नटी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

सूत्र—(कुछ चलकर) अरे इतनी बड़ी उज्जयिनी में बराबर का बाम्हन कहां ढूँढें (देखकर) अरे, चारुदत्त का मित्र मैत्रेय इधर ही आ रहा है, तो इसी से पूछें—मैत्रेय जी! आप का आज हमारे घर न्योता है।

(परदे के पीछे)

अजी, तुम और बाह्मन न्योतो, हमें छुट्टी नहीं है ।

सूत्र—सब भोजन तैयार है और वहां आपी आप होंगे और कुछ दक्षिणा भी आप को मिल जायगी ।

(परदे के पीछे)

एक बेर तो तुम को जवाब देही दिया, क्या बार बार हठ कर रहे हो ?

सूत्र—यह तो चला गया, अब चलूँ और किसी से कहूँ ।

(बाहर जाता है)

पहिला अङ्क

[स्थान—चारुदत्त के घर के आगे सड़क]

(दुपट्टा हाथ में लिए मैत्रेय आता है)

मैत्रेय—अजी तुम और बाम्हन न्योतो ; अब हम को और और के घर न्योता खाना पड़ेगा ! हा, अब ऐसी दशा हो गई ! जब चारुदत्त की बढ़ती थी तब तो हम दिन रात बिना झगड़े बखेड़े के महँकती महँकती मिठाइयाँ खाते थे । और फाटक पर बैठे रंग रंग के भोजनों से चितेरे की नाईं अपनी अँगुली रंगते थे या चौक में सांड़ की नाईं बैठे पागुर सो किया करते थे ; अब वह दरिद्र हो गये तो पालतू कबूतर ऐसे इधर उधर दाना चुग चुग कर यहां रात को बसेरा लेने आते हैं ! आज चारुदत्त जी के मित्र चूर्णवृद्धि ने चमेली के फूलों से बसा दुपट्टा दिया है और कहा है कि जब चारुदत्त जी संध्या पूजा कर चुकें तो उनको दे देना । (घूमके देखकर) अरे, चारुदत्त जी तो पूजा करके बलि देते हुए इधर ही आ रहे हैं, तो हम भी इन के पास चलें ।

[दूसरा स्थान—चारुदत्त की बैठक]

(चारुदत्त बलि का कटोरा हाथ में लिये हुए खड़ा है और रदनिका उस के पीछे खड़ी है)

चारु—(ऊपर देख कर सांस लेकर)

मेरे घर को देहरी धारत सांझ सकार।
खाई सारस हंस जो झुकि झुकि बारहिं बार॥
सोई बलि अब द्वारपै जमत घास फँसि जात।
ताहि खाय के हाय सब कीटहुँ नाहिं अघात॥

(धीरे धीरे चल कर बैठ जाता है)

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—(आगे बढ़कर) जय हो, बढ़ती हो !

चारु—अरे मैत्रेय, आओ आओ बैठो।

मैत्रे—बहुत अच्छा। (बैठ कर) अजी आप के मित्र चूर्णवृद्ध ने चमेली के फूलों का बसा हुआ यह दुपट्टा दिया है और कहा है कि जब चारुदत्त जी पूजा कर चुकें तब उन्हें दे देना, सो यह लीजिये (दुपट्टा दे देता है)

चारु—(दुपट्टा लेकर कुछ सोचता है)

मैत्रे—अजी क्या सोचते हो ?

चारु—भाई, सुखरस मिलै दुःख कछु पाई।
घन अंधेर दीपक की नाईं॥
सुख लहि जे दरिद्र ह्वै जाहीं।
ते जीवत मृत सरिस लखाहीं॥

मैत्रे—तो आपको क्या अच्छा लगता है, दरिद्र रहना या मरना ?

चारु—मोहिं दारिद अरु मरन में दारिद नाहिं सोहाय।
मरन होत दुख एक ही, दारिद दुखसमुदाय॥

मैत्रे—आप को सोच करना नहीं चाहिए। आपने अपना धन बाँट दिया अब आप अमावस के से चांद हो गये जिस का अमृत देवता पी गये हैं।

चारु—भाई हमको कुछ धन का सोच नहीं।

मो कहँ एक दुःख बड़ लागत।
मो घर अतिथि लोग अब त्यागत॥
सूखत मनहुँ कुम्भ पर दाना।
होत हीनमद द्विरद समाना॥

मैत्रे—अजी धन भी बड़ा पाजी होता है कि बरैयों के डर के मारे अहीरों के लौंडे सा जहाँ उसे कोई खा न डाले वहीं जाता है।

चारु—मोहिं धन-नास सोच कछु नाहीं।
मिलैं भाग सन धन अरु जाहीं॥
एक दुःख मोहिं नित्य जरावत।
अस मित्रहु कछु ढील जनावत॥

और भी—धन नसत उपजत लाज तेहि सन तेज सकल नसात है।
बिन तेज परिभव लहत परिभव पाइ मन मरिजात है॥
मन मरे उपजत सोच बुद्धिहु सोचबस सब नसत है।
बिन बुद्धि को क्षय होत; दारिद सकल अनरथ बसत है॥

मैत्रे—अजी धन के लिये कब तक सोच करेंगे?

चारु—भाई दरिद्रता भी,

चिन्ता घेरे रहत और से लहै अनादर।
मित्रहु देखि घिनात व्यर्थही बैर करत नर॥
सगे पराये होत करत आदर नहिं नारी।
सोचत ही दिन बितत रहै नर सदा दुखारी॥

मैत्रेय, हमने कुल देवताओं को बलि दे दी, अब तुम जाके चौराहे पर बलि दे आओ।

मैत्रे—हम तो न जायँगे।

चारु—क्यों?

मैत्रे—अजी पूजा करने से देवता तुम पर प्रसन्न नहीं होते तो क्यों पूजा करते हो?

चारु—भाई, ऐसा न कहो, यह तो गृहस्थ का धर्म है,

तन मन बच बलिकर्म सो पूजै सुर संसार।
होत प्रसन्न मनुष्य पर, यहि में कौन विचार॥

तो जाओ देवियों को बलि चढ़ा आओ।

मैत्रे—हम न जायँगे और किसी को भेज दीजिये। हम तो बाम्हन हैं, हमसे सब उलटे का पुलटा हो जाता है, जैसे दर्पनी में परछाईं, दहिने का बांया और बायें का दहिना; और एक बात और है; रात की बेर सड़क पर रंडी, बटमार, राजा के लग्गू भग्गू सब घूमते फिरते हैं, इनके बीच में जो कहीं पड़े तो मेढक के धोखे सांप के मुँह में मूसे की दशा हमारी हो जायगी; आप यहां बैठे बैठे क्या करते हैं?

चारु—अच्छा ठहरो हम जप करते हैं?

(परदे के पीछे)—खड़ी रहो बसन्तसेना, खड़ी रहो।

(बसन्तसेना और उसके पीछे संस्थानक, उसका सङ्गी विट और टहलुआ दौड़ते हुए आते हैं)

विट—खड़ी रहो बसन्तसेना, खड़ी रहो।

क्यों डर बस निज अङ्ग की सुकुमारता बिहाय।
नाच माहिं लीला करत डारत सो निज पांय॥
घबरानी चंचल नयनि इत उत चकित निहारि।
मृगी सरिस भागति चली पीछे व्याध बिचारि॥

संस्था—खड़ी रह, बसन्तसेना, खड़ी रह,

गिरति पड़ति भागी तू जाहि।
ठाढ़ी रहु तू मरिहै नाहि॥
तो पर हियरा जरै हमार।
जैसे मांस परे अङ्गार॥

टहलुआ—बाई जी ठाढ़ी रहो,

डर से मोसे भागी जाय।
जैसे मोरी पूँछ फुलाय॥

आय गये हमरे सरकार।
जैसे कूकुर करै सिकार॥

विट—खड़ी रहो, बसंतसेना, खड़ी रहो।
नव कदली सी देह कँपावत॥
वायु-वेग निज बस्त्र हिलावत॥
टाँकी सन ज्यों मनसिल फारत।
लाल कमल पद पद पर डारत॥

संस्था—खड़ी रहो, वसंतसेना, खड़ी रहो,
मोरे मन महँ चाह बढ़ावति।
तोरे बिना नींद नहिं आवति॥
भाग न तू परिहै मोरे बस,
रावन हाथ परी कुन्ती जस॥

विट—वसंतसेना,
क्यों भागति वेगहि तू ऐसी।
गरुड़-त्रास सम नागिनि जैसी॥
सकत धाय मैं लाँघि बयारी।
मैं चाहत नहिँ अपति तुम्हारी॥

संस्था—अजी सुनो,
चोरन की मनहरनिहारि यह नाचनवारी।
मछरीखानेहारि काम की रुचिर पिटारी॥
परधन नासनहारि वंसडूबावनहारी।
सुन्दरि गहनेवारि नहीं बंस-आवनहारी॥
यहि पातुर रंडी वेसवा नाम अनेकन हम कहत।
पै नीच पातुरी दुष्ट यह तऊ हमैं नाहीं चहत॥

विट—क्यों डर बस व्याकुल तू धावति।
कुंडल सन निज गाल घसावति॥
बाजत मनहु चतुर कर बीना।
गर्जत घन हँसी ज्यों दीना॥

संस्था—गहना बाजति जब तू भागति।
राम के डर द्रुपदी अस लागति॥
हरब तुमहि जैसे हनुमान।
धरी सुभद्रा अब तैं जान॥
टहलुआ—आउ राजसारे के पास।
तब तू खैहै मछरी मांस॥
जब पावत हैं मछरी मांस।
तब नहिं कूकुर छुवैं लहास॥
विट—बसंतसेनाबाई,
कटितट सुन्दर किंकिनि बाजत।
तारागन सम लसत बिराजत॥
मुखछबि सैंदुररंग लजावति।
डर बस पुरदेवी सम धावति॥
संस्था—अरबराय के भागति नारि।
कूकुर से जैसे सीयारि॥
जल्दी जल्दी दौरत जाय।
मोरा चित तैं लियो चुराय॥

बसंतसेना—पल्लविका! पल्लविका! परभृतिका! परभृतिका!

संस्था—भाई, कोई और भी है?

विट—डरो न, डरो न,

बसंत—माधविका! माधविका!

विट—अजी, वह तो अपनी लौंडियों को पुकार रही है।

संस्था—भाई, लुगाई ढूँढती है।

विट—हां, हां।

संस्था—लुगाई तो हम सौ मार सकते हैं—हम बड़े सूर हैं।

बसंत—(सूना देख कर) हाय, हाय, क्या सब पीछे रह गई! हाय, तो अकेली ही हूँ!

विट—ढूँढ़ो, ढूँढ़ो।

संस्था—बसंतसेना, रे रे ; परभृतिका को बुला चाहे पल्लविका को, हमसे तुझे कोई छुड़ा नहीं सकता।

भीमसेन जमदग्नि का बेटा।
कुन्ती सुत औ दसकंधर वा॥
अब हम झोंटा धरब तुम्हार।
दुःसासन केरी अनुहार॥

अरे देख, देख—हम मारब पैनी तरवार।
काटब अबहीं मूँड़ तुम्हार॥

तो भाग, न, जो मरने को होता है सो जीता नहीं।

बसंत—हम तो अबला हैं।

विट—जभी तो जीती हो।

संस्था—जभी तो न मरैगी।

बसंत—(आप ही आप) यह सीधी बातें कहता है तब भी जी डरता है, अच्छा यह कहूँ। (प्रकाश) आप लोग मेरे गहने लेंगे।

विट—राम, राम, बसंतसेना जी, बाग की लता से कोई फूल चुराता है? गहनों का नाम न लो।

बसंत—तो फिर क्या करोगे?

संस्था—हम वासुदेव हैं, हमारे पास रह।

बसंत—चुप रे चुप, ऐसी बात न कह।

संस्था—(ताली बजा कर हँसता है)

विट—बसंतसेना जी, आप अपने वेश्यापन के विरुद्ध क्यों बातैं करती हैं?

उद्यानन के सँग रहनही परमधर्म निज मानु।
उगी लता सी राह पै निजहि पातुरी जानु॥
तेरो तन जोबन अहै धन के हाथ बिकान।
नीको लगै कि ना लगै मिलु गनि सबहि समान॥
पंडित बाम्हन मूरख नीच नहात सबै लखु एक तलाई।
बैठत बायस फूली लता सोइ पंख के भार जो मोर नवाई॥

बाम्हन क्षत्रिय वैश्य और शूद्र उतारत एकहि नाव चढ़ाई।
तूहुँ लतासी, तलाईसी, नावसी, पातुरि है ; सबसे मिलु बाई ॥

बसंत—गुन देख के मन लगता है, बरजोरी से नहीं।

संस्था—यह पतुरिया जब से कामदेव के मन्दिर में गई, तब से दरिद्र चारुदत्त से इस का मन लग गया है, हमें नहीं चाहती। उसका घर बायें हाथ है, देखिए यह हमारे हाथ से निकल न जाय।

विट—(आप ही आप) जो छोड़ना चाहिये वही गधा कह रहा है। क्या बसंतसेना चारुदत्त को चाहती है? ठीक है, रत्न रत्न ही के साथ रहता है, इस मूर्ख को लेके क्या करेगी। (प्रकाश) चौधरी का घर क्या बायें है?

संस्था—हाँ, हाँ, बाईं ओर घर है।

बसंत—(आप ही आप) अरे, उनका घर बाईं ओर है तो इन पापियों ने मेरे साथ बड़ा उपकार किया जो मुझे पीतम के घर पहुँचा दिया।

संस्था—अजी, बड़ा अँधेरा है। बसंतसेना ऐसी हेराय गई है जैसे उर्द की ढेरी में मसीका टुकड़ा।

विट—बड़ा अँधेरा है।

यद्यपि सब कुछ लखि सकैं परे अँधेरे माँहि।
खुले तऊ मूँदे सरिस देखैं दृग कछु नाँहि ॥
और, बरसै जनु काजल गगन।।तम लिपटत सब गात।
दीठि नीचसेवा सरिस बिफल भईसी जात ॥

संस्था—अजी हम तो बसन्तसेना को ढूँढ़ते हैं।

विट—तुम्हें कोई चिन्ह मिलता है?

संस्था—कैसा चिन्ह?

विट—गहनों की झंझनाहट या फूलों की महक?

संस्था—अजी, हम फूलों की महक सुन रहे हैं और नाक में अँधेरा भरा है तो भी गहनों की झंनझनाहट साफ देख रहे हैं।

विट—(अलग बसंतसेना से) बाई जी !

तुम तम बस लखि परौ न कामिनि।
छिपी मेघ भीतर ज्यों दामिनि॥
मालगन्ध औ नूपुर की धुनि।
तुमहि जनावत लेहु हिये गुनि॥

बाई जी, आपने सुना ?

बसंत—(आपही आप) सुना और समझ भी लिया। (गहने उतार डालती है और माला फेंक देती है—कुछ चल कर हाथ से छूकर) अरे भीत टटोलने से खिड़की जान पड़ती है सो भी संयोग से बन्द है।

चारु—(भीतर से) भाई, हमारा जप हो गया है। अब तुम चौराहे पर बलि दे आओ।

मैत्रे—(भीतर से) मैं न जाऊँगा।

चारु—हाय ! हाय !!

दारिद्र बस कोउ तासु कहने माहिं नाहीं रहत है।
रिपु बनत नेही मीतहू, नित विपति नई सो लहत है॥
बल घटत ताके शीलससि की ज्योतिहू घटि जात है।
जो औरहू कोउ पाप कीन्हो ताहि सबै सुगात है॥
साथ नहीं कोउ ताको करै अरु आदर से नहि बोलत कोई।
उत्सव में घर जात धनीन के देखैं अनादर से सब लोई।
थोरेहि वस्त्र धरे तन लाजसे दूरि चलै सब लोग से सोई।
पाँचही पाप बड़े हैं लिखे हम जानैं छठो यह दारिद होई॥

दारिद सोच होत मोहि एहा।
हित सम रहत मोरि तुम देहा॥
जैहैं निसरि जबै मम प्राना।
रहिहै कहाँ तुम्हार ठिकाना॥

मैत्रे—(उदास होकर) अच्छा, जो हमी को जाना है तो हमारे साथ रदनिका को कर दो।

चारु—रदनिका, मैत्रेय के साथ जाओ।

रदनि—बहुत अच्छा।

मैत्रे—तुम दिया लेलो और बलि उठालो, हम खिड़की खोलते हैं। (खिड़की खोलता है)

बसंत—यह मेरे ही लिए खिड़की खुली है, मैं घर में घुस जाऊँ। (देख कर) हाय दिया कहाँ से आया? अंचल से दिया ठंढा करके घुस जाती है)।

चारु—मैत्रेय, क्या हुआ?

मैत्रे—अजी खिड़की खुलते ही बयार का झोंका जो लगा तो दिया बुझ गया। रदनिका तुम बाहर चली जाओ, हम भीतर के चौक से दिया बारे लाते हैं। (बाहर जाता है)

संस्था—अजी, बसंतसेना को कब से ढूँढते हैं, नहीं मिलती।

विट—ढूँढिये।

संस्था—(विट को पकड़ कर) यह पकड़ी, यह पकड़ी।

विट—अजी यह तो हम हैं।

संस्था—अच्छा तो तुम अलग खड़े हो (फिर टटोल के टहलुए को पकड़ कर) अब पकड़ा।

टहलुआ—सरकार, मैं तो चाकर हूँ।

संस्था—इधर चाकर, इधर संगी, संगी चाकर, चाकर संगी तुम एक ओर खड़े हो। (फिर टटोल कर रदनिका को पकड़ कर) अब पकड़ा बसंतसेना को।

भागत निशि अँधियार में सूँघि मालतीबास।
द्रुपदी को चाणक्य ज्यों धरी पकरि कचपास॥

विट—यह गणिका जोबनमदमाती।
गुनी कुलीन पुरुष रँगराती।
गूँधि फूल जेहि नित्य सँवारा।
खैंचत गहि सोइ केश शकारा॥

संस्था—हम पकरा धरि तोर कपार।
जूरा झोंटा केसा बार॥
रोउ चिघरु औ सोर मचाउ।
शंकर शिव महदेव बुलाउ॥

रदनि—(डरके) आप क्या करेंगे ?

विट—अजी यह तो किसी और की बोली है।

संस्था—अजी जब बिल्ली दही चुराने को होती है तो कैसी बोली बदल लेती है ?

विट—अरे, क्या बोली बदल डाली ? बड़ा अचरज है और अचरज भी क्या है—

सिखे बोल बहु खानि के यह नाटक के हेत।
नहिं अचरज बानी बदलि जो यह धोखा देत॥

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—अरे, साँझ की बयार से दिया ऐसा फुरफुराता है जैसे बलिदान के बकरे का जी। (बढ़के) अरे रदनिका !

संस्था—विट जी, कोई और आगया।

मैत्रे—देखो, यह अच्छी बात नहीं है कि चारुदत्तजी दरिद्र हो गये तो उनके घर जिसका जी चाहे घुस आवै।

रद—देखो मैत्रेय जी ! हमारी कैसी बेइज्जती करते हैं।

मैत्रे—यह तुम्हारी बेइज्जती नहीं, हमारी है।

रद—और क्या आपकी तो हुई है।

मैत्रे—तो क्या बरजोरी करता है?

रद—जी हाँ।

मैत्रे—सच ?

रद—सच।

मैत्रे—(क्रोध से लाठी उठाके) राम, राम, अपने घर में तो कुत्ता भी सेर होता है, हम तो बाम्हन हैं। तो अब इसी लाठी से जो हमारे भाग की नाईं टेढ़ी है पाजी का सिर तोड़ डालेंगे।

विट—देवता! क्षमा करो क्षमा करो।

मैत्रे—(विट को देख कर) इसने कुछ नहीं बिगाड़ा (संस्थानक को देखकर) अबे क्यों बे राजा के साले पाजी! यह कौन भलमंसी है कि आज चारुदत्त जी दरिद्र हो गये तो क्या उनके गुनों से उज्जयिनी की बड़ाई नहीं है जो तू उनके घर में घुस के नौकर चाकर को सताता है।

बुरा होत धन नसे न कोई।
दैव सौंह सो बुरा न होई॥
सदाचार जो छांड़त लोगा।
धनी रहेहू निन्दनजोगा॥

विट—(घबड़ा के) महाराज! क्षमा करो, क्षमा करो। और के धोखे ऐसा अपराध किया, कुछ गर्व से नहीं किया।

हम ढूँढ़त एक कामिनी—

मैत्रे—इस को?

विट—राम राम— जो तन निज आधीन।
सो भागी धोखा परे यह कलंक हम लीन॥

तो अब कृपा करके क्षमा कीजिए (तलवार रख कर हाथ जोड़, पैरों पड़ता है)

मैत्रे—तुम बड़े भले मानुस हो, उठो उठो, हमने बिना जाने तुम्हें कहा, अब जान गये तो क्षमा मांगते हैं।

विट—आप भी हमारा अपराध क्षमा कीजिए; हम तो तब उठेंगे जब आप हमारी एक बात मान लेंगे।

मैत्रे—कहो कहो।

विट—कृपा करके यह बात चारुदत्त जी से न कहियेगा।

मैत्रे—न कहैंगे।

विट—विप्र अनुग्रह तोर यह हम धारैं निज माथ।
हम हारे गुणशस्त्र से यदपि शस्त्र निज हाथ॥

संस्था—(रोष से) तुम्हें क्या हुआ जो पाजी बरूप के हाथ जोड़ के पांव पड़ते हो ?

विट—हम डरते हैं।

संस्था—किसको डरते हो ?

विट—चारुदत्त के गुणों को।

संस्था—उसमें कौन गुण है जिसके घर में खाने को नहीं है ?

विट—ऐसा न कहो।

हम सम जन पालत भयो, चारुदत्त धनहीन।
नहि याचक अपमान तिन, कबहुँ रहे धन कीन॥
ग्रीषम ऋतु महँ जल भरे, विमल तड़ाग समान।
नित प्रति व्याकुल नरन की प्यास बुझाय सुखान॥

संस्था—(क्रोध से) कौन है लौंडी का बच्चा ?

श्वेतकेतु वह अमित प्रभाऊ।
पाँडव राधापूत जटाऊ॥
कुंतीसुत जायो जेहि रामा।
धर्मपुत्र के अश्वत्थामा॥

विट—अजी तुम कैसी मूर्ख की नाईं बातें करते हो ? वह चारुदत्त हैं,

दीन काज कल्पवृक्ष, गुनन झुके हैं सोई,
सज्जन के हेत सगे बंधु के समान हैं।
सभ्यन के दर्पन, कसौटी से चरित्र के हैं,
शील के तरंगन के सागर महान हैं।
करते भलाई चित्त काहू को दुखावें नाहिं,
सरल उदार गुनमनि के निधान हैं।
गुन अधिकाई से है जीना उनहीं को धन्य,
भाथी से तो और सबै धारतेई प्रान हैं॥

तो यहाँ से चल दो।

संस्था—बिना बसंतसेना को लिये ?

विट—गई बसंतसेना ।

संस्था—कैसे ?

विट—अन्धे की ज्यों दीठि, रोगलागे तन बल ज्यों ।
आलस कीन्हें सिद्धि मूर्ख की बुद्धि सकल ज्यों ॥
लती पुरुष को पठन करै जो नहि अभ्यासा ।
रति सी तुम यहँ आइ गई वैरी के पासा ॥

संस्था—हम तो विना बसन्तसेना को लिये न हटैंगे ।

विट—अजी तुमने यह भी सुना है—
गज को फन्दा डारि, हय बस कीजै रास गहि ।
मनही बस करु नारि, जाओ न जो यह करि सको ॥

संस्था—तुम जाते हो तो जाव हम न जायँगे ।

विट—हम जाते हैं ! (बाहर जाता है)

संस्था—जाओ भाड़ में—(मैत्रेय से) अरे पाजी बरुए ! तेरे तो कौए के पंजे से सिर में बाल हैं ; बैठ, बैठ ।

मैत्रे—हम तो बैठे ही हैं ।

संस्था—किसने बैठाया ?

मैत्रे—दई ने ।

संस्था—उठ उठ ।

मैत्रे—उठैंगे ।

संस्था—कब ?

मैत्रे—जब फिर भगवान् सीधे होंगे ।

संस्था—अरे रो रो ।

मैत्रे—रुलाए तो जाते हैं ।

संस्था—कौन रुलाता है ?

मैत्रे—अभाग ।

संस्था—अरे हँस हँस ।

मैत्रे—हँसैंगे ।

संस्था—कब ?

मैत्रे—जब फिर चारुदत्त की बढ़ती होगी।

संस्था—हेरे पाजी बरुए ! हम तुझ से कहते हैं, तू हमारी ओर से दरिद्री चारुदत्त से कह कि यह सोनेवाली नया नाटक देख कर उठी सूत्रधारी सी रंडी की लड़की बसंतसेना कामदेव के बाग के मेले के दिन से तुम्हें चाहती है, हम लोग उसे बरजोरी पकड़ना चाहते थे सो तुम्हारे घर में घुस गई, उसे तुम आके हमारे हाथ सौंप दो नहीं तो मरते दम तक हमारा तुम्हारा बैर रहेगा। और देखो—

कुम्हिड़ा डंठल माँहि जब गोबर धरो लगाय।
माँस बघारी घीव में धरै जो साग सुखाय॥
चुरयो ऋतु हेमंत की धरो राति को भात।
धरो रहै बासी तऊ कबहूँ नाँहि बसात॥

अच्छी तरह कहना और झट पट कह डालना और ऐसा कहना कि हम अपने महल से बँगले पर से बैठे बैठे सुनें। न कहोगे तो कैथे के गोले की नाईं तुम्हारा सिर तोड़ डालेंगे।

मैत्रे—अच्छा कह देंगे।

संस्था—(अलग टहलुए से) विट जी गये ?

स्थावरक—जी हाँ।

संस्था—तो हम भी भागैं।

स्थाव—लीजिये, तलवार लीजिये।

संस्था—तुम्हीं लिये रहो।

स्थाव—नहीं सरकार, आप लीजिये।

संस्था—(उल्टी तलवार पकड़ कर)।

अंडे रंग खुली तरवारि।
डारि म्यान महँ काँधे धारि॥
लखि कूकुर ज्यों पीछे लागत।
स्यार सरिस मैं घर को भागत॥

(संस्थानक और स्थावरक बाहर जाते हैं)

मैत्रे—रदनिका तुम अपना हाल चारुदत्त जी से न कहना उन्हें धन जाने का योंही दुख है और भी उदास हो जांयगे ।

रद—मैत्रेय जी मैं रदनिका हूँ मेरे मुँह से बात न निकलेगी ।

मैत्रे—बहुत अच्छा ।

चारु—(बसंतसेना से) रदनिका ! रोहसेन हवा में सो गया है उसे जाड़ा लगता होगा उसे भीतर पहुँचा के यह दुपट्टा ओढ़ा दो । (दुपट्टा फेंक देता है)

बसन्त—(आप ही) मुझे अपनी टहलनी समझ रहे हैं ।

(दुपट्टा उठा कर सूँघ कर) अरे चमेली के फूलों से बसा हुआ है ; आप जवानी का सुख भूले नहीं बैठे हैं । (दुपट्टा ओढ़ लेती है ।

चारु—अरी रदनिका रोहसेन को भीतर पहुँचा दे ।

बसन्त—(आपही आप) मेरे ऐसे भाग कहां कि आप के घर के भीतर जाऊँ ।

चारु—अरी रदनिका बोलती तक नहीं ! हा !

नसी जवै घनसंपति सिगरी ।
भगवतकोप दशा जब बिगरी ॥
मित्र होत रिपु, जन अनुरागी ।
रहे सदा सों होत बिरागी ॥

(रदनिका और विदूषक आते हैं)

मैत्रे—यह है रदनिका ।

चारु—और यह कौन है ।

अन जाने दूषित करी जेहि मैं वस्त्र उढ़ाय ।

बसंत—नहीं, मेरी बड़ाई हुई ।

चारु—चंद्रकला सी शरद के घन से ढकी लखाय ॥

पराई स्त्री को देखना न चाहिये ।

मैत्रे—अजी यह पराई स्त्री नहीं हैं ; बसन्तसेना बाई हैं, कामदेवबाग के मेले के दिन से आप पर रीझी है।

चारु—अरे यह बसन्तसेना है ? (आप ही आप)

जाकी उपजी चाह मन रह्यो न जब धन पास।
करै निबल के कोप सम अपनहि तन बल नास॥

मैत्रे—अजी आप से राजा के साले ने यह कहला भेजा है।

चारु—क्या ?

मैत्रे—'यह सोने वाली......घुस गई' तक कहता है।

बसंत—(आपही आप) बरजोरी से पकड़ना चाहते थे। जो सच है तो इस में मेरी कैसी बड़ाई होती है।

मैत्रे—'उसे—तुम से वैर रहेगा' तक कह जाता है।

चारु—(अवज्ञा से) सिडी है (आपही आप) अरे, यह तो देवता की नाई पूजने जोग है, जब मैंने कहा था उस समय

यहि हम कहा जाहु घर माहीं।
लखि मम दशा चली यह नाहीं॥
सब से मिलत ढीठ यह जाती।
पुरुष सौंह बोलत सकुचाती॥

(प्रकाश) बसन्तसेना बाई! हमने बिना जाने आप को अपना नौकर समझ के बुलाया था सो हमारा अपराध क्षमा कीजिये, हम आप के पांव पड़ते हैं।

बसन्त—मैं भी बिना आज्ञा के जहां मुझे आना न चाहिए चली आई सो मैं भी आप के पांव पड़ती हूँ, क्षमा कीजियेगा।

मैत्रे—अजी तुम दोनों ने तो धान की बाल की नाई अपने सिर से सिर मिला दिया। हम भी हाथी के घुटने ऐसी खोपड़ी झुका के दोनों को मनाते हैं। (उठता है)

चारु—अच्छा रहने दीजिए।

बसन्त—(आपही आप) कैसी चतुराई से बात छेड़ी है। आज इस तरह आके यहां रहना अच्छा नहीं है। (प्रकाश) सार्थवाह

जी ! आप मुझ पर कृपा करते हैं तो मैं यह चाहती हूँ कि यह गहने आप के यहां छोड़ जाऊँ ये पापी गहनों के लिये मेरे पीछे पड़ते हैं।

चारु—यह घर इस कामका नहीं है कि इसमें थाती रक्खी जाय।

वसन्त—आप क्या कहते हैं थाती भले मानसों को सौंपी जाती है कि घरों को?

चारु—मैत्रेय गहने ले लो।

वसन्त—आपने बड़ी कृपा की। (गहने देती है)

मैत्रे—(लेकर) जय हो आप की।

चारु—क्या बकते हो यह थाती है।

मैत्रे—(अलग) थाती है, जो इसे चोर लेजायँ!

चारु—आजही कल में।

मैत्रे—इस थाती को?

चारु—हम आप ही के पास भेजवा देंगे।

वसन्त—मैं चाहती हूँ कि बाम्हन देवता मुझे घर पहुँचा दें।

चारु—मैत्रेय, चले जाओ आप के साथ।

मैत्रे—अजी बाई जी की हंसों की सी चाल है, तुम जाओगे तो हंस ऐसे लगोगे। हम ठहरे बाम्हन, हमें चौराहे के उतारा ऐसा कुत्ते नोच खांयगे।

चारु—अच्छा हमीं आप के साथ जायँगे तो मशाल जलवाओ।

मैत्रे—वर्द्धमानक! मशाल जलाओ।

वर्द्ध—(अलग बिदूषक से) तेल तो है नहीं मशाल कैसे जलै?

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) अजी हमारी मशालें दरिद्री यारों से रंडियों की नाईं बिना सनेह की हो गईं।

चारु—क्या करोगे मशाल ले के?

राजमार्ग को दीप यह ताराग्रहगण साथ।
गोर कामिनीगाल से उदय होत निशिनाथ॥
जाकी किरनैं ऊजरी परत अँधेरे माँहिं।
गिरति दूध की धार जनु कीचड़ बीच लखाहिं॥

(कुछ चलकर) आइये बसन्तसेना जी, आप का महल यही है।
(बसन्तसेना चारुदत्त को अनुराग से देखती हुई बाहर जाती है)

चारु—बसन्तसेना को घर पहुँचा आये अब चलो भीतर चलैं।

सड़क लखौ सूनी परी घूमत पहरेदार।
चोर फिरत हैं रात को तुम रहियो हुसियार॥

(चलकर) अच्छा तुम यह डब्बा रात को रखना ; बर्द्धमान दिन को रख लेगा। (दोनों बाहर जाते हैं)

दूसरा अङ्क

[पहिला स्थान—बसंतसेना का घर]

(एक चेरी आती है)

चेरी—(आप ही आप) अम्माने मुझे बाई जी के पास भेजा है तो उन्हीं के पास चलूँ (घूम के देखके) बाई जी यह बैठी कुछ सोच रही हैं। (बाहर जाती है)

[दूसरा स्थान—बसंतसेना के घर का दूसरा कमरा]

(बसन्तसेना बैठी है, मदनिका खड़ी है)

बसन्त—हाँ तो फिर?

मद—बाई जी कुछ तो नहीं; आपने कुछ तो नहीं कहा।

बसन्त—मैंने क्या कहा?

मद—' तो फिर '।

बसन्त—(भौं हिलाकर) हाँ।

(चेरी आती है)

चेरी—बाई जी! अम्मा ने कहा है कि पूजा कर लीजिये।

बसंत—अरी अम्मा से कह दे आज न नहाऊँगी, आज बाम्हन पूजा करले।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

मद—(हाथ जोड़कर) बाई जी! कसूर माफ हो? जी नहीं मानता, एक बात पूँछती हूँ—आज कल आप का क्या हाल है?

बसंत—अरी मैं कैसी हो रही हूँ?

मद—आप सुध बुध भूली कुछ सोचा करती हैं इससे जान पड़ता है कि आप का मन किसी से लगा है?

बसंत—तूने ठीक जाना, तू और का मन जानने में बड़ी चतुर है।

मद—तो बहुत अच्छा है। किस जवान के आज भाग खुले? कोई राजा या राजा का प्यारा है जिसके सेवने का मन है।

बसंत—अरी सेवना नहीं चाहती, रमना चाहती हूँ।

मद—तो कोई पढ़े लिखे बाम्हन से मन लगा है।

बसंत—अरी बाम्हन को तो मैं पूजती हूँ।

मद—तो क्या कोई देश देश घूम कर व्यौपार करने वाले धनी बनिया महाजन से?

बसंत—अरी, व्योपार करनेवाले प्रीति लगा के परदेश चले जाते हैं और उन के वियोग में मरना पड़ता है।

मद—तो न राजा, न राजवल्लभ, बाम्हन, न महाजन, तो फिर ऐसा कौन है जिसे आप चाहती हैं?

बसंत—अरी, तू मेरे साथ कामदेव के बाग गई थी?

मद—जी हाँ गई थी।

बसंत—तो फिर क्यों अजान ऐसी पूँछती है?

मद—जी जाना, जिनके घर आप छिप के बची थीं।

बसंत—क्या नाम है उनका बताओ।

मद—जी वही जो सेठों के चौक में रहते हैं।

बसंत—अरी नाम बता।

मद—जी उनका तो भला सा नाम है। चारुदत्त जी!

बसंत—(हर्ष से) वाह मदनिका वाह! तूने .खूब जाना!

मद—(आप ही आप) तो यह कहूँ (प्रकाश) वह तो दरिद्र हैं।

बसंत—इसीसे तो चाहती हूँ। दरिद्र से आँख लगने से पातुर को कोई बुरा नहीं कहता।

मद—कहीं भौंरी भी बेबौर के आम के पास जाती है।

बसंत—तभी तो उन्हें मधुकरी कहते हैं।

मद—जो वही हैं तो चलिये। उनसे आप मिलिये।

बसंत—अरी उनके पास यों जाना अच्छा नहीं। वह कुछ दे तो सकते नहीं ऐसा न हो उनका मिलना कठिन हो जाय।

मद—इसी लिये अपने गहने उनके घर छोड़े?

बसंत—हाँ।

(परदे के पीछे)

अरे भाई, पकड़ो! पकड़ो! दस मोहर हार कर जुआरी भागा जाता है!! खड़ा रह रे कहाँ भाग के जायगा!

(घबराया हुआ संबाहक आता है)

संबा—जुआरी की भी बुरी गति है। हाय, हाय बन्धन तोड़ कर भागे गधे की नाई मुझे मारते हैं और अब नहीं बचता। जुआरी मेरे ऊपर ऐसे दौड़ रहे हैं जैसे कर्ण की शक्ति घटोत्कच पर गिरी थी।

भागो अवसर पाय, लेखक सन अरुझत सभिक।
राह बीच महँ आय जाउँ कौन की सरन अब॥

तो अब इस सभिक जुआरी से बचने का यह उपाय करूँ कि उलटे पाँवों चल कर इस सूने मन्दिर में देवी बन जाऊँ।

(मन्दिर के भीतर घुसकर देवता के स्थान पर खड़ा हो जाता है)

(माथुर और एक जुआरी आता है)

जुआरी—जाउ इन्द्र की सरन कै भागि पैठु पाताल।
शिवहु सभिक सों नहिं सकै तेहि बचाय यहि काल॥

माथुर—दै सभिकहि धोखा कहँ जात।
मेरे डर से कांपत गात॥
गिरत परत उठि उठि पुनि धाय।
अपने कुल जस कारिख लाय॥

जुआरी—(पैर के चिह्न देखकर) इधर गया है, इधर आगे देखो पैर के चिह्न नहीं मिलते।

माथुर—(देखकर, सोचकर) अरे उलटे पाँव हैं यह सूनी मठिया है, (सोचकर) धूर्त जुआरी उल्टे पाँवों से मन्दिर में घुस गया है।

जुआरी—तो चलो मन्दिर में चलें।

माथुर—अच्छा।

(मन्दिर में घुसकर देखते हैं और एक दूसरे को इशारा करते हैं)

जुआरी—क्या काठ की मूरत हैं?

माथुर—नहीं, नहीं पत्थर की तो है (मूर्ति को हिला चला कर) आओ यहीं जुआ खेलें।

(दोनों बैठ कर जुआ खेलते हैं)

संवा—(जुआ खेलने की घबराहट जानता हुआ) अरी,
पैसा जाके पास नहिं परत दावँ घबराय।
सुनत नगारा और को गये राज जिमि राय॥

जुआरी—हमारा दांव है हमारा दांव।

माथुर—नहीं, नहीं, हमारा दांव है।

संवा—(झटझट आगे बढ़ कर) अजी हमारा दांव है।

जुआरी—(संवाहक को पकड़ कर) क्यों बचा, अब तो पकड़ लिये गये।

माथुर—(पकड़ कर) क्यों बे, अब तो पकड़ गया ! ला दस मोहर।

सम्बा—देंगे ?

माथुर—अभी दे।

सम्बा—कृपा कीजिये, दे दूँगा।

माथुर—नहीं अभी ला।

सम्बा—मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ (माथुर के पाँव पड़ता है दोनों उसे मारते हैं)

माथुर—चल तू जुआरियों की मंडली में पकड़ा गया।

सम्बा—(उठकर रोता हुआ) हाय, क्या मुझे मण्डली ने पकड़ लिया ! हाय, अब क्या करूँ ; मण्डली से बच कर कहाँ जाऊँ कहाँ से दूँ।

माथुर—अच्छा जिम्मा करो।

सम्बा—अच्छा (जुआरी के हाथ जोड़कर) आधा छोड़ दो तो आधा हम तुम्हें दे दें।

जुआरी—बहुत अच्छा आधा ही दो।

सम्बा—(माथुर से) आधे का मैं ज़िम्मा करता हूँ आधा आप छोड़ दीजिए।

माथुर—क्या हर्ज है, ऐसा ही सही।

सम्बा—(प्रकाश) आधा आपने भी छोड़ा ?

माथु—छोड़ा।

सम्बा—(जुआरी से) आधा आपने भी छोड़ा ?

माथु—हाँ छोड़ा।

सम्बा—अच्छा तो अब मैं जाता हूँ।

माथु—जायगा कहाँ, दस मोहर दे।

सम्बा—देखते हैं आप लोग ! एक तो कहता है कि आधे का ज़िम्मा किया दूसरा कहता है कि आधा छोड़ा और मुझसे मांग भी रहे हैं।

माथु—(पकड़ कर) अरे धूर्त्त ! हम माथुर हैं, हमारे सामने तेरी धूर्ताई न चलेगी ; लेआ अभी सब धर दे ।

सम्बा—कहाँ से दूँ ।

माथु—बाप को बेंच के दे ।

सम्बा—मेरे बाप कहाँ ?

माथु—मा को बेंच के दे ।

सम्बा—मेरी माँ कहाँ है ?

माथु—अपने को बेंच के दे ।

सम्बा—अच्छा चलिये सड़क पर चलें ।

माथु—चल ;

सम्बा—बहुत अच्छा (कुछ चल कर) अरे भाई ! इस सभिक के हाथ से मुझे कोई दस मोहर को लेते हो ? (आकाश में) क्या कहते हो ' क्या करोगे ' । तुम्हारे घर के टहल करेंगे । अरे इन्होंने तो कुछ उत्तर न दिया और चले गये ; तो अब और किसी से कहें (अरे भाई ! इत्यादि फिर कहता है) हाय, ए तो मेरी सुनते ही नहीं ! चारुदत्त जी के कंगाल हो जाने से मेरी यह गति हो गई ।

सम्बा—कहाँ से दूँ ? (धरती पर गिर पड़ता है—माथुर उसे घसीटता है)

सम्बा—अरे भाई मुझे कोई बचाओ !

(दर्दुरक आता है)

दर्दु—जुआ भी बेसिंहासन का राज है ।

हरत देत धनही नित सोई ।
हार जीत सोइ गनत न कोई ॥
राजा सम नित धनहि दिखावत ।
जन अनेक निज साथ नचावत ॥
मिली जुआ से सम्पति सारी ।
मिले जुआ से हित औ नारी ॥

किये जुआ से भोग बिलासा।
भयो जुआ से सर्वसनासा॥
तीये से सर्वस गयो नक्की उपजी आस।
सूखि दुआ से देह अरु चौक भयो सवनास॥

(आगे देख कर) अरे! यह तो पुराने सभिक माथुर इधर ही आ रहे हैं। अब तो हम भाग भी नहीं सकते, तो मुँह लपेट कर अलग खड़े हो जायँ (दुपट्टे को देख कर)

यदि पट में हैं छेद हजार।
यहि के देखि परैं सब तार॥
यह पट ओढ़े काह छिपावै।
यह पट गठरी बँधी सुहावै॥

क्या करैगा यह हमारा?

एक पाँव भुइँ मां धरे एक धरे आकाश।
तौलौं इहाँ खड़ो रहौं जौलौं दिवसउजास॥ ✗

माथुर—दे या दिला दे।

सम्बा—कहां से दूं? (माथुर उसको फिर घसीटता है)

दर्दु—यह क्या हो रहा है? (आकाश से) "इस जुआरी को सभिक मार रहा है और कोई छुड़ाता नहीं। अच्छा अब दर्दुरक छुड़ायेगा"। (आगे बढ़ कर) हटो। (देखकर) अरे, यह तो माथुर है और बेचारा संबाहक है, यह क्या खाके जुआ खेलैगा।

सीस झुकाय सबेरे से सांझ लौं बैठि सकै जो जुआ महँ नांहीं।
हारे पै मारत खींचत पीठ पै जाके न ईंट के दाग लखाहीं।
कूकुर ऐसे जुआरी सदा मिलि जाकी न जांघ को मांस चबाहीं।
सो बपुरा अति कोमल देह को नाहक आय फंस्यो यहि मांहीं॥

अच्छा तो अब माथुर को मना करैं। (प्रणाम करके) माथुर जी, राम राम।

माथुर—राम राम!

दर्दु—माथुर जी, यह क्या कर रहे हो?

माथु—अजी यह दस मोहर हारा है।

दर्दु—तो कौन बड़ी बात है?

माथु—(दर्दुरक की कांख से दुपट्टा खींच कर) देखते हैं आप लोग, यह सत्तर छेद का दुपट्टा लिये है और कहता है कि दस मोहर कौन बड़ी बात है।

दर्दु—अबे, हम दस मोहर एक दांव में जीतते हैं और जिसके धन होता है क्या वह कांख में दाबे फिरता है।

महा नीच तैं नष्ट तैं दस मोहर के काज।
पांच इन्द्रियन को मनुज मारे डारत आज॥

माथुर—भाई, तुम्हें दस मोहर कुछ नहीं हैं हमें तो बहुत कुछ हैं।

दर्दु—अच्छा तो इसे दस मोहर और दो, यह फिर जुआ खेले।

माथुर—तो क्या होगा?

दर्दु—जो जीतैगा तो देगा।

माथुर—जो न जीते?

दर्दु—तो न देगा।

माथु—क्या बकते हो, जो तुम्हें नहीं अच्छा लगता तो तुम्हीं दे दो। तू बड़ा धूर्त है, माथुर तुझसे घट नहीं, जा दूर हो, हमने तुझ ऐसे लुच्चे बहुत देखे हैं।

दर्दु—कौन है लुच्चा?

माथु—तू है लुच्चा!

दर्दु—तेरा बाप है लुच्चा! (संवाहक से भाग जाने का इशारा करता है)

माथु—क्यों बे छिनाल के लड़के! तू इसी लिये जुआरी बना है!

दर्दु—हां, हमने ऐसे ही जुआ खेला है।

माथु—अबे संवाहक, दे दस मोहर।

संवा—देता हूँ (माथुर उसे घसीटता है)

दर्दु—क्यों बे, हमारे पीछे दिक किया तो किया, हमारे सामने भी दिक करैगा ?

(माथुर संवाहक को खींच कर उसकी नाक में एक घूँसा मारता है, संवाहक की नाक से लोहू निकल आता है और वह धरती पर गिर पड़ता है, दर्दुरक बीच में पड़ जाता है। माथुर दर्दुरक को मारता है)

माथु—अबे छिनाल के लड़के पाजी, देख तो तुझे इसका कैसा फल मिलता है।

दर्दु—अबे, आज तो हमने तुझे सड़क पर मारा, कल तुझे कचहरी में मारेंगे तब देखना।

माथु—अच्छा देखेंगे।

दर्दु—कैसे देखोगे ?

माथु—(आँखें फाड़ कर) ऐसे देखेंगे।

(दर्दुरक माथुर की आँख में धूल झोंक देता है और संवाहक से भाग जाने का इशारा करता है, माथुर आँख बंद करके बैठ जाता है और संवाहक भाग जाता है)

दर्दु—(आप ही आप) माथुर का बड़ा अधिकार है, उससे मैंने वैर कर लिया तो अब यहाँ रहना ठीक नहीं; मेरे प्यारे मित्र शर्विलक ने कहा था कि एक सिद्ध का वचन है कि अहीर का लड़का आर्यक राजा होगा और यही समझ कर हम ऐसे बहुत लोग उसके साथ हो रहे हैं तो हम भी उसी के पास चलें।

(बाहर जाता है)

संवा—(डर से देख कर) अरे, यह तो किसी की खिड़की खुली है, तो इसमें घुस चलूँ (घुस कर बसन्तसेना को देख कर) तुम्हारी सरन हूँ।

बसन्त—सरनागत को अभय। अरी खिड़की बन्द कर ले।

(लौंडी खिड़की बन्द कर लेती है)

बसन्त—तुमको किसका डर है ?

संबा—धनी का।

बसन्त—अरी खिड़की खोल दे।

संबा—(आप ही आप) अरे, क्यों यह भी धनी से डरती है! लोगों ने ठीक कहा है,

अपने बल को जानिकै बोझ उठावै जोय।
अरबराय सो सकत नहिं, गिरै खड्डु नहिं सोय॥

माथु—(आँखें मीच कर जुआरी से) दे वे दे।

जुआरी—हम लोग जब दर्दुरक से झगड़ा करते थे तभी वह भाग गया था।

माथु—अजी हमने उसकी नाक में घूँसा मारा था। सो उसकी नाक फूट गई थी, चलो लोहू देखते हुए चलें।

जुआरी—वह बसन्तसेना के घर में घुस गया है।

माथुर—तो अब मोहरें मिल गईं।

जुआरी—चलो कोतवाली में चल कर कह दें।

माथु—यहीं खड़े रहो जब वह निकल कर और कहीं जाना चाहेगा तब घेर कर पकड़ लेंगे।

(बसन्तसेना मदनिका को इशारा करती है)

मद—आप कौन हैं, कहाँ से आते हैं, किसके लड़के हैं, कौन उद्यम करते हैं, किसका डर है।

संबा—बाई जी सुनिये, मेरा जन्म पटने में हुआ था, एक भलेमानुस का लड़का हूँ, अब भलेमानुसों के हाथ पाँव दबा कर पेट पालता हूँ।

बसन्त—आपने बहुत अच्छी कला सीखी है।

संबा—जी, पहले तो कला समझ के सीखी थी, अब उसी से रोटी मिलती है।

मद—अब बहुत उदास होकर बोलते हैं; तो फिर?

संबा—मैं जब अपने घर ही में था तो लोगों से सुन सुन कर नये नये देस देखने को यहां आया। यहां उज्जैनी में आकर

एक ऐसे भलेमानुस की सेवा की जो बड़े सुन्दर हैं, बहुत ही मीठा बोलते हैं, किसी को कुछ देते हैं तो जनाते नहीं और उनका कोई कुछ बिगाड़े तो चित्त में नहीं लाते। कहाँ तक कहूँ पराये को भी अपना समझते हैं और जो कोई उनकी सरन आजाय उसे तो बहुत ही मानते हैं।

मद—उज्जैनी में ऐसा कौन है जो बाईजी के भावते के गुन चुरा रहा है?

बसन्त—वाह री वाह! मैंने भी अपने मन में ऐसाही समझा था।

मद—जी, तो फिर?

संवा—बाई जी! वह दीन दुखियों को अपना धन दे देकर—

बसन्त—क्या कंगाल होगये?

संवा—आपने कैसे जान लिया?

बसन्त—इसमें जानने की कौन बात है। गुन और धन इकट्ठा नहीं रहते; जिस तालाब का पानी पीने लायक नहीं होता वह सदा ही भरा रहता है।

मद—उनका क्या नाम है?

संवा—बाई जी! इस संसार के चन्द्रमा उनका नाम कौन नहीं जानता? वह सेठों के चौक में रहते हैं। उनका नाम चारुदत्त जी—

बसन्त—(हर्ष से आसन से उतर कर) तब तो यह आपही का घर है। अरी आपको आसन दे और पंखा ले। आप थके जान पड़ते हैं।

(चेरी आसन लाकर रख देती है और पंखा उठा लेती है)

संवा—(आपही आप) क्या चारुदत्त जी के नाम लेने ही से इतना आदर बढ़ गया। वाह चारुदत्त जी वाह! संसार में आपही का जीना ठीक है और सब लोग तो लोहार की भाथी की नाई सांस लेते हैं। (बसन्तसेना के पांव पड़ कर) बाई जी, बहुत हो चुका आप आसन पर बिराजिये।

बसन्त—(आसन पर बैठ कर) आपका धनी कौन है ?

संब—सज्जन धन सतकार है धन बहुतन के होइ।
पूजन समुभत है सोई पूजा जानत जोइ॥

बसन्त—कहिये फिर क्या हुआ ?

संवा—उन्होंने मुझे चाकर रख लिया था। जब उनके धन न रहा तब मैं जुआ खेलने लगा। आज अपने अभाग से दस मोहर हार गया।

माथु—अरे ठग गये ! लुट गए !

संबा—यही सभिक जुआरी मुझको ढूँढ़ रहे हैं, इतनी बात है।

बसन्त—अरी ! पेड़ सूख जाने से पंछी इधर उधर भटकते फिरते हैं। दोनों जुआरियों के पास जा और कह दे कि यह सोने का कड़ा तुमको भेजा है।

(इतना कहकर अपने हाथ का कड़ा उतार कर मदनिका को दे देती है)

मद—(कड़ा लेकर) बहुत अच्छा। (घर से बाहर जाती है)

माथु—अरे ठग गये ! लुट गये !

मद—ये लोग ऊपर देखते हैं और लम्बी लम्बी साँसें ले रहे हैं और खिड़की की ओर ताक रहे हैं इससे मैं समझती हूँ कि सभिक और जुआरी यही हैं। (उनके पास जाकर) आर्य, प्रणाम।

माथु—अच्छी रहो।

मद—आप लोगों में से सभिक कौन है ?

माथु—अरी सुन्दरी कौन तू देखति तिरछे नैन।
कटे ओंठ दिखराय के बोलति मीठे बैन॥

मेरे पास धन नहीं है तुम और किसी को ढूँढ़ो।

मद—आप कैसे जुआरी हैं जो ऐसा कहते हैं आपका कोई कुछ चाहता है ?

माथु—हाँ, एक आदमी दस मोहर चाहता है।

मद—उसी के लिये हमारी बाई जी ने यह कड़ा भेजा है, नहीं नहीं, मैं भूल गई उन्हीं ने भेजा है।

माथु—(हर्ष से लेकर) अरी तुम जाकर उनसे कहो कि तुम्हारी मातबरी हो गई, आओ फिर जुआ खेलें।

मद—(बसन्तसेना के आगे जाकर) बाई जी! सभिक और जुआरी दोनों खुश होकर चले गये।

बसंत—तो आप भी जाइये, आपके भाईबन्द घबरा रहे होंगे।

संवा—बाई जी, आप कृपा करें तो मैं इस कला से आप ही की सेवा किया करूँ।

बसन्त—आपने जिनके लिये यह कला सीखी थी और जिनके साथ आप इतने दिन रहे उन्हीं के पास जाइये।

संवा—(आपही आप) इन्होंने कैसी चतुराई से बहुत ठीक जवाब दिया। अब इनके साथ मैं कौन सा उपकार करूँ जिससे उरिन हो जाऊँ। (प्रकाश) बाई जी! इस जुए की दुर्गति से मैं बहुत घबरा गया अब मैं बौद्धसन्यासी हो जाऊँगा। जब कभी औसर पड़े तो आप न भूलियेगा कि जुआरी संवाहक बौद्धसन्यासी हो गया।

बसन्त—ऐसा साहस न कीजियेगा।

संवा—मैंने अपना मन पक्का कर लिया है।

पति उतराई मोरि यह जूआ बीच बजार।
सिर मुँड़ाय अब छाँड़ि भय करिहौं तहँहिँ बिहार।

(परदे के पीछे हल्ला होता है)

संवा—(सुनकर) अरे यह क्या हुआ? (आकाश में) "क्या कहते हो, बसन्तसेना का खुंटमोटक दुष्ट हाथी खुला फिर रहा है" तो चलके बाई जी के मतवाले हाथी को देखू। अहँ, अब जो निश्चय किया है उसे चलकर करूँ। (बाहर जाता है)

(घबराया हुआ विकट रूप में उजला दुपट्टा ओढ़े कर्णपूरक आता है)

कर्ण—कहां है ; बाई जी कहां है ?

मद—तू सिड़ी हो गया है, क्यों इतना घबरा रहा है ? बाई जी सामने बैठी हैं देखता नहीं ।

कर्ण—(देखकर हाथ जोड़कर) प्रणाम ।

बसन्त—तू बड़ा खुश जान पड़ता है, क्या हुआ ?

कर्ण—(अचरज से) बाई जी आज आपने कुछ न देखा तो मेरी बहादुरी न देखी ।

बसन्त—क्या, क्या, कहो तो ।

कर्ण—सुनिये, वह जो आपका खुंटमोटक हाथी है वह खूँटा तोड महावत को मार बड़ा गड़बड़ मचाता हुआ सड़क पर पहुँचा ; तब तो सब लोग चिल्लाने लगे, देखते नहीं

बालक वेगि हटाउ बिगड़ा गज आवत इतै ।
रूख अटा चढ़ि जाव भागो अपने प्राण लै ॥

और टूटत है मनि करधनी छूटत नूपुर पायँ ।
सुन्दर रतनन तें जड़े कंगनहूँ गिरि जायँ ॥

तब तो दुष्ट हाथी अपने सूँड़ पाँव और दांतों से कमल भरे तलाब की नाईं सारी उज्जैनी को मथकर एक सन्यासी के पास पहुँचा । उसका दंड कमंडल तोड़ उसके मुँह पर पानी छिड़ककर उसे अपने दांतों के बीच में उठा लिया । तब तो सब चिल्लाने लगे 'मरा, सन्यासी मरा' !

बसन्त—(घबराकर) हाय, हाय बहुत बुरा हुआ ।

कर्ण—घबराइये नहीं, सुनती जाइये, मैंने जो देखा कि यह अपनी मोटी मोटी सांकरें तोड़ कर दांतों के बीच सन्यासी को उठाये हुए है तो मुझ कर्णपूरक, नहीं आपके जूठन के पले हुए दास ने, जुए के खेल को लात से मार लोहे का एक मोटा डंडा लेकर हाथी को ललकारा ।

बसन्त—तब फिर ?

कर्ण—बिंध्याचल चोटी सरिस गज को मारि हटाय ।
ताके दांतन बीच सन जोगी लियो छुड़ाय ॥

बसन्त—तूने बहुत अच्छा किया। फिर क्या हुआ ?

कर्ण—तब तो सारी उज्जैनी बोझी नाव की नाईं हिल उठी और सब कहने लगे, वाह रे कर्णपूरक वाह! उस समय एक भले मानुस वहाँ खड़े थे उन्होंने जहाँ जहाँ गहने पहने जाते हैं सब सूना देख कर साँस लेकर यह चादर मेरे ऊपर फेंक दी।

बसन्त—कर्णपूरक, देख तो यह चादर चमेली के फूलों से बसी तो नहीं है।

कर्ण—मैंने तो आज इतना मद पिया है कि उसकी गन्ध से चादर की सुगंध नहीं जान पड़ती।

बसन्त—देख तो कहीं नाम है।

कर्ण—यह नाम है, आप बाँच लें (चादर उतार के देता है)

बसन्त—चारुदत्त—(इतना पढ़ कर चादर ओढ़ लेती है)

मद—कर्णपूरक! बाई जी को चादर कैसी अच्छी लगती है।

कर्ण—हाँ अच्छी तो लगती है।

बसन्त—कर्णपूरक, यह ले अपना इनाम। (उसे एक अँगूठी देती है)।

कर्ण—(अँगूठी लेकर मत्थे से लगा कर) अब चादर आपको बहुत अच्छी लगती है।

बसन्त—चारुदत्त जी कहाँ है ?

कर्ण—इधर ही से घर को लौटे जा रहे हैं।

बसन्त—अरी तो चल अटारी पर चढ़ कर चारुदत्तजी को देखें। (सब बाहर जाते हैं)

[स्थान—चारुदत्त के घर के भीतर और बाहर)

तीसरा अङ्क

(बर्द्धमानक आता है)

वर्द्ध—मालिक भला गरीब हू मानै सेवक जोइ।
खल गरूर धनका करै अंत सधै नहिं सोइ॥
लगी धान की चाट जेहि बर्ध न हाँको जात।
फँसो और की नारि से सुनै कौन की बात?
परी जुआ की चाट जेहि तेहि को सकै हटाय?
जो सुभाव को दोष है तेहि को सकै मिटाय?

बड़ी देर हुई। चारुदत्त जी गाना सुनने गये अभी तक नहीं लौटे, आधी रात हो गई। अब मैं ड्योढ़ी में पड़कर सोऊँ (किवाड़ बन्द करके सो जाता है)

(चारुदत्त और मैत्रेय आते हैं)

चारु—वाह, रेभिल ने कैसा अच्छा गाया और कैसा सुन्दर बजाया। बीना भी समुद्र से नहीं निकली तो क्या, एक रत्न ही है!
उतकण्ठित के मन को सखि सी यह धीरज दै समुझावती है।
जब आवत देर लगावत मीत सँकेत मनैं बहलावती है।
जन व्याकुल हैं जो वियोग में भूप तिन्हैं यह धीर करावती है।
हिय नेह को अंकुर जामो है जो रस सींच कै ताहि बढ़ावती है॥

मैत्रे—चलिए घर में चलैं।

चारु—वाह रेभिल ने कैसा अच्छा गाया!

मैत्रे—हमसे जो पूँछिये तो हमें तो जब स्त्री संस्कृत पढ़ती है या मर्द काकली गाता है तो बड़ी हँसी आती है। स्त्री जो संस्कृत पढ़ने लगती है तो नई व्याई गाय की नाई सूं सूं करती है और जब मर्द काकली गाने लगता है तो सूखे फूलों की माला पहिने बूढे पुरोहित ऐसा मंत्र जपता जान पड़ता है।

चारु—भाई रेभिल ने बहुत अच्छा गाया, क्यों भाई अच्छा लगा?

एक एक स्वर सुनि परत ललित भाव के संग।
मधुर मनोहर गान सोइ सुन्दर सम सब अंग॥

छके कान मनहूँ छक्यो, कहँ लगि करौं बखान।
रही सो रेभिल्ल देह में मानहु प्रिया समान॥
मीठो सुरीली गान मिलि सोइ बोल के संग बीन के।
पुनि स्वर चढ़ाव उतार गुञ्जत झुंड मनहु अलीन के॥
स्वर मूर्छना महँ चढ़त होत बिराम धुनि पुनि मृदु भई।
एक राग दोहरा बजत लीला सहित यति रोकी गई॥
भयो बंद कब गान, आये एती दूर चलि।
तान भरे हैं कान अबहूँ सोई सुनि परै॥

मैत्रे—अजी, गली में तो इस बेर कुत्ते भी सुख से सो रहे हैं, चलो घर चलें (आगे देखकर) देखिये, देखिये, अँधेरे को भी औकास देते हुए आकाश की अटारी से चन्द्रमा उतर रहे हैं,

चारु—तुमने बहुत ठीक कहा।

बूड़त तम कहँ राह दै कोटि उठाये चन्द।
मनहु निकासे दाँत कछु जल महँ घुसी गयंद॥

मैत्रे—अजी यही तो है घर। बर्द्धमानक! बर्द्धमानक! किवाड़ खोल।

बर्द्ध—(भीतर से) मैत्रेय जी की बोली सुन पड़ती है तो चारुदत्त जी आ गये। किवाड़ खोल दूँ (किवाड़ खोल कर) पालागन! मैत्रेय जी तुम्हारे भी पालागन! पलँग बिछे हैं। आप लोग बैठें।

(दोनों घर में आकर बैठते हैं)

मैत्रे—बर्द्धमानक, रदनिका को पुकार दे, पाँव धो जाय।

चारु—क्यों सोते को जगाते हो?

बर्द्ध—मैत्रेय जी मैं पानी डालता हूँ आप पाँव धो दीजिए।

मैत्रे—(क्रोध से) देखते हो यह लौंडी का बच्चा पानी डालैगा और हम बाम्हन हैं हमसे पाँव धोने को कहता है।

चारु—तुम्हीं पानी ले लो, बर्द्धमानक पाँव धो देगा।

बर्द्ध—मैत्रेय जी, पानी डालिए।

(मैत्रेय पानी डालता है और वर्द्धमानक चारुदत्त के पांव धोकर
(अलग खड़ा हो जाता है)

चारु—अजी ब्राह्मण देवता के पांव भी धो दो।

मैत्रे—अजी हमारा पाँव धोके क्या होगा हम तो मारे गधे की नाई फिर लोटेंहीगे।

वर्द्ध—मैत्रेय जी आप तो बाम्हन हैं।

मैत्रेय—अरे जैसे साँपों में डोंडहा होता है वैसेही हम बाम्हनों में बाम्हन हैं।

वर्द्ध—मैत्रेय जी, लाइये आपके भी पाँव धो दूँ। (मैत्रेय के पांव धोता है) मैत्रेय जी मैंने गहनों का डिब्बा दिन भर रखाया ; अब रात को आप इसकी रखवारी कीजिये (मैत्रेय को डिब्बा देकर बाहर जाता है)।

मैत्रे—(डिब्बा लेकर) अरे, अभी यहीं है ! क्या उज्जैनी में चोर भी नहीं है जो इस नींद के चोर को चुरा ले जायँ, भाई मैं तो भीतर जाता हूँ।

चारु—यह भूषन हैं पातुर केरे।
लै न जाहु यह घर महँ मेरे॥
धरो मित्र आपहि तुम यही।
जोलों मैं सौंपों नहिं तेही॥

(सोने का भाव बताता है)

मैत्रे—क्या आपको नींद आ रही है ?
सिर से उतरि आँखि महँ आवत।
आलस सारे तन पर छावत॥
अलख रूप जनु चपल बुढ़ाई।
आवत नर पर तेज नसाई॥

अब सोयें।

(किवाड़ बन्द करके सो जाता है)

(शर्विलक आता है)

शर्वि—बल विद्या दोउ संग लगाई।
तन प्रमान निज सेंध बनाई॥

सरकत चलौं बसत निज अङ्गा।
कँचुल छोड़त मनहुँ भुजङ्गा॥

(आकाश की ओर देख कर) अरे, क्या चन्द्रमा डूब रहे हैं?

करैं पाहरू मोहिं लखि शंका।
बीर महलफोड़न महँ बंका॥
घन अंधेर सन जगहि छिपावति।
रैन माय सी मोहिँ अँग लावति॥

फुलवारी में सेंध लगा के यहां पहुँचा, अब हम कोठे में सेंध लगाऊँ,

चोरी के काम को नीच कहैं सब प्रात लगे नर सोवत पाई।
देइकै धोखा हरै परको धन चोरी सो कायर रीति कहाई।
नाम बुरो पै अधीन न काहू के चोरी भली न भली सेवकाई॥
द्रोण के पुत्र युधिष्ठिर सेन के मारन के हित सेंध लगाई

भीगी है कहुँ भीति जहँ खोदत शब्द न होय।
कौन ठाँव जहँ आड़ में सेंध न देखै कोय॥
गलो भीति लोना लगी है पतरी केहि ठाम।
सौ हैं जहां न तिय परै सिद्ध होय सब काम॥

तो कहां से सेंध फोड़ूँ (भीत को छूकर) नित सूर्यनारायण के अर्घ का पानी पड़ते पड़ते यहाँ की मिट्टी खुद सो गई है और चूहों ने भी यहाँ कुछ खोद डाला है; अब हमारा काम सिद्ध होगया। स्कंददेवता के पुत्रों की सिद्धि का पहिला लच्छन यही है। तो अब कैसी सेंध फोड़ूँ; कनकशक्ति जी ने चार रीतियाँ सेंध खोदने की कही हैं—पक्की ईंटों को खींच लेना, कच्ची को काट देना, गोंदे को भिगो देना और काठ को काट डालना। तो यहां पक्की भीत है, एक ईंट हटाऊँ।

खिले कमलसम कूप सरसि नवचन्द्र प्रकारा।
स्वस्तिक पूरनकुम्भ सूर्य सम सन्धिप्रकारा॥
खोदि सेंधि मैं प्रकट करौं अपनो चतुराई।
भोर देखि जेहि चकित होयँ सब लोग लुगाई॥

जय भगवान कार्तिकेय की ! जय कनकशक्तिजी की ! ब्राह्मण्य देव की जय ! जय भास्करनंदन की और जय गुरु योगाचार्य जी की जिन्होंने प्रसन्न होके मुझे योगरचना सिखाई थी।

लखै न चौकीदार यहि के प्रबल प्रभाव से।
तन लागे हथियार कटै न पीरा होय कछु ॥

(सेंध फोड़ने को बैठता है) अरे, नापने का डोरा भूल आया (सोच कर) क्या हुआ, जनेऊ तो है, इसी से नाप लेंगे ; जनेऊ भी ब्राह्मणों के बड़े काम का होता है और विशेष करके हम ऐसों का,

नापि सकै यह सेंधप्रमाना।
यही उतारत भूषन नाना ॥
साँकर खोलत, डसत भुजंगा।
रोकत विष यह बाँधत अंगा ॥

(नाप के) अब लगा लगाऊँ (सेंध फोड़ता है) अब सेंध में एक ईंट और रह गई। हाय, हाय, सांप ने काट लिया (जनेऊ से उँगली बांध कर विष का चढ़ना जनाता है और औषधि बांध लेता है) अब तो नहीं पिराता (फिर खोद कर देख कर) अरे दिया जल रहा है।

घन अँधेर महँ सेंध से निसरति दीपकजोति।
खिँची कसौटी पै मनौ सोनरेख सी होति ॥

(फिर देख कर) सेंध तो पूरी होगई, तो भीतर चलूँ या पहले देखलूँ कोई है तो नहीं (देख कर) जय कार्तिकेय की।

(घुसता है)

[स्थान दूसरा—चारुदत्त के घर के भीतर]

(शर्बिलक सेंध से निकल कर आता है)

शर्बि—अरे, दो जने सो रहे हैं, तो किवाड़ खोलदूँ जिसमें भागने को राह रहै। अरे घर ऐसा जंजल हो रहा है कि किवाड़ चीं चीं करता है। तो पानी ढूढ़ूँ। पानी कहां मिलेगा ?

(इधर उधर देख कर पानी का लोटा उठा लेता है और पानी छिड़क कर डरता हुआ) अरे, पानी गिरने से लोग चौंक न पड़ें तो किवाड़ उतार लूँ (पीठ के सहारे से पल्ला उतार लेता है) अब इन्हे देखूँ सचमुच सो रहे हैं या झूँठ मूठ (देख कर) बेधड़क सो रहे हैं, देखो,

चलत बराबर साँस नहीं शंका कछु लागै ।
मुँदी आँखि नहिं सिथिलभाव पुतरी निज त्यागै ॥
ढीली परी शरीर कछुक शय्या के बाहर ।
दीप सहै नहिं सौंह करै सोवत छल जो नर ॥

(चारों ओर देख कर) यह ढोल रक्खी है, यह मृदङ्ग है, यह बीना है, यह बाँसुरी है, यह पोथियाँ है। क्या नाटकवाले का घर है ? हम तो बड़ा घर देख के घुसे थे, यह तो महादरिद्री है, ऐसा तो नहीं कि राजा और चोर के मारे धन धरती में गाड़े हो । मेरे भी तो धरती में गड़ा है। (बीज फेंकता है) बीज फेंकने से कुछ नहीं जान पड़ता, यह महादरिद्री है, चलें निकल चलें ।

मैत्रे—(सपने में बोलता है) भाई, सेंध लगी है, चोर भी देख पड़ता है, यह डिब्बा आप ले लीजिए ।

शर्बि—क्या मुझे आया जान यह दरिद्री मेरी हँसी कर रहा है, तौ इसे मार डालूँ । यह सपना देख रहा है (देख कर) अरे फटी धोती में सचमुच गहने का डिब्बा झलक रहा है, तो अब इसे लेलूँ । इसकी भी मेरी सी दशा जान पड़ती है, जाने दो क्या किसी भले मानुस को सतावैं ।

मैत्रे—भाई, तुम्हें गाय और बाम्हन की सौंह है जो तुम डिब्बा न लो ।

शर्बि—भाई गौ बाम्हन की सौंह तो माननी चाहिये तो इसे लेही लो । दिया बर रहा है मेरे पास दिया बुझाने का कीड़ा भी तो है तो उसी को छोड़ दूँ इसी का अवसर है (कीड़ा छोड़ देता

है) कीड़े ने, देखो, दिये के ऊपर उड़ उड़ कर अपने पंखों की बयार से अँधेरा कर दिया ; मैंने भी तो अपने बाम्हन के कुल के अँधेरे में डाल दिया, मेरे बाप चार वेद के पढ़ने वाले दान का पैसा लेने वाले थे, उनका लड़का मैं रंडी के लिये चोरी कर रहा हूँ। बाम्हन देवता की बात तो माननी चाहिये (डिब्बा ले लेता है)

मैत्रे—आपका हाथ ठंडा है।

शर्वि—अरे, पानी छूने से मेरा हाथ ठंडा हो गया है तो इसे कांख में दबा कर गरम करलूँ (बाँयें हाथ को गरम करके डिब्बा ले लेता है।

मैत्रे—क्यों भाई ले लिया ?

शर्वि—बाम्हन की बात कौन न मानेगा, ले लिया।

मैत्रे—तो अब दुकान वेंच कर बनिये की नाईं सोऊँगा।

शर्वि—अजी ! तुम सौ बरस सोओ। हाय मैंने मदनिका रंडी के लिये बाम्हन के कुल पर कलंक लगाया, कुल के क्या लगा अपने लगा।

दारिद तोहि धिक्कार तू सब कुछ सकै कराय।
करत जात सो काज नर मन सन निन्दत जाय ॥

तो मदनिका को छुड़ाने के लिये बसन्तसेना के घर चलूँ (देख कर) अरे, किसी के पांव की आहट जान पड़ती है, पहरेवाला तो नहीं आ रहा है ! चुपचाप खंभे की नाईं खड़ा हो जाऊँ। और पहरेवाले भी शर्विलक का क्या कर सकते हैं।

झपटा के मारन में चील्ह के समान हम
जल्दी जल्दी भागने में मृग से न कम हैं।
सोये जागे चीन्ह लेत कूकुर की नाईं नित
बिल्ली के से पायँ मेरे चलत नरम हैं।
मायारूप धारन में सांप से हैं सर्कन में
देश भाषा जानन में बानी के सम हैं।

संकट में डुडुम, तुरंग हैं सुथल पर
जल बीच नाव, रात दीपकहू हम हैं।
गिर सम थिर, भागन भुजग, झपटन में हम बाज।
पकरन वृक, इतउत लखन शश, बल महँ मृगराज॥

(रदनिका आती है)

रद—हाय, हाय, ड्योढ़ी पर बर्द्धमानक सोता था सो भी नहीं देख पड़ता, कहां गया। तो अब मैत्रेय को पुकारूँ। (आगे चलती है)

शर्वि—(रदनिका को मारना चाहता है) अरे स्त्री है, तो भाग चलूँ।

(बाहर जाता है)

रद—(डरती हुई) हाय, हाय, घर में सेंध फूट गई चोर भाग गया, मैत्रेय को जगाऊँ (मैत्रेय के पास जाकर) मैत्रेय जी उठो उठो! घर में सेंध फोड़ के चोर भाग गया।

मैत्रे—अरी लौंडी क्या बकती है! चोर फोड़ के सेंध भाग गई।

रद—क्या बकते हो, देखते नहीं।

मैत्रे—अरी लौंडी क्या बकती है? ये केवाड़ किसने उतारे? अरे भाई चारुदत्त जी उठिए उठिए, घर में सेंध फोड़ कर चोर भाग गया।

चारु—(जाग कर) भाई क्यों हँसी करते हो?

मैत्रे—अरे भाई हँसी नहीं है देख लीजिए।

चारु—कहाँ?

मैत्रे—यह क्या है।

चारु—(देख कर) क्या सुन्दर सेंध है।

ऊपर से इक एक ईंट लखि परै हटाई।
ऊपर संकरी चौड़ी है कछु बीच बनाई॥
अति अजोग जन जनु कुमार्ग सन आवत जानी।
डरके बस यहि महल केरि छाती बिलगानी॥

मैत्रे—हमारे घर सेंध देना या तो किसी नौसिखये का

काम है या कोई नगर में आया है, नहीं तो सारी उज्जैनी में कौन नहीं जानता कि हमारे कुछ नहीं है।

चारु—परदेशी अभ्यास करत कोऊ सेंध लगाई।
जान्यो नहिं बिनधन सोने सब सोच बिहाई॥
पहिले कीन्हीं आस देखि यह महल महाना।
सेंध फोरि बहुबेरि अवसि बपुरा पछिताना॥

यह बिचारा अपने साथियों में जाकर कहैगा कि हम चौधरी के लड़के के घर गये वहां कुछ न मिला।

मैत्रे—आप भी चोर के लिये सोच करते हैं। उसने देखा होगा कि यह बड़ा भारी घर है इसमें हीरा मोती का डिब्बा या सोने के गहनों का डिब्बा पाऊँगा। (सोच कर दुख से आपही आप) गहनों का डिब्बा कहां है? (फिर सोच कर प्रकाश) भाई, तुम सदा कहते थे कि मैत्रेय मूर्ख है, हम ने कैसा अच्छा किया जो गहनों का डिब्बा तुम को दे दिया नहीं तो वह पाजी चुरा ले जाता।

चारु—अजी क्यों हँसी करते हो?

मैत्रे—क्या हम ऐसे निरे मूर्ख हैं जो हम हँसी का औसर नहीं जानते।

चारु—तुम ने कब दिया?

मैत्रे—जब हमने तुमसे कहा था कि तुम्हारा हाथ ठंढा है।

चारु—कदाचित् दिया हो (चारों ओर ढूँढ कर) भाई एक बहुत अच्छी बात हुई।

मैत्रे—क्या बच गया?

चारु—नहीं चोर ले गया।

मैत्रे—इसमें कौन अच्छी बात हुई?

चारु—चोर हमारे घर से निरास नहीं गया।

मैत्रे—अजी वह तो पराई थाती थी।

चारु—अरे! (बेसुध होकर गिर पड़ता है)

मैत्रे—उठिए, उठिए, जो थाती को चोर ले गया तो आप क्यों घबरा गये ?

चारु—(सांस लेकर) भाई ।

दोष लगै हैं मोहि सब, को मानै सच बात ।
बिना तेज दारिद्र पै सबै, दोष फबि जात ॥
हाय, हाय, मेरे धन के हरन को चाह दैव जो कीन्ह ।
तो अब काह बिचारि कै पापी अपजस दीन्ह ॥

मैत्रे—हम बात बना लेंगे किसने लिया, किसने दिया, कौन साखी है ।

चारु—अरे तुम यह जानते हो, क्या हम कभी झूँठ बोलैंगे ?

करि हौं थाती देन को भीखहु मांगि उपाय ।
झूँठ कबौं नहिं बोलिहौं जेहि से धर्म नसाय ॥

रद—अब इसे जाके बाई जी से कहूँ । (बाहर जाती है)

[स्थान दूसरा—चारुदत्त के घर के भीतर दूसरी जगह]

(चारुदत्त की स्त्री धूता बैठी है, रदनिका आती है)

धूता—(घबरा कर) अरी आर्यपुत्र को या मैत्रेय जी को चोट तो नहीं आई ।

रद—जी चोट तो किसी को नहीं आई, पर जो गहने पातुर छोड़ गई थी उन्हें चोर ले गया (धूता बेसुध हो जाती है)

रद—उठिए ।

धूता—(सांस लेकर) अरी क्या कहती है कि उन्हें चोट नहीं आई । अरी हाथ पैर कट गये होते तो कुछ बुरा न था, इस से तो उन पर कलंक लग जायगा, सारी उज्जैनी के लोग यही कहैंगे कि चारुदत्त ने धन के लालच से ऐसा काम किया । (ऊपर देख कर सांस लेकर) भगवान ! तुम हम लोगों को पुरइन के पत्ते पर पानी की बूँद की भांति क्यों नचा रहे

हो ? मेरे पास मैके की एक माला बची है उसे भी आर्यपुत्र अपनी भलमंसी से न लेंगे । अरी मैत्रेय जी को बुला तो ला ।

रद—बहुत अच्छा । (मैत्रेय के पास जाकर) मैत्रेय जी बाई जी बुलाती हैं ।

मैत्रे—कहां हैं ?

रद—वह क्या हैं ।

मैत्रे—(आगे बढ़ कर) जय हो आप की !

धूता—आइये प्रणाम, हमारी ओर मुँह कीजिये ।

मैत्रे—लीजिये मैंने आप की ओर मुँह कर लिया ।

धूता—इसे लीजिए (माला देती है) ।

मैत्रे—यह क्या है ?

धूता—मैं रतनछठ उपासी थी उस में बाम्हन को जितना हो सकै दान देना चाहिये, उस दिन मैंने कुछ नहीं दिया था इसी से आज यह हार देती हूँ ।

मैत्रे—(हार लेकर) आपका भला हो, मैं जाकर चारुदत्त जी को दिखाऊँ ।

धूता—मैत्रेय जी मुझे क्यों लजाते हो ? (बाहर जाती है)

मैत्रे—वाह वाह कैसी उदार है !

चारु—मैत्रेय—क्या कर रहे हैं, बड़ी देर होगई है ; ऐसा न हो कि घबराहट में कुछ अनर्थ कर बैठें । मैत्रेय ! मैत्रेय !

मैत्रे—(आगे बढ़कर) कहिये, लीजिये (हार दिखलाता है)

चारु—यह क्या है ?

मैत्रे—जैसे आप हैं वैसी ही आपकी स्त्री होने का यही फल है ।

चारु—हा ! क्या मेरी ब्राह्मणी भी मुझ पर दया करती है ? अब मेरे कँगाल होने में सन्देह नहीं ।

अपनो धन सब खोय, तियसम्पति से पति रही ।
धनहिं पुरुष तिय होय, होत धनहि से तिय पुरुष ॥

हम दरिद्र नहीं हैं ।

तुम हित सुख दुख माँहिं, नारि दशाअनुकूल है।
साँचहुँ झूठो नाहिं, दारिद में नहिं सुलभ जो॥

मैत्रेय जी! सवेरा होने चाहता है, हार लेकर वसन्तसेना के पास जाओ और उससे हमारी ओर से वह कहना कि हम अपना समझ के गहनों का डिब्बा जुए में हार गए, उसके बदले यह हार ले लीजिये।

मैत्रे—आप। ऐसे महँगे रत्नों का यह हार ऐसे डिब्बे के कारन क्यों दे रहे हैं जिसे किसी ने खाया न पहिना और चोर लेगया।

चारु—भाई ऐसी बात न कहो।

दीन्हे भूषन सौंपि सो करि हम पर विश्वास।
तेहीं सो हम हार दै गुरुता करत प्रकास॥

भाई तुम्हें हमारे सिर की सौं है बिना दिये न लौटना। वर्द्धमानक,

भरौ बेगि यहि सेंध को पक्की ईंट लगाय।
सेंध लगे को दोष यह घर जेहि सन मिट जाय॥

भाई मैत्रेय! तुम भी वहाँ लुब्धता छोड़ कर उदार बन जाना।

मैत्रे—अरे कंगाल कैसे उदार की बातैं करैगा?

चारु—अजी हम कंगाल नहीं हैं।

'तुम हित सुख'—इत्यादि फिर से पढ़ता है।

तुम जाओ, हम भी हाथ मुँह धोकर संध्या करैंगे।

(सब बाहर जाते हैं)

चौथा अंक

(पहिला स्थान—बसंतसेना का घर)

(चेरी आती है)

चेरी—अम्मा ने मुझे बाई जी के पास भेजा है। बाई जी वह बैठी चित्र देखती जाती हैं और मदनिका से कुछ कह रही हैं। तो मैं भी उनके पास चलूँ। (बाहर जाती है)

[दूसरा स्थान—बसन्तसेना के घर का एक कमरा]

(हाथ में चित्र लिये बसन्तसेना बैठी है, मदनिका खड़ी है)

बसन्त—अरी, मदनिका ! चारुदत्त जी का ठीक चित्र उतरा है?

मद—जी हाँ ठीक है।

बसंत—तूने कैसे जाना ?

मद—मैंने देखा कि आप इसे बड़े ध्यान से देख रही हैं।

बसन्त—अरी मदनिका, बेसवापने की चतुराई से ऐसा कहती है।

मद—बाई जी, क्या बेसवा होने से कोई सच नहीं बोलता ?

बसंत—अरी, बेसवा झूठ न बोले तो क्या करै, उसका रंग रंग के लोगों से काम रहता है।

मद—आप का मन और आंख दोनों लग गये उसका आप कारन क्यों पूँछती हैं ?

बसन्त—अरी, मैं अपनी सहेलियों की हँसी से बचना चाहती हूँ।

मद—बाई जी ! ऐसा न कहिए। सखी सहेलियां सब आप ही के मन की करैंगी। (चेरी आती है)

चेरी—बाई जी ! अम्मा कहती हैं कि चादर ओढ़ लीजिये खिड़की के पास रथ खड़ा है।

बसन्त—क्या चारुदत्त जी बुला रहे हैं ?

चेरी—जी नहीं एक और कोई है उन्होंने दस हजार के गहने भी भेजे हैं।

बसन्त—यह कौन है ?

चेरी—जी, राजा के साले संस्थानक।

बसन्त—(क्रोध से) चल दूर हो, हमारे सामने ऐसा फिर न कहना।

चेरी—बाईजी,मुझे क्षमा कीजिए मैं अम्मा के कहने से आई थी।

बसन्त—हमैं ऐसा सनेसा ही बुरा लगता है।

बसन्त—तो अम्मा से कह आ जो चाहती हैं कि मैं जीती रहूँ तो फिर मुझ से कभी ऐसी बात न कहें।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

(शर्विलक आता है)

विमल रैन महँ दोष लगाई।
नींद जीति पहरू बहिराई॥
उअत दिनेश होत छबिमंदा।
बीते रैन भयो जनु चंदा॥

देखे मोहि घबरात चलत जो मग महँ धावत।
कै मोंहि ठाढ़ो देखि पास मेरे चलि आवत॥
चढ़ो पाप सिर प्रान जात डर लगत सुखाई।
करत आपही पाप आपही ताहि डेराई॥

मैंने मदनिका के लिये ऐसा साहस किया।

चाकर से बतरात एक की आँखि बचाई।
नारी ही इक गेह देखि तेहि चलो बिहाई॥
चौखट से है खड़ो देखि पहरे कर फेरा।
चाल अनेकन चलि कीन्हो कोउ भाँति सवेरा॥

बसन्त—अरी यह पट हमारे पलंग पर रख दे और पंखा लेकर जल्दी आ।

मद—बहुत अच्छा (पट लेकर बाहर जाती है)

शर्वि—बसन्तसेना का घर यही है, मदनिका को ढूँढ़ें।

(पंखा हाथ में लिए मदनिका आती है)

शर्वि—(देखकर) यही तो है मदनिका।

जेते गुन यहि सुन्दरि माहीं।
ते ते गुन कामहुँ महँ नाहीं॥
हैं यहि के सब अंग अनूपा।
रति है खड़ी धरे जनु रूपा॥
यह मोहि जरत काम की ज्वाला।
करति ठंढ चंदन सम बाला॥

मद—(देखकर) अरे शर्विलक, अच्छे आये, कहो क्या है ?

शर्वि—कहैंगे । (दोनों एक दूसरे को बड़े अनुराग से देखते हैं)

बसन्त—क्या कर रही है मदनिका ? कहाँ चली गई ?

(खिड़की से झांक कर) अरे यह तो किसी मर्द से बातैं कर रही है और उसे बड़े ध्यान से टकटकी बाँधे देख रही है। हो न हो यह इसे छुड़ाने आया है तो इन दोनों को छेड़ना न चाहिए ; न पुकारूँगी ।

मद—शर्विलक, कहो ।

शर्वि—(डरता हुआ चारों ओर देखता है)

मद—शर्विलक, क्यों डरते से हो ।

शर्वि—कुछ चुपके से कहना है, कोई है तो नहीं ।

मद—कोई नहीं है ।

बसन्त—(आप ही आप) क्या कोई छिपी बात है ? तो न सुनूँ ।

शर्वि—मदनिका ! भला बसन्तसेना तुम्हैं कुछ लेके छोड़ देंगी ?

बसन्त—(आप ही आप) क्या कुछ मेरी ही बात कर रहे हैं ? तो इस खिड़की की ओट हो कर सुनूँ ।

मद—मैंने बाई जी से कहा था तो बाई जी बोलीं हमारी चले तो हम अपनी चेरियां छोड़ दें । तुम तो बताओ तुमने इतना धन कहाँ पाया जो मुझे बाई जी से छुड़ाओगे ?

शर्वि—पाय सको तव नेह में धन न और कोउ भांति ।
कीन्हो तेरे काज मैं साहस पिछली राति ॥

बसन्त—(आपही आप) रूप तो इस का बहुत अच्छा है इसने साहस कैसे किया ?

मद—शर्विलक, तुमने लुगाई के कारन अपने दोनों संसौ में डाले ।

शर्वि—क्या, क्या ?

मद—अपना शरीर और अपनी भलमंसी।

शर्वि—अरी तू नहीं जानती है साहसही में लक्ष्मी रहती हैं।

मद—अच्छा तुम भले मानुस ही बने रहे? कहीं मेरे कारन साहस करते करते अनरथ तो नहीं कर डाला?

शर्वि—भूसत हौं गहने पहिने सुकुमारि नहीं कोउ फूली लतासी।
लेत नहीं धन बाम्हन को जो धरो तिन यज्ञ के काज निकासी।
छीनें नहीं धन लालचसे कोउ बाल जो गोद खिलावति दासी।
चोरी के कामहु में मैं परौं नित योग अयोग विचार प्रकासी॥

तो अब तुम जाके बसन्तसेना जी से कहो।

मो पर कृपा दिखाय अपनेहि तन की नाप के।
पहिरिय इन्हैं छिपाय ए भूषन कीजिये ग्रहन॥

मद—शर्विलक! हम बेसवा हैं। हमारे गहने छिप नहीं सकते। इस से बन्द डिब्बा देना अच्छा नहीं। खोलो तो देखैं इस में क्या क्या है?

शर्वि—लो। (डरता हुआ डिब्बा देता है)

मद—अरे, यह गहने तो मेरे देखे हैं; कहो तो तुमने कहाँ पाये?

शर्वि—मदनिका, तुम यह जान कर क्या करोगी?

मद—(रोष से) तुम हमैं नहीं पतिआते तो हम को छुड़ा के क्या करोगे?

शर्वि—अरे, कल मैंने चौक में सुना था कि चौधरी के हैं।

(बसन्तसेना और मदनिका बेसुध होकर गिर पड़ती है)

शर्वि—उठो मदनिका, क्या है?

छूटत तेरो दासपन, तू दुख से घबराति।
काँपति चितवति हैं खड़ी, हम पर तरस न खाति॥

मद—(साँस लेकर) अरे, मेरे कारन तुम ने अकाज तो किया, उस घर में किसी को मारा तो नहीं?

शर्वि—मदनिका! डरे या सोये को शर्विलक न मारेगा, वहाँ न मैंने किसी को मारा है न घायल किया है।

मद—सच ?

शर्वि—हां सच।

बसन्त—बस, बड़ी बात हुई।

मद—बहुत अच्छा हुआ।

शर्वि—(ईर्षा से) मदनिका ! तुम्हारी बात हमारी समझ में नहीं आती।

शुद्ध शील आचार रहे पुरखा सब मेरे।
करत नीच यह काम नेह बस केवल तेरे॥
नसी काम बस बुद्धि मान अपनो मैं राखत।
तू औरन सों मिलति मित्र मुख से मोहि भाखत॥
खींचि लेत अब धन सकल छुवें न पुरुष बहोरि।
तजैं महाउर के सरिस पातुर रंग निचोरि॥

(सोच कर) सरबस धन फल से लसे तरवरपुरुष कुलीन।
पातुर चिड़ियन के भखे होत वंशफलहीन॥
मेल प्रीति इन्धन परम कठिन काम की ज्वाल।
धन जोबन जहँ नरन के भसम होत तत्काल॥

बसन्त—(आप ही आप मुसुकरा कर) अरे, यह वृथा घबरा रहा है।

शर्वि—रहै सिंधु की लहर सम चंचल नारि सुभाव।
साँझ समय के मेघ सम इक छिन राग दिखाव॥
बहुत न फँसिये तियन संग निदरैं फँसे सयानि।
जो मानै तेहि सँग रहैं तजिये निदरत जानि॥

किसी ने ठीक कहा है—

रोवैं हँसैं सदा धन के हित।
नरहिं बिसासि देइँ धोखा नित॥
चातुर तजैं पातुरी कैसे ?
जन मसान के फूलन जैसे॥

और, महामूढ़ ते लोग जो श्रिय तिय को पतिआयँ।
तिय अरु श्रिय नागिनि सरिस मटकत सटकत जायँ॥

स्त्री तो सदा की चंचल होती हैं और

मन में चाहैं और को कर और दिसि नैन।
डारैं मद कोउ और पै करैं और सँग सैन॥

किसी ने बहुत ठीक कहा है—

गदहा करै न हय कर काम।
परबत पर सरोज कब जाम॥
जब बोये उपजै नहिं धान।
रहै न शुचि पातुरसंतान॥

अरे पापी चारुदत्त रह, अब तू नहीं बच सकता (इतना कह कर दो चार पग चलता है)।

मद—(आँचल पकड़ कर) क्या बेठिकाने की बातें कर रहे हो ? तुम नाहक बिगड़ते हो।

शर्वि—क्यों ?

मद—गहने बाई जी के हैं।

शर्वि—तो फिर ?

मद—चारुदत्त के घर छोड़ आई थीं।

शर्वि—क्यों ?

मद—(कान में कहती है)।

शर्वि—(घबड़ा कर) ?

कठिन घाम से जरत तन जासु सरन मैं लीन्ह।
बिना पात को रूख सोइ मैं अनजाने कीन्ह॥

वसन्त—(आप ही आप) यह भी पछिता रहा है, तो हो न हो इसने बेजाने यह काम किया।

शर्वि—मदनिका, अब क्या करें ?

मद—तुम्ही जानो।

शर्वि—मेरी बुद्धि काम नहीं करती।

होइ स्वभावहिते सदा नारी चतुर प्रवीन।
पुरुषन की है चतुरई विद्या के आधीन॥

मद—शर्विलक ! जो तुम मेरा कहना मानो तो गहने ले जाकर उन्हीं को देआओ।

शर्वि—और जो कहीं वह कोतवाली में कह दें ?

मद—कहीं चन्द्रमा से भी गरमी आती है।

वसन्त—(आप ही आप) वाह मदनिका, वाह !

शर्वि—नहिं विषाद यहि काज दंड को नहिं कछु त्रासा।
सो सज्जन के सुगुन करौ जेहि काज प्रकासा॥
सुमिरि नीच यह काज होत मोरे मन लाजा।
जो न कर सो थोर शठन मो सम कर राजा॥

तो भी यह बात नीति के विरुद्ध है और कोई चाल सोचो।

मद—अच्छा, एक और उपाय है।

वसन्त—(आप ही आप) और क्या उपाय होगा ?

मद—तुम चारुदत्त जी के भेजे हुए बनो और गहने बाईजी को दे दो।

शर्वि—ऐसा करने से क्या होगा ?

मद—तुम चोर न रह जाओगे, चारुदत्तजी उरिन हो जायँगे ; और बाई जी अपने गहने पाजायँगीं।

शर्वि—बड़ी ढिठाई का काम है।

मद—ढिठाई है तो कर डालो।

वसन्त—(आप ही आप) वाह मदनिका, वाह, तू ने गिरस्त की सी बात कही है।

शर्वि—मैं सीखी यह चतुरई सुनि तुम्हारि सलाह।
रात अँधेरी चन्द्र बिन कौन दिखावै राह॥

मद—अच्छा तो तुम अब कामदेव के मन्दिर में ठहरो ; हम बाई जी को तुम्हारा आना जना दें।

शर्वि—बहुत अच्छा।

मद—(वसन्तसेना के पास जाकर) बाई जी चारुदत्त जी के पास से एक बाम्हन आया है।

वसन्त—अरी तू ने कैसे जाना कि उन्हीं का भेजा है ?

मद—बाईजी, क्या मैं अपने घर के लोग भी नहीं पहचानती।

बसन्त—(आपही आप सिर हिलाकर हँस कर) ठीक है, (प्रकाश) अच्छा बुला ला।

मद—बहुत अच्छा (शर्विलक के पास जाकर) आओ जी शर्विलक।

शर्वि—(बसन्तसेना के पास जाकर) जय हो आप की!

बसन्त—आइए, पालागन, बैठिये।

शर्वि—चौधरी ने आपसे यह बिनती की है कि हमारा घर आज कल जंजल हो रहा है, डिब्बे की रखवाली बड़ी कठिन है इसे आप लीजिये। (डिब्बा मदनिका को देकर जाना चाहता है)

बसन्त—तो मेरा भी जवाब लेते जाइ।

शर्वि—(आप ही आप) अब वहाँ कौन जायगा? (प्रकाश) आप क्या कहैंगी?

बसंत—आप मदनिका को लेते जाइये।

शर्वि—बाई जी, आप की बात मैं समझा नहीं।

बसन्त—मैं समझा दूँ।

शर्वि—कैसे?

बसन्त—मुझ से चारुदत्तजी ने कहा था कि जो तुम्हें गहने दे उसे तुम मदनिका को दे देना, तो वही इसे दिलवा रहे हैं अब आप समझे?

शर्वि—(आप ही आप) इन्होंने जान लिया (प्रकाश) वाह चारुदत्त जी वाह!

गुनही में लावै सदा चित नर चतुर सुजान।
गुनयुत भलो दरिद्र हू नहिं गुनबिन धनवान॥

और गुन हित करौ यतन सब कोई।
गुन सन कछु दुर्लभ नहिं होई॥
गुनअधिकाइ हेत रजनीसा।
पहुँच्यो अगम शंभु के सीसा॥

बसन्त—कोई रथ है।

(एक रथ लेकर चेरा आता है)

चेरा—रथ हाजिर है।

बसन्त—(मदनिका को चादर ओढ़ा कर घूँघट खींचकर) मदनिका! अब जा तू हमसे विदा हो, रथ पर सवार हो जा। हमारी सुध रखना।

मद—(रोती हुई) बाईजी मुझे क्यों छोड़े देती हैं? (पैरों पर गिर पड़ती है)।

बसन्त—अब तो तुम्ही ऐसी हो गई कि हम तुम्हारे पांव छुएँ। जाके रथ पर सवार हो। हमें न भूलना।

शर्वि—जय हो आपकी, मदनिका!

विदा होहु बंदौ इन्हें चरनन माथ नवाइ।
पूर्णकाम जेहि सन भई वधू सुपद तुम पाइ॥

(मदनिका के साथ रथ पर सवार होकर बाहर जाता है)

(एक चेरी आती है)

चेरी—बाई जी! बधाई है। चारुदत्त जी के पास से एक ब्राम्हन आया है।

बसंत—आज का दिन भी कैसा अच्छा है? जा बन्धुल के साथ उन्हें आदर से ले आ, मैं भी फुलवारी में जाकर बैठती हूँ।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

[तीसरा स्थान सड़क]

(रथ पर चढ़े हुए शर्विलक और मदनिका देख पड़ते हैं?)

(परदे के पीछे)

सुनो जी सुनो! कोतवाल साहब की आज्ञा है कि जिस अहीर के लड़के आर्यक को सिद्ध ने कहा था कि राजा होगा उसे राजा पालक ने डर कर घोसियों के गांव से लाकर अँधेरे बन्दीघर में बन्द किया है, तुम लोग भी अपने काम पर चौकस रहना!

शर्वि—(सुन कर) क्या मेरे प्यारे आर्यक को राजा पालक ने बांध लिया, मैं गृहस्थ भी बन गया, अब क्या करूँ !

नर के नारी और हित प्यारे जग में दोय ।
यहि छन सौ तिय से अधिक मित्र पियारो होय ॥

तो अब उतरूँ (रथ से उतरता है)

मद—(आंसू भर कर हाथ जोड़) आर्यपुत्र ! आप जाते हैं तो मुझे अपने घर पहुँचा दीजिये ।

शर्वि—वाह ! प्रिया वाह ! तुमने हमारे मन की बात कही । (चेरे से) क्यों भाई चौधरी रेभिल का घर जानते हो ?

चेरा—जी हां ।

शर्वि—प्रिया को वहीं पहुँचा दो ।

चेरा—बहुत अच्छा ।

मद—आप सँभल के जोखम में पड़िएगा (बाहर जाती है) ।

शर्वि—निज भुज बल जो विदित गोत के लोगहु सिगरे ।
राजा से अपमान पाइ सेवक जो बिगरे ॥
योगँधरायन कीन्ह भूप उदयन हित जैसे ।
इष्ट मित्र के काज उभारों जन सब तैसे ॥
नाहक बांध्यो मित्र को डर बस रिपु मतिमन्द ।
झपटि छुड़ाओं ताहि ज्यों परत राहुमुख चंद ॥

(बाहर जाता है)

[चौथा स्थान—वसन्तसेना का महल]

(चेरी और बंधुल के साथ मैत्रेय आता है)

मैत्रे—अरे ! रावण ने मर मर के तपस्या की तो राक्षसों का राजा हुआ पुष्पकबिमान पर चढ़ चढ़ घूमा, और मैंने न तपस्या की न कुछ, रंडियों के साथ फिरता हूँ ।

चेरी—देखिए हमारे घर की ड्योढ़ी देखिए।

मैत्रे—(देख कर अचरज से) वाह, वसन्तसेना के घर की ड्योढ़ी कैसी सुन्दर है, दरिद्र देख हाय मारे। भीतर हरे रङ्ग से रंगी है, नीचे झाड़ू देकर सब झक कर दिया गया है, ऊपर से पानी छिड़का हुआ है, ठांव ठांव पर रंग रंग के फूल रक्खे हुये हैं, फाटक इतना ऊँचा है मानो आकाश देखने को सिर उठाये हुये हैं, फाटक के दोनों ओर बड़े बड़े हाथी अपने सूँड़ों से बेले के हार हिला रहे हैं और मेहराब हाथीदांत का बना हुआ है, पताकाओं की पांत सजी हुई है कुसुम रंग के अंचल बयार में ऐसे हिल रहे हैं मानो मुझे बुला रहे हैं, इनके खंभों की टोड़ियों के पास हरे हरे आम के पल्लव पड़े हुए बिलोर के कलश रक्खे हुए हैं। हिरण्य-कशिपु की छाती की नाई बज्र ऐसे मोटे मोटे नहरे किवाड़ लगे हैं; इनको देखने से जो लोग संसार से अपना जी हटा कर बैठे वह भी एक बार टकटकी बाँध कर देखने लगेंगे।

चेरी—आइये यह पहिला चौक है।

मैत्रे—(आगे चल कर देख कर) अरे, अरे, यहाँ तो पहले चौक में चांद, संख और कमल के रंग की बुक़नी से रंगे हुए जिनकी सुनहरी सीढ़ियों पर रंग रंग के रत्न जड़े हैं ऊँचे महल खड़े हैं जो अपने मोती की झालरों से सजे हुए मुँह ऐसे झरोखों से मानों उज्जैनी को देख रहे हैं; ड्योढ़ी पर दरवान ऊँघता हुआ ऐसा बैठा है जैसे कोई पंडित मंत्र जपे; दही चाँवल की बलि रक्खी है पर चूना समझ के उसे कौवे नहीं छूते।

चेरी—चलिये, दूसरे चौक में चलिये।

मैत्रे—(घुस के देख कर) अरे, अरे, दूसरे चौक में रथ बहली के बैल घास भूसा खाकर कैसे मोटे मोटे बँधे हैं जिनके सींगों में तेल चुपड़ा हुआ है, इनके बीच में निरादर किये हुए भलेमानुस की नाई एक भैंसा लंबी लंबी साँसें ले

रहा है। इधर अखाड़े से निकले पहलवान की नाईं मेढ़े की गरदन मली जा रही है; इधर घोड़ों के बाल संवारे जा रहे हैं; इधर देखो घुड़साल में एक ओर चोर ऐसा बन्दर बँधा है। (दूसरी ओर देख कर) और इधर महावत आटा सान सान पिंड बना बना कर हाथियों को खिला रहे हैं। चलो, आगे चलो।

चेरी—आइये, तीसरे चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर) अरे, अरे, तीसरे चौक में तो भलेमानुसों के बैठने के लिये आसन रचे हुए हैं; तिपाई पर खुली हुई पोथी रक्खी है; यह देखिये रत्नों की गोटें समेत चौसर बिछी है; यह देखो पातुरें और बूढ़े बिट रंग रंग के चित्र हाथ में लिये हुए इधर उधर टहल रहे हैं। चलो, आगे चलो।

चेरी—आइये, चौथे चौक में आइए।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अरे चौथे चौक में तो जवान जवान स्त्रियाँ मृदङ्ग बजा रही हैं जिन से बादल गरजता सा जान पड़ता है; मँजीरा बजने में ऐसा चमक रहा है मानो पुन्य घट जाने से आकाश के तारे धरती पर छिटक रहे हैं; बाँसुरी कैसे मीठे सुर से बज रही है और इधर गोद में रक्खी हुई बीना नरम हाथों से बजती हुई मानवती नायिका की नाईं झनझना रही है, और फूल के रस से माती भौंरियों सी पातुरों की लड़कियाँ गा गा कर नाच रही हैं; कोई नाटक पढ़ रही है और कोई भाव सीख रही है।

चेरी—आइये; पाँचवें चौक में आइए।

मैत्रे—(चल कर और देख कर) अरे, अरे, पाँचवें चौक में तो कंगालों के जी ललचाने वाली हींग और तेल की गंध आ रही है, रसोईं के घर से सुगन्ध और धुआँ ऐसा निकल रहा है जैसे कोई जी जला हुआ सांस ले; भाँति भाँति के भोजनों के गंध से मेरे पेट की आग भड़क उठी है और यह देखिये कसाई का लड़का मैले कपड़े की नाईं माँस धो

रहा है ; रसोइये भांति भांति के भोजन बना रहे हैं—कोई लड्डू बाँध रहा है, कोई मालपुआ तल रहा है। (आपही आप) अरे, यहाँ ऐसा कोई कहने वाला नहीं कि आइये पाँव धोकर बैठ जाइये। (दूसरी ओर देख कर) अरे, इधर भाँति भाँति के गहने पहने पातुरें और बंधुल अप्सरा और गन्धर्व ऐसे टहल रहे हैं। सचमुच यह घर स्वर्ग हो गया है। क्यों जी, तुम लोग बंधुल हो ?

बंधुल—जी हाँ,

पिता और माता कोउ औरहि।
रहे जन्मदाता कोउ औरहि॥
पालि पोषि औरही बढ़ाए।
पर संपति भोगत मन भाये॥
पहिरत खात दंड नित पेलत।
हाथिन के पाठे सम खेलत॥

मैत्रे—चलिये, आगे चलिये।

चेरी—आइये, आइये छठे चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अरे, अरे, अरे, छठे चौक में तो सोने और रत्नों के फाटक बीच बीच में नीलम जड़ने से इन्द्र धनुष ऐसे देख पड़ते हैं। लहसुनिया, मोती, मूँगा, पुखराज, नीलम, पन्ना, चुन्नी, रत्नपारखी परख रहे हैं मानिक कुन्दन से जड़ा जा रहा है ; लाल रेशम में सोने के गहने गूँधे जा रहे हैं ; कोई मोती पिरो रहा है कोई बिल्लौर घिस रहा है, कोई शंख में छेद कर रहा है, कोई मूँगा खराद रहा है। इधर कोई केसर सुखा रहा है, कोई कस्तूरी झल रहा है ; कोई चन्दन घिस रहा है ; कोई और सुगन्ध मिला रहा है ; कोई पातुरों के गाहकों को पान खिला रहा है ; कोई तिरछी दीठि से ताक रही है ; कहीं हँसी हो रही है और कहीं सी सी करते हुए लोग मद पी रहे हैं। इधर उधर और बहुत से लोग अपने लड़केवालों को

छोड़े रंडी के पीछे अपनी संपति गँवाये हुये रंडियाँ मद पी कर जो चुकड़ों में छोड़ देती हैं उसे बड़े चाव से पी रहे हैं; चलो आगे चलो।

चेरी—आइये, सातवें चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर और देख कर) अरे, सातवें चौक में तो सुन्दर पींजरों और ढाबलियों में बैठे हुए कबूतरों के जोड़े एक दूसरे को चूम रहे हैं। सुआ दूध भात खाकर बाम्हन की नाईं वेद पढ़ रहा है। इधर स्वामी से आदर पाकर फूली हुई लौंडी सी मैना चिल्ला रही है और रंग रंग के फल खाकर कोयल कूक रही है, इधर बटेर लड़ रहे हैं; इधर तीतर बोल रहे हैं; कहीं कहीं कोई पिंजड़े में कबूतर लिये जा रहा है और कहीं सूरज की किरनों से जले हुए महलों को मोर अपने रत्न जड़े पंखों से पंखा कर रहा है। (दूसरी ओर देख कर) और इधर देखिये पातुरों के पीछे राजहंस का जोड़ा अपनी चाल सिखाता हुआ चला जा रहा है; बत्तख और सारस घर के बूढ़ों की नाईं इधर उधर टहल रहे हैं। इस पातुर ने अपने घर में रंग रंग की चिड़ियाँ पाल कर नंदनवन बना लिया है। चलिये, चलिये, आगे चलिये।

चेरी—आइये, आठवें चौक में आइये।

मैत्रे—(चलकर देख कर) अरे यह कौन है जो रेशमी कपड़े पहने अंग अंग पर दोहरे तेहरे गहने जड़े इधर उधर टहल रहा है?

चेरी—यह बाई जी के भाई हैं।

मैत्रे—अरे, कितनी तपस्या करने से बाई जी का भाई होता है! नहीं नहीं यह तो मसान में चम्पा के पेड़ ऐसा है। सब कुछ अच्छा पर किसी के काम का नहीं। (दूसरी ओर देख कर) अरी यह कौन फूलों से सजी जूता पहिने ऊँचे आसन पर बैठी है?

चेरी—यह हमारी बाई जी की अम्मा हैं।

मैत्रे—इस डाइन का पेट तो बड़ा भारी है। क्या इसे महादेव ऐसा बैठा के यह घर बनवाया था या घर के भीतर इसे बनाया था।

चेरी—अरे हँस न; आज कल तो बेचारी को चौथिया आती है।

मैत्रे—हे चौथिया देवता! ऐसा आसन मिले तो हम पर भी कृपा करो, हम बाम्हन हैं।

चेरी—अरे मर जायगा।

मैत्रे—(हँसकर) अरी, इतने फूले पेट से तो मरा अच्छा!

पी पी के मदिरा मतवारि।
अम्मा ऐसी भई तुम्हारि॥
जो तुम्हारि अम्मा मरि जाय।
सौ सियार तो खायँ अघाय॥

मैंने बसंतसेना की बड़ाई सुनी थी, आज उनका आठ चौक का घर देख कर समझता हूँ कि स्वर्ग यहीं उतरा है। मैं इसकी बड़ाई नहीं कर सकता; यह कुबेर का घर है कि रंडी का! तुम्हारी बाई जी कहां हैं?

चेरी—चले चलिये, वह देखिये, फुलवारी में बैठी हैं।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अहा हा कैसी सुन्दर फुलवारी है! कैसे सुन्दर सुन्दर फूल लगे हैं! बीच बीच हिंडोले गड़े हैं; जूही, नेवाड़ी, बेला, चमेली, मोतिया, मोगरा, सेवती सभी लगे हैं; सचमुच नंदनवन हो रहा है। (दूसरी ओर देखकर) और यह लाल कमलों पर सूरज की किरनों के पड़ने से पोखरी का सांझ का सा रंग हो रहा है!

सोहै लखौ अशोक धरि नये फूल औ पात।
लगे रक्त के बूँद जनु समर सुभट के गात॥

कहां हैं बाई जी?

चेरी—झुक के देखो, यह क्या है।

मैत्रे—(देखकर आगे बढ़ कर) जय हो आप की!

बसन्त—अरे मैत्रेय जी आगये! (उठ कर) आइये, इस आसन पर विराजिये।

मैत्रे—आप बैठ जाइये। (दोनों बैठ जाते हैं)

बसन्त--कहिये, चौधरी जी अच्छे हैं?

मैत्रे—जी बहुत अच्छे हैं।

बसन्त—मैत्रेय जी भला कहिये तो अब भी

मान-फूल, विश्वास-जर, शील-डार, गुन-पात।
साधुतरुहि सो, हितबिहँग सुख सन सेवत जात॥

मैत्रे—(आपही आप) इस दुष्ट रंडी ने अच्छी बात बनाई॥

बसन्त—कहिये किधर चले?

मैत्रे—जी, चारुदत्त जी ने हाथ जोड़ के आपसे बिनती की है।

बसन्त--(हाथ जोड़ कर) क्या आज्ञा देते हैं?

मैत्रे—हम आप के गहने अपने समझ से जुए में हार गये हैं और जिसके हाथ हारे वह सभिक था न जानें राजकाज से कहां चला गया।

चेरी—बाई जी, बधाई है, चौधरी साहब जुआरी हो गये।

बसन्त—(आपही आप) क्या गहने दिखला दें? (सोचकर) अभी ठहर जायँ।

मैत्रे—क्या आप यह हार न लेंगी?

बसन्त—(हँस कर चेरी का मुँह देख कर) क्यों न लूँगी। (हार लेकर अपने पास रख लेती है) बौरभरे आम से रस कैसे टपकता है! (प्रकाश) मैत्रेय जी! मेरी ओर से अपने जुआरीजी से बिनती कीजियेगा कि रात को उनसे मिलने आऊँगी।

मैत्रे—(आप ही आप) अब वहां आके और क्या लेगी ? (प्रकाश) बहुत अच्छा कह दूँगा (आपही आप) कि रंडियों के फन्द में न पड़ें। (बाहर जाता है)

बसन्त—अरी यह गहने ले ले, आज चारुदत्त जी के यहां चलैंगे।

चेरी—बाई जी, आज बड़ा दुर्दिन हो रहा है,

बसन्त—होय राति बदरा उठैं बरसैं मूसलधार,
पिया मिलन में कौन प मेरे रोकनहार ?

हार लेकर जल्दी आ। (दोनों बाहर जाती हैं)

26-12-32

पाँचवाँ अंक

(स्थान—चारुदत्त का घर)

(चारुदत्त आसन पर बैठा देख पड़ता है)

चारु—(ऊपर देखकर) अरे आज बड़ा दुर्दिन हो रहा है।

देखत घरके मोर चाव सन पूँछ फुलाई।
मानसरोवर चलत हंस देखैं घबराई॥
बिना समय के मेघ लखौ नभ चहुँ दिसि छावत।
विरहिनि के मन माहिं काम की पीर उठावत॥
भीगे भैंसे उदर सरिस भौंरे से कारे।
लसत बिज्जु चहुँ और मनहु पीताम्बर धारे॥
लसत कड़ाकुलपाँति शंख मानहु निजकर धरि।
लाँघन चहत अकाश एकही पद फिरि जनु हरि॥
श्याम बरन धरि शंखसी कुटिल कड़ाकुलपाँति।
बिजरीपट ओढ़े लखैं घन केशव की भाँति॥
टपकत गले रूप अनुहारा।
घन सन गिरत नीर की धारा॥
चमकत बिज्जु कबहुँ दरसाहीं।
घन अँधेर महँ पुनि छिपि जाहीं॥

गिरैं धर्रान के ऊपर कैसे।
गगनवस्त्र की झालर जैसे॥

मिलि चलत चक्र चकई मनहुँ कहुँ हंस जनु उड़ि जात हैं।
कहुँ लसत मछरी मगर जनु कहुँ महल उठे लखात हैं॥
बनि जात रूप अनेक घन के लखहु चाल बतास की।
लखि परैं खींचे चित्र मानहु छत्त माँहि अकास की॥
मेघ से औ तम से घिरि कै धृतराष्ट्र के राज सो सोहै अकासा।
कूकत हैं एक ओर शिखी दुरयोधन से करि गर्व प्रकासा।
जूए में हारि युधिष्ठिर के सम कोकिल बैठी है मौन उदासा।
पांडव से बन*छोड़ि के हंस कहूँ छिपि कै अब लीन निवासा॥

(सोचकर) मैत्रेय को बसंतसेना के पास गये बड़ी बेर हुई, अभी तक नहीं आये, क्या करते हैं।

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—पातुर भी कैसी लालची और नसीली होती है। देखो, बसंतसेना बोली न चाली, पूछा न गछा और माला ले ली। इतना तो धन मिला पर उसके मुँह से यह भी न निकला कि मैत्रेय जी बैठो, पानी तो पीलो तब जाना। मेरी चलै तो मैं मुँह-जली का मुँह न देखूँ। (दुख से) लोग ठीक कहते हैं कि कमल कहां जिसमें भँसीड़ नहीं, बनियाँ कहाँ जो धोखा न दे, सोनार कहाँ जो चोर न हो, गँवारों की भेंट कहाँ जिसमें लड़ाई दङ्गा न हो और पतुरिया ऐसी कहाँ जो लालची न हो। तो अब चारु-दत्तजी को इस पतुरिया से छुड़ाने का उपाय करूँ। (चल कर और देखकर) चारुदत्त जी तो बाग में वह बैठे हैं (आगे बढ़ कर) बढ़ती हो।

चारु—अरे मैत्रेय जी आ गये! आओ यहाँ बैठो।

मैत्रे—बैठे।

चारु—कहो भाई काम सिद्ध कर आये?

---

* बन का अर्थ संस्कृत में जल भी है।

मैत्रे—सब चौपट हो गया ?

चारु—क्या बसंतसेना ने हार नहीं लिया ?

मैत्रे—अजी हम लोगों के भाग ऐसे कहां ? उसने तो कमल ऐसे हाथों से उसे उठा लिया ।

चारु—तो फिर क्यों कहते हो कि चौपट हो गया ?

मैत्रे—चौपट न हुआ तो और क्या, किसी के खाने में आया न पीने में, चोर लेगया और इसके बदले ऐसे बड़े मोल के रत्नों की माला हाथ से जाती रही ।

चारु—भाई, ऐसी बात न कहो ।

निज भूषन सौंपे हमहिं करि हमार विश्वास ।
यह है ताके मोल की गुरुता कीन्ह प्रकास ॥

मैत्रे—भाई एक बात और हुई जिससे और भी जी जल गया कि वह सखी की ओर देखकर आंचल से मुँह छिपा कर हम पर हँसी थी। देखिए हम ब्राह्मन हैं तो भी आपके पांव पड़ कर आप से बिनती करते हैं कि पतुरियों की संगति बुरी होती है। इससे आप इस पातुर से अलग हो जाइये । पतुरिया तो जूते के भीतर की कंकड़ी होती है, घुसने को तो घुस जाती है पर निकलती है बड़े दुःख से । और आपने सुना होगा कि जहाँ पतुरिया, हाथी, कायथ, भिखमंगे, धूर्त और गधे रहते हैं वहाँ बुरे लोग भी नहीं जाते ।

चारु—भाई तुम किसी की बुराई क्यों करते हो ? हमारी तो दशा ऐसी हो रही है कि अलग न होंगे तो न होंगे देखो—

घोड़े चाहत है भले पवनहु से बढ़िजायँ ।
बलही के अनुसार पै बेगि उठत है पायँ ॥
मन स्वभाव सन चपल है चाहत है सब बात ।
हारि मानि जब जात तो आपहि मरि सम जात ॥
गनिका को यह काम, जेहि के धन तेहि से मिलै ।

(आपही आप) न बसंतसेना ऐसी नहीं—'जाके गुन तेहि से मिलै' (प्रकाश) हमरे पास न दाम सो छूटी है आपही॥

मैत्रे—(नीचे देखकर आपही आप) यह तो ऊपर देखकर सांस ले रहे हैं, मेरे कहने से तो और भी इसके लिए घबरा गये, ठीक कहा है कि काम बाम होता है। (प्रकाश) अजी बसंतसेना ने कहा था कि सांझ को आऊँगी। हो न हो कुछ और लेना चाहती है, हार का दाम कम होगा।

चारु—आने दो, सुखी होकर जायगी।

(घर के बाहर कुँभिलक आता है)

कुँभि—अरे।

जैसे कैसे बरसै तोय।
पीठिचाम त्यों गलगल होय॥
जैसे जैसे चलै बयार।
त्यो त्यों काँपै हिया हमार॥

(हँसकर) भन भन भन भन बजत बजाओं सात तार की बीना।
सात छेद की बंसी फूँकौं मोसों को परबीना?
सीपों सीपों गदहा ऐसा गाँवों राग मलारा।
मेरे आगे तुम्बरु कैसा नारद कौन बेचारा॥

आज बाई जी चारुदत्त के घर आ रही हैं सो मुझे उन्हें चेताने को पहले ही से भेजा है। (कुछ चल कर देख कर) चारुदत जी तो वह बाग़ में बैठे हैं और वह बरुआ भी है तो चलूँ। अरे, बाग के किवाड़ बन्द हैं तो इस बाम्हन को चौका दूँ।

(एक कंकड़ी फेंकता है)

मैत्रे—अरे यह कौन कंकड़ी मारता है?

चारु—बाग की भीत पर से कबूतरों ने गिरा दी होगी।

मैत्रे—रह रे कबूतर रहु, इसी लकड़ी से हम तुझे पक्के आम की नाईं झोरे डालते हैं (लाठी उठाता है)

चारु—(जनेऊ पकड़ कर) बैठो, बेचारे को क्यों मारते है, कबूतरी के साथ खेल रहा है।

कुंभि—अरे, मुझे नहीं देखता, कबूतर को देख रहा है। दूसरी कुंकड़ी फेंकूँ (फिर फेंकता है)

मैत्रे—(कुंभिलक को देखकर) अरे, कुंभिलक है, तो किवाड़ खोल दूँ। (किवाड़ खोल कर) अरे कुंभिलक! आओ, आओ।

कुंभि—मैत्रेय जी पालागैं।

मैत्रे—अरे आज क्या है जो ऐसे कुदिन में आये?

कुंभि—अजी वही वही।

मैत्रे—अरे कौन कौन?

कुंभि—वही वही।

मैत्रे—अबे क्या जाड़े में बुड्ढे कंगाल की नाईं उईं उईं करता है?

कुंभि—और तुम क्या श्राद्ध में कौवों की नाईं काँव कांव करते हौ।

मैत्रे—कह तो।

कुंभि—(आपही आप) अच्छा तो ऐसे कहूँ। (प्रकाश) एक प्रश्न देंगे तुम्हें।

मैत्रे—हम तेरे सिर पर एक लात देंगे।

कुंभि—अच्छा तो बताओ आम कब बौरते हैं?

मैत्रे—गरमी में तो।

कुंभि—(हंस कर) नहीं नहीं।

मैत्रे—(आपही आप) तो क्या कहैं? (प्रकाश) चारुदत्त जी से पूँछ लें (चारुदत्त के पास जाकर) क्यों भाई आम कब बौरते हैं?

चारु—बड़े मूर्ख हो, "बसंत" में नहीं जानते।

मैत्रे—(कुंभिलक के पास जाकर) अबे बसंत।

कुंभि—अच्छा अब दूसरी बात बताओ; बड़े बड़े नगरों की रच्छा कौन करता है?

मैत्रे—अबे रच्छा।

कुंभि—(हँस कर) अजी नहीं।

मैत्रे—हम कुछ भूल रहे हैं (सोच कर) चारुदत्त जी से पूँछ लें (चारुदत्त के पास जाकर) क्यों भाई बड़े बड़े नगरों की रच्छा कौन करता है ?

चारु—सेना।

मैत्रे—(कुंभिलक के पास जाकर) अबे सेना।

कुंभि—अच्छा दोनों को इकट्ठा करके फुरती से कहो तो।

मैत्रे—सेनाबसंत।

कुंभि—उलट के कहो।

मैत्रे—(बदन से उलटा होकर) सेनाबसंत।

कुंभि—अबे गधे पद उलट के कह।

मैत्रे—(पैर उलट कर) सेनाबसंत।

कुंभि—बड़ा गधा है। अरे अक्षर उलटा।

मैत्रे—(सोच कर) बसंतसेना।

कुं—वही, वही, आती हैं।

मैत्रे—तो जाके चारुदत्त जी से कहूँ। (चारदत्त के पास जाकर) अजी चारुदत्त जी आप का धनी आयगा।

चारु—हमारे घर में कौन धनी है ?

मैत्रे—घर में नहीं हैं तो आने चाहता है। बसंतसेना आती है।

चारु—क्यों जी धोखा तो नहीं देते ?

मैत्रे—हमारी बात की परतीत न हो तो कुंभिलक से पूँछ लो। अबे कुंभिलक चल तो।

कुंभि—(आगे बढ़ कर) प्रणाम।

चारु—आओ जी, कहो बसंतसेना आ रही हैं ?

कुंभि—जी हां पहुँचती ही हैं।

चारु—(हर्ष से भाई) हमें अच्छी खबर देना कभी अकारथ नहीं हुआ, तो लो यह इनाम (दुपट्टा उतार कर देता है)

कुंभि—(दुपट्टा लेकर हर्ष से) मैं जाके बाई जी से कह आऊँ
(बाहर जाता है)

मैत्रे—क्यों भाई, कुछ जानते हो क्यों आ रही है ?

चारु—हम तो कुछ नहीं समझते।

मैत्रे—हम जानते हैं माला का दाम थोड़ा है, गहने कीमती थे इस से कुछ और माँगने आती है।

चारु—(आपही आप) उस का संतोष कर देंगे, (प्रकाश) अच्छा, जाओ आगे बढ़ के बसंतसेना को ले आओ।
(मैत्रेय बाहर आता है)

(बाग के बाहर चेरियों और विट के साथ बसंतसेना आती है)

विट—(बसंतसेना को दिखा कर)

कमल नहीं है लीन्हें श्रिय सों न घट तऊ,
चमकदमकवारी काम की कटारी है।
कुसुम कलीसी है मनोजतरु डार केरी,
लाज न तजे है जोपै पातुर की बारी है।
लीला करि चलती न पुरकुलवधू कोऊ,
याकी छबि देखि जो सुहाग नाहिं हारी है।
रंगभूमि चले कै सँकेतगेह जात जब,
लेत प्रियजन नित संग सुकुमारी है॥

बसंतसेना जी, देखो देखो,

बिरहिन के मन से मलिन लसैं सिखर चहुँ ओर।
उनये लखौ पहार पै गर्जत हैं घन घोर॥
नाचि उठे एक संगही मोर पूँछ फैलाय।
मनिमय पंखे ताड़ के रहे मनौ नभ छाय॥

और, मूसल धार गिरै जल दादुर ताहि पियें मुख कीच लगाई।
दीप समान कदंब लसैं कहुँ कूकत मोर लखौ सुख पाई।
खोटे मनुष्यन के सम योगिहिं घेरत हैं घन चंदहि आई।
बैठत है एक ठावँ नहीं बिजुरी कुलटा युवतीन की नाई॥

बसं—आपने बहुत ठीक कहा।

तेरो कौन अकाज कहौ चहुँदिशि घन घेरे।
मेरो प्रानपियार रमै सँग में जो मेरे॥
जो तू बिगड़ी सौत सरिस मोहि गरजि डरावति।
पद पद पापिन रैन राह मेरी तू आवति॥

बिट—अच्छा तो हम इसे झिड़कते हैं।

बसंत—अजी यह बिचारी स्त्री है, भलमंसी नहीं जानती इसको बुरा न कहना चाहिये।

बिट—देखिये, देखिये,

धावा करत पवन सम आवत।
मूसरधार नीर बरसावत॥
गरजत डंका मनहु बजावत।
बिजरी की सोइ ध्वजा उड़ावत॥
हरत मेघ लखु करु हिमकर के।
प्रबल भूप पार पुर जिमि पर के॥

बसंत—जी हां ठीक है;

पानी से पेट भरे गज की सी घटा घन की यह आवत है।
बिज्जु लसैं बगुली बिलसैं कहुँ शूल हिये से उठावत है।
सोर मचाय के दादुर मूढ़ जरे पर लोन लगावत है।
पीतम से बिछुड़ीं जो तिन्हें बध को जनु ढोल बजावत हैं॥

बिट—जी, इधर भी देखिए,

बगुलन की कलँगी धरे बिजुरी चँवर हिलाय।
होड़ मत्त गज की करत आज अकाश लखाय॥

बसंत—देखिए,

भीगे तमाल के पातन से घन छाये लखौ रवि तेज निवारी।
दीमक के घुस बैठत है शरधार परे गज की छवि धारी।
कंचन दीपक सी बिजरी जनु घूमत है पुर ऊँची अटारी।
मेघन देखो जुन्हाई हरी जिमि नीवर की जबरैं मिलि नारी॥

बिट—बसंतसेना जी, इधर देखिये, इधर,

बिजुरीडोर कसे तन धारत।
गज सम एक एकहि ललकारत॥
इन्द्रबचन सन घन बरजोरी।
खैंचत धरनि रूप की डोरी॥

और, भैंसन के रंग नील भरे सोइ प्रबल बतासा।
बिजुरीपंख लगाय सिंधु सम हिलत अकासा॥
गंध भरी अरु हरी घास की अँकुरवारी।
छेदत है सोइ धरनि मेघ मनिमय शर मारी॥

बसंत—और इधर,

आउ आउ कहि बारबार तेहि मोर बुलावैं।
उड़ि के बगुली पाँति ताहि निज अँग लगावैं॥
कमल छाँड़ि अकुलाय लखैं तेहि दुखित मराला।
करत नील आकाश उठत हैं घन यहि काला॥

बिट—ठीक है, और

मूँदे सरोज सो निश्चल लोचन, राति औ द्यास के भेद मिटाये।
बिज्जु लसे झलकैं सो दिसामुख, चादर सों सोइ मानों छिपाये॥
फैले अकाश के मंदिर में बहु, नीरद छत्र समान लगाये।
मेघ फुहारनगेह में देखहु, सोवत है जगकाज बिहाये॥

बसंत—ऐसाही है, देखिए

दाजिन संग उपकार सरिस बिनसे अब तारा।
दिशि मलीन कुलतिया सरिस बिछुरत जब प्यारा॥
तपत देवपतिशस्त्र बज्र की ज्वाल कराला।
टपकत है आकाश मनहुँ गलि गलि यहि काला॥
और, बरसैं गरजैं झुकि उठैं मेघ करैं अँधियार।
नये धनी के सरिस यह लीला करैं अपार॥

बिट—हाँ, हाँ,

खिल खिलात सम लगै चलत जबहीं बकपाँती।
लसत बिज्जु चहुँ ओर जरति सी देह लखाती॥

लरत लगै कर धनुष लिये शरधार गिरावत।
प्रकट वज्र के शब्द होत जनु शोर मचावत॥
नभ चलत पौन चूमत लगत साँप सरिस बादर विषम।
लखि परत मनहु अकुलात यह लगत धूप के धूम सम॥

वसंत—पिय के घर मैं जाति हौं मेघ न आवति लाज।
छुवत धारकर सन गरजि डरवावत बेकाज॥

अरे इन्द्र! कबहुँ रही है प्रीति भला मेरी औ तेरी।
जो तू गरजत सिंह सरिस मोहि यहि छन हेरी॥
पिया मिलन मैं जाति मोहि यहि विधि तू टोंकत।
जलधारा बरसाय राह मेरी तू रोकत॥

और, सकुचे बोलत झूँठ नहिं तुम गौतमतिय काज।
मो मन तैसेंहि समुझि अब मेघ हटावहु आज॥

और हे इन्द्र! बिजुरी कोटि गिराउ कै गरजो बरसौ मेह।
रोकि सकै को तियनको चलत पिया के गेह॥
बरसै घन तो बरसि ले पुरुष होत बेपीर।
अबलादुख समुझत न क्यों तुहु बिजुरी बीर?

विट—आप इसे क्यों बुरा कह रही हैं? इसने आप के साथ उपकार किया है।

गिरि की चोटी लसत मनहुँ यह सेत ध्वजा सी।
सुरपतिमन्दिर बीच केरि जनु बिमल दिया सी॥
ऐरावतउर हिलत हेमडोरी सी एहा।
लाइ देखावत लखौ तुमहि प्रियतम को गेहा॥

वसंत—क्यों जी! क्या उनका घर यही है?

विट—जी हाँ यही है, और आप तो सब कला जानती हैं, आपको कौन सिखा सकता है, पर स्नेह नहीं मानता, यहाँ जाकर बहुत मान न कीजिएगा।

रतिरस होत न किये मान अति।
बिना मान लागै फीकी रति॥

करिय मान अरु मान कराइय।
मानिय अरु निज पियहि मनाइय॥

अच्छा तो अब पुकारूँ। अजी कोई है! चारुदत्त जी से कह दे,
फूले कदंब की गंध समेत बयार बहै उनये घन कारे।
ऐसे में आई है प्रीतम के घर भीजत मैन के मानों सहारे।
गर्जत मेघ चकोसो लखै ताहि देखन चाह हिये महँ धारे।
पाँय औ पायल कीच भरे तिन्हें धोवत ठाढ़ी दुआर तुम्हारे॥

चारु—(सुनकर) मैत्रेय जी! देखो तो कौन है?

मैत्रे—(बसंतसेना के पास जाकर) जय हो आपकी।

बसंत—पालागैं! (बिट से) यह छतरीवाली आप के साथ लौट जाय।

बिट—(आपही आप) इसी चाल से हमें लौटाती हैं। (प्रकाश) बहुत अच्छा बाई जी।

मान गर्व छल कपट झूठ माया चतुराई।
जहँ उपजे रति रहैं जहाँ प्रियजन सुखदाई॥
नेह उदार स्वभाव खरिच सौदा सुखकेरा।
वेश्यापन के हाट आज कीजिय बहुतेरा॥

(बिट बाहर जाता है)

बसंत—मैत्रेय जी तुम्हारे जुआरी कहाँ हैं?

मैत्रे—(आपही आप) अरे जुआरी की तो अच्छी पदवी मिली! (प्रकाश) जी सूखे पेड़ों के बाग में हैं?

बसंत—आपका सूखे पेड़ों का बाग कहाँ है?

मैत्रे—जहाँ न कोई खाय न पिये।

(बसन्त सेना मुसकाती है)

मैत्रे—तो चलिए, भीतर चलिए।

बसन्त—(अलग चेरी से) वहाँ जाके क्या कहूँ?

चेरी—जुआरी! कहिये साँझ कैसी बीत रही है?

बसंत—कहते बनैगा मुझ से?

चेरी—सब बन जायगा।

मैत्रे—आइये।

बसंत—(आगे बढ़ कर चारुदत्त को फूलों से मारकर) अजी जुआरी जी ! सांझ कैसे बीत रही है ?

चारु—(देखकर) अरे बसन्तसेना आगई ! (उठकर) प्यारी,

जागत बितैं निसा सब मेरी।
सांस लेत सुधि करि करि तेरी॥
आजु पाय तव संगम प्यारी।
बिरहबिपति सब मिटी हमारी॥

आइये, इस आसन पर बैठिये।

मैत्रे—आइये, यहाँ बिराजिये।

(बसन्तसेना बैठती है, सब बैठ जाते हैं)

चारु—मैत्रेय जी, देखिये,

एक कुच भीगो कदम सम गिरत कान सन धार।
सोहत लहि युवराज पद मानहुँ राजकुमार॥

भाई, बसन्तसेना जी के कपड़े भीग गये हैं और अच्छे कपड़े ला दो।

मैत्रे—बहुत अच्छा।

चेरी—मैत्रेय जी ! आप बैठिये मैं अभी कपड़े बदलवा देती हूँ।

(बसन्तसेना के कपड़े बदलवा देती है)

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) भाई इन से कुछ पूछूँ ?

चारु—हाँ हाँ।

मैत्रे—(प्रकाश) ऐसे दुर्दिन के अँधेरे में आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों उठाया ?

चेरी—बाई जी, बाह्मन बड़ा सीधा है।

बसन्त—अरी, बड़ा चतुर है।

चेरी—बाई जी यह पूछने आई हैं कि हार कितने का था।

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) हमने तुमसे पहिले ही कहा था कि हार थोड़े दाम का था, गहने मँहगे थे, इस से और कुछ मांगने आई है।

चेरी—बाईजी उसे अपना समझ के जुए में हार गई और जिसके हाथ हारीं वह सभिक था, राजकाज से न जाने कहां चला गया।

मैत्रे—जी यह तो मैं पहले ही कह चुका था।

चेरी—तो जब तक वह ढूँढ़ा जाय तब तक यह गहने लीजिये।

(गहने दिखाती हैं, मैत्रेय बड़े ध्यान से देखता है)

चेरी—मैत्रेय जी! आप इन्हें बड़े ध्यान से देख रहे हैं क्या आपने इन्हें कभी देखा है।

मैत्रे—हम इन की कारीगरी के देख रहे हैं।

चेरी—अजी, तुम्हारी आंख धोखा खा रही है यह वही गहने हैं।

मैत्रे—(हर्ष से) भाई, वही गहने हैं जो चोर ले गया था।

चारु—भाई, मिस तेही अवसर कीन्ह यह थाती फेरन हेत।
सोई खुलो यह झूठ रचि के यह धोखा देत?

मैत्रे—नहीं सच है, हम सौंह से कहते हैं।

चारु—बहुत अच्छा हुआ।

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) पूँछे कैसे मिला?

चारु—हां हां।

मैत्रे—(चेरी के कान में कहता है)

चेरी—(मैत्रेय के कान में कहती है)

चारु—ऐसे क्यों कहते हौ क्या हम लोग बाहरी हैं।

मैत्रे—(चारुदत्त के कान में कहता है)

चारु—क्यों री, वही गहने हैं?

चेरी—जी हां।

चारु—हमारे आगे अच्छी बात कहनेवाला कभी खाली नहीं गया। यह अँगूठी लो (हाथ में अँगूठी न देखकर लजाता है)

बसन्त—(आपही आप) इसी से तुम पर मरती हूँ।

चारु—(अलग) हाँ,

जाको धन नसि जाय, ताको मारिबो ही भलो।
बेबस नित पछिताय, रीझत खीजत व्यर्थ सो॥

और, ज्यों बिनपंख बिहंग, सर जल बिनु, तरु पात बिन।
ज्यों बिन दाँत भुजङ्ग, तैसहि होत दरिद्र नर॥

और, बिना पात को रूख ज्यों जैसे कूप झुरान।
भये दरिद्र पुरुष लगै सूने गेह समान॥
होत प्रसन्न दरिद्र नर सकै देइ कछु नाहिं।
पहिले के हितु बंधु सब तेहि नित बिसरत जाहिं॥

मैत्रे—अजी क्यों इतना सोच करते हो। (प्रकाश हँसकर) अजी बाई जी मेरी धोती तो दीजिये ; ये गहने उसी में बँधे थे।

बसंत—चारुदत्त जी, आप को यह न चाहिये था कि हार भेज कर हम लोगों का मन परखते।

चारु—(मुसकरा कर) बसंतसेना बाई,

(को करिहै परतीत, इत्यादि फिर पढ़ता है)

मैत्रे—अरी ! क्या बाई जी आज यहीं सोवेंगी ?

चेरी—(हँसकर) मैत्रेय जी, बड़े भोले बने जा रहे हो।

मैत्रे—हम यहाँ सुख से बैठे हैं ; हमें यहाँ से भगाने को मेघ घुसा आ रहा है।

चारु—ठीक कहते हो।

कमलसूचि कीचहि ज्यों फोरत।
त्यों जलधार नीरधर तोरत॥
चन्द्रबिपति लखि नभ दुख पावत।
तासु आँसु सम महि पर आवत॥

और निर्मल सज्जनचित्त समाना।
लगत कठिन ज्यों अर्जुनबाना॥
नील रंग घन धार गिरावत।
इन्द्रकोष मोती बरसावत॥

प्यारी बसंतसेना, देखौ,

पीसे तमाल के रंग समान लसी चहुँओर है बादरपाँती।
साँझि की सीतल मन्द सुगंध बयारिहु लागि जुड़ावति छाती।
पावस में उमड़े घन देखि पिया मिलिबेको चली अकुलाती।
प्यारी सी पीतम को बिजुरी यह देखौ प्रिया नभ को लपटाती॥

(बसंतसेना शृङ्गारभाव देखाती चारुदत्त को लिपट जाती है)

चारु—(बसंतसेना को गले लगाकर)

गरजौ घन भरिपेट तुम तुम जो भये अनुकूल।
कामजरो मम तन भयो मनहु कदम को फूल॥

मैत्रे—अरे पाजी मेघ! तू बड़ा दुष्ट है जो बिजुली चमका के बाईजी को डरा रहा है।

चारु—अजी इसे बुरा न कहो।

बिजुरी चमकै सौ बरिस, दुर्दिन बरसै मेह।
धन्य भागि जो मोहि प्रिया लपटी सहित सनेह॥

और　तेइ धन्य जग जीवनधारी।
जिनके घर आई है प्यारी॥
भीगे ठंढ अंग लपटावत।
जे जन निज तन ताप मिटावत॥

प्यारी बसन्तसेना!

हीलत सी है छत्त लखौ यह चलत बयारी।
घुने फटे यह खंभ सकैं नहिं बोझ सम्हारी॥
टूटि टूटि गलि गिरत लखौ यह अस्तरकारी।
बिगड़ि गये सब रंग गली है भीतिहु सारी॥

(ऊपर देख कर) अरे धनुष उवा है!

बिजुरी सम निज जीभ दिखावत।
इन्द्रचाप सोइ भुजा उठावत॥
ठोढ़ी सम नव जलद दिखाई।
देखहु लेत अकास जम्हाई॥

चलो भीतर चलें।　　(उठ कर चलते हैं)

चारु—पाथर पै कर्कस बजैं बिटपन बजैं गंभीर।
होत ऊँच स्वर ताड़ में चंड परैं जब नीर॥
(सब बाहर जाते हैं)

छठा अंक

(पहिला स्थान—चारुदत्त का घर)

(चेरी आती है)

चेरी—अरी! बाई जी अभी तक नहीं उठीं; अब चल के जगाऊँ। (बाहर जाती है)

(दूसरा स्थान—चारुदत्त के घर का दूसरा कमरा)

(पलंग पर बसन्तसेना सो रही है, चेरी आती है)

चेरी—बाई जी, उठिये सवेरा हो गया।

बसन्त—(आँख खोल कर) अरी, रात ही को सवेरा हो गया?

चेरी—हमारे लेखे तो सवेरा हो गया, आप चाहैं रातही समझें।

बसन्त—अरी, तुम्हारे जुआरी कहाँ गए?

चेरी—जी, बर्द्धमानक से कह कर पुष्पकरंडबाग को चले गए।

बसन्त—क्या कह कर?

चेरी—रातवाली बहली जोत के बसंतसेना को ले आना।

बसन्त—अरी, कहाँ जाऊँ?

चेरी—जहाँ चारुदत्त जी हैं।

बसन्त—(चेरी को गले लगाकर) अरी रात को जी भर के नहीं देखा था, दिन को देख लूँगी। अरी मैं भीतर के चौक में हूँ या बाहर?

चेरी—आप भीतर के चौक में क्या सब के मन में समा गई हैं।

बसन्त—अरी, चारुदत्त जी के घर मेरा रहना किसी को खला तो नहीं ?

चेरी—जी खलैगा।

बसन्त—अरी कब ?

चेरी—जब आप चली जाँयगी।

बसन्त—तब तो पहिले मुझी को खलैगा। अरी, यह माला ले और मेरी बहिन धूता जी के पास ले जा के कह कि मैं चारुदत्त जी की लौंडी हूँ वैसी ही आपकी। यह माला आपही के गले में सोहै।

चेरी—चारुदत्त जी जो उन पर रिस करैं ?

बसन्त—जा, न रिस करैंगे।

चेरी—(हार लेकर), बहुत अच्छा।

(बाहर जाकर फिर आती है)

चेरी—बाई जी ! धूता जी कहती हैं कि आर्यपुत्र ने आप को दी है, मैं कैसे ले सकती हूँ मेरे तो सब गहनों के गहने वही हैं। मुझे और कुछ न चाहिये।

(हाथ से मिट्टी की गाड़ी खींचता हुआ एक लड़का और उसके पीछे रदनिका आती है)

रद—आओ, तुम्हारी गाड़ी हम खींचें।

लड़का—हम मिट्टी की गाड़ी न लेंगे, हमैं वही सोने की गाड़ी दो।

रद—(सांस लेकर) भैया ! हम लोगों के घर में अब सोना कहाँ ? जब फिर चौधरी साहब की बढ़ती होगी तब फिर सोने की गाड़ी खेलना। चलौ तुम्हैं बसन्तसेना के पास ले चलें।

(आगे बढ़ कर बसन्तसेना के हाथ जोड़ती है)

बसन्त—आओ जी रदनिका ! यह किसका लड़का है ? कुछ नहीं पहने है तो भी इसका चाँद सा मुँह कैसा अच्छा लगता है !

रद—यह चौधरी का लड़का रोहसेन है।

बसन्त—(दोनों हाथ फैलाकर) आओ बेटा ? यहां आओ (गोद में बैठा लेती है) अपने बाप ही को पड़े हैं।

रद—स्वभाव भी उन्हीं का सा है। चारुदत्त जी इन्हीं से अपना जी बहलाते हैं।

बसंत—क्यों रोते हैं ?

रद—यह पड़ोस के एक भलेमानुस के लड़के की सोने की गाड़ी से खेलते थे ; वह अपनी ले गया, यह फिर मांगने लगे, तब मैंने इन्हें मिट्टी की गाड़ी बनादी, अब यह कहते हैं कि हम मिट्टी की गाड़ी न लेंगे हमें वही गाड़ी ला दो।

बसंत—हा ! इसे भी कंगालपना खल रहा है ! भगवान तुम हम लोगों के भाग पुरइन के पत्ते पर पानी की नाईं क्यों नचा रहे हो (आंसू भर कर) बेटा ! रोओ न, सोने की गाड़ी आ जायगी।

लड़का—रदनिका ; यह कौन हैं ?

बसंत—तुम्हारे बाप की लौंड़ी।

रद—भैया, यह भी तुम्हारी मा हैं

लड़का—तू झूठी है। हमारी मा होती तो इतने गहने कहां पाती ?

बसन्त—(गहने उतार कर रोती हुई) बेटा, अब मैं तुम्हारी मा हो गई। इन्हें ले जाओ सोने की गाड़ी बनवालो।

लड़का—जाओ हम तुम्हारे गहने नहीं लेते।

बसन्त—(आंसू पोंछ कर) न रोऊँगी ; जाओ खेलो (गाड़ी में गहने भर कर) जाओ बेटा सोने की गाड़ी बनवा लेना।

(लड़के के साथ रदनिका बाहर जाती है)

(घर के बाहर एक बहली लिये बर्द्धमानक आता है)

बर्द्ध—रदनिका ! रदनिका ! बसन्तसेना जी से कह दो कि खिड़की के आगे बहली खड़ी है। (फिर रदनिका आती है)

रद—बाई जी बर्द्धमानक कहता है कि खिड़की के सामने बहली खड़ी है।

बसन्त—अरी, कहदे ठहरै, हम कपड़े पहिन ले।

कपड़े, पहिनती है।

बर्द्ध—अरे, गद्दियाँ भूल आया ; अच्छा तो जल्दी ले आऊँ। बैल बिदकते बहुत हैं तो बहलीही हांक ले चलें।

बसन्त—अरी, पिटारा लेआ कपड़े पहिन लें।

(कपड़े पहिनने को बाहर जाती है)

(तीसरा स्थान—चारुदत्त के घर के आगे सड़क)

(बहली लिये स्थावरक आता है)

स्थावरक—मेरे स्वामी ने पुष्पकरंड बाग में बहली जल्द मांगी है, तो वहीं चलूं। चलरे बैल चल ! (आगे देख कर) अरे, सारी राह रुकी हुई है, अब क्या करूं ! (डाट कर) अरे हटोरे हटो ! क्या कहते हो किसकी बहली है ? यह महाराज के साले संस्थानक की बहली है। हटो ! (देख कर) अरे यह कौन है जो मुझे देख कर सिपाही के आगे जुआरी सा मुँह छिपा कर भागा जाता है ? यह है कौन ? जाने दो, हमें जल्दी जाना है ? अरे हटोरे गँवारो हटो ! क्या कहते हो हमारा छकड़ा अटका है, पहिये में हाथ लगा दो ? अबे ! हम राजा के साले के रथवान हैं, तेरे पहिये में हाथ लगावैंगे ? अरे, वह बेचारा अकेला है, इसको सहारा दे दूँ। चारुदत्त जी के बाग की खिड़की के सामने बहली खड़ी कर दूँ। (बहली रोक कर) अच्छा हम आते हैं वे !

(बाहर जाता है)

बसन्त—अरी, मेरा जी घबरा रहा है ! चल खिड़की की राह बता।

चेरी—चलिये।

बसन्त—(लौट कर) अरी! तेरा काम नहीं तू यहीं रह।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

बसन्त—दाहिनी आंख का फड़कना जना कर बहली पर सवार होकर) अरे! मेरी दाहिनी आंख क्यों फड़कती है? चारुदत्त जी के देखने से सब सगुन अच्छा हो जायगा।

(स्थावरक आता है)

स्थाव—गाड़ियां तो मैंने हटा दीं, अब चलूँ (बहली पर चढ़ कर, आपही आप) अरे! बहली भारी क्यों लगती है? हो न हो पहिया हटाने से थक गया हूँ इसी से बहली भी भारी लगती है। अब चलूँ।

(परदे के पीछे)

अरे ओ फाटक के पहरेवालो! अपनी अपनी जगह चौकस हो जाओ! अहीर का लड़का बन्दीघर के किवाड़ तोड़ कर रखवारे को मार बंधन काट कर जाता है, पकड़ो पकड़ो!

(एक पैर में बेड़ी पड़ी हुई घबड़ाया हुआ मुँह छिपाए आर्यक आता है)

स्थाव—अरे! बड़ा गड़बड़ मच गया। जल्दी भागूँ।

(बाहर जाता है)

आर्यक—महा विपति के सिंधु सम नृप को कारागार।
ताके आयें भांति कोउ हितसहाय सों पार॥
एक पांव बेड़ी पड़ी ताहि घसीटत जात।
ज्यों तुराइ जंजीर गज भागत है घबरात॥

सिद्ध की बात से डर कर राजा ने घोसीपूरे से पकड़वा कर मुझे कालकोठरी में बन्द किया, वहां से शर्विलक की कृपा से छूटा।

लिखा राज जो भाग में कौन दोष तो मोर।
गज ज्यों मेरे पांव में बँधन बँधे कठोर॥

लिखी विधाता माथ जो तेहि को सकै बिगारि।
चलिकै नृपहि मनाइये योग न तेहि सन रारि॥

तो अब मैं अभागा कहाँ जाऊँ? किसी भलेमानुस की खिड़की खुली है।

टूटोघर बेंड़ों बिना फाटे खुले किवार।
यह गृहस्थ ह्वैहै कोई दबो विपति के भार॥

यहीं घुस के खड़ा हो जाऊँ।

(परदे के पीछे बहली आने का शब्द होता है)

आर्यक—(सुन कर) अरे, यह किसी की बहली आ रही है।

जो बाहर कोउ जात होय नहिं चढ़े दुष्ट नर।
बधू लेन के काज भई ठाढ़ो यहि अवसर॥
भले लोग हैं जात सैरको बाहर कोई।
पठई मेरे काज दैव, सूनी यह होई॥

(बहली लिए वर्द्धमानक आता है)

वर्द्ध—मैं गद्दी ले आया; रदनिका! बाई जी से कह दो कि बहली खड़ी है, आप पुष्पकरंड बाग चलें।

आर्य—(सुनकर) यह तो रंडी की बहली है और बाहर जायगी, इसी पर चढ़ लूँ। (धीरे से चढ़ जाता है)

वर्द्ध—अरे घुँघुरू बजता है तो बाई जी आ गईं। बाई जी बैल मरकहा है, पीछे से चढ़िए। (आर्यक पीछे से चढ़ जाता है)

वर्द्ध—पैर उठाने से घुँघुरू बजना बन्द हो गया, बहली भारी हो गई, बाई जी चढ़ चुकीं, तो अब चलूँ। चल रे चल!

(रथ चलाता है)

(बीरक आता है)

बीरक—अरे, ओ जय जयमान, चंदनक, मंगल, पुष्पभद्र!

का सुचित्त बैठे करो भागो जात अहीर!
फारी छाती भूप की तोरी कड़ी जँजीर!

अरे तुम पूरब फाटक पर रहो, तुम पच्छिम के, तुम दक्खिन के, तुम उत्तर के, इस जगह कोट पर चढ़ के चंदनक और हम देखैंगे ! आओ जी चंदनक, इधर आओ !

(घबराया हुआ चंदनक आता है)

चन्द—अरे ओ बीरक ! विशल्य, भाग, अंगद, दंडकाल, दंडशूर ! राजभक्त आओ सवै करौ बेगि सो काज।

जेहि सन जाय न और पै महाराज को राज ॥

और, बाग भीर में राह में हेरो बीच बजार।

जहँ जहँ शंका होय तहँ हेरो लाय न बार ॥

का दिखरावत वीर तुम, कहो खोलि किन बात।

तोरि जंजीर अहीर को को लै भागे जात ?

पंचएँ मंगल गुरु छठे काके चौथे चन्द ?

सूरज केहि के आठवें मरन चहै मतिमन्द ?

नवें सनीचर गुरु भए छटे कौन के आज ?

हरत अहीर जियत मेरे ज्यों पंछी को बाज ॥

बीर—चंदनक जी !

तेरे सिर की सौंह कोउ ताहि बचाये जात।

सो अहीर भागो निसरि आजहि होत प्रभात ॥

बर्द्ध—चल रे बैल चल !

चंद—(देख कर) अरे देखो, देखो !

बहली ढकी ओहार से आवत परै लखाय।

देखो है यह कौन की चढ़ा कौन कहँ जाय ॥

बीर—अरे ओ बे बहलीवाले ! रोक बहली। बहली किस की है ? कौन सवार है ? कहाँ जायगी ?

बर्द्ध—सरकार ! चारुदत्त जी की बहली है, बसन्तसेना जी सवार हैं ; पुष्पकरंड बाग़ जा रही हैं।

चन्दनक—तो जाने दो।

बीर—बिना देखे ?

चंद—हाँ हाँ।

बीर—किसकी मातबरी पर ?

चंद्—चारुदत्तजी की।

बीर—कौन हैं चारुदत्त ? कौन है बसंतसेना जो बिना देखे जाने दें ?

चंद—अरे, तुम चारुदत्त जी को नहीं जानते ? बसंतसेना को भी नहीं जानते ? जो चारुदत्त और बसंतसेना को नहीं जानते तो अकास में चाँद और चाँदनी को भी नहीं जानते, चारुदत्त जी,

शशि से शीलनिधान, दुखियन के दुख हरत जो।
गुण के सिंधु समान, चारि सिंधु के रतन इक ॥
दोई जन यहि काल, नगरी के सिरमौर हैं।
बसंतसेना बाल, चारुदत्त जी धर्मनिधि ॥

वीर—अजी चंदनक !

हम सब को जानैं भले, क्यों पूँछो यह बात।
राजकाज जब परत है, भूलि बापहू जात ॥

आर्य—(आप ही आप) अरे, यह मेरा पहिले का वैरी, यह पहिले का हित है।

करैं एकही काज पै अंतर घनो लखाय।
ब्याह चिता में एक ही आगि जराई जराय ॥

चन्द—तो तुम तो राजा के सलाहकार सेनापति हो, हम वैल पकड़ते हैं, तुम देख लो।

वीर—तुम भी बलपति हो, महाराज का तुम पर इतना विश्वास है, तुम्हीं देख लो ?

चन्द—अजी, तुमने देखा तो हम देख चुके।

बीर—अजी तुम ने देखा तो राजा पालक देख चुके।

चन्द—अच्छा वे ! बहली खड़ी कर !

(बर्द्धमानक बहली रोकता है)

आर्य—(आप ही आप) हाय, अब तो मुझे पहरेवाले देखेंगे, मेरे पास हथियार भी नहीं है।

लरिहौं भीम समान अब भुज ही के हथियार।
लरिकै मरिबो है भलो बँधे न कारागार॥

पर इस साहस का काम नहीं।

(चंदनक बहली पर चढ़ कर देखता है)

आर्य—आपकी सरन हूँ।

चंद—सरनागत को अभय।

आर्य—जे लछिमी तजि देत तेहि तजैं मित्र औ गोत।
सरनागत को जो तजै हँसीयोग सो होत॥

चंद—अरे यह तो अहीर का लड़का आर्यक है। बाज से छूट कर भागा तो बहेलिये के हाथ पड़ा। (सोच कर) इस बेचारे का कुछ अपराध नहीं। मेरी सरन आ गया है, चारुदत्त जी की बहली पर सवार है, मेरी जान बचाने वाले शर्विलक का मित्र है; इधर राजा की आज्ञा। तो अब क्या करना चाहिये? अजी जो हो सो हो; हम तो इसे अभय कर चुके।

उपकारीजन और को अभयदान जो देत।
देइ प्रान यहि में तऊ जगत बड़ाई लेत॥

(डरता हुआ उतर कर) देखा आर्य है, न न देखी आर्या वसन्तसेना है। वह कहती है कि यह बात अच्छी नहीं कि मैं चारुदत्त के पास जा रही हूँ और सड़क पर मेरी पति उतारी जाय।

बीर—चन्दनक हमें तो बड़ा खटका होता है।

चन्द—खटका कैसा?

बीर—सूधे नहि बोलत बनत मानहु कछु घबरात।
पहिले देखा आर्य कहि पीछे बदली बात॥

इसीसे मुझे खटका है।

चन्द—अरे तुम कौन हो खटका करने वाले? हम लोग दक्खिनी हैं, खास खत्तिखड़ खड्ट मुख मेच्छ जंगलियों की अनेक भाषा जानते हैं देखी को देखा आर्य को आर्या बोले तो क्या?

वीर—अच्छा तो हम भी देख लें ; राजा की आज्ञा है और राजा ने हमारे भरोसे छोड़ा है।

चन्द—तुम्हारा भरोसा है, हमारा भरोसा नहीं ?

वीर—भरोसा सब कुछ है पर राजा की आज्ञा भी तो है।

चन्द—(आपही आप) अहीर का लड़का चारुदत्त जी की बहली पर चढ़ कर भागा जाता है। यह जो कहीं कहेगा तो चारुदत्त जी को दण्ड होगा, तो अब क्या उपाय है। (सोचकर) तो अब कर्नाटकों की सी लड़ाई करें। (प्रकाश) क्यों बीरक, चन्दनक तो देख चुका अब तुम कौन हो देखने वाले ?

वीर—तुम कौन हो ?

चन्द—तुम अपनी ऊँची जात भूल गये ?

वीर—(क्रोध से) क्या है हमारी जात ?

चन्द—कौन कहै ?

वीर—नहीं, नहीं कह डालो।

चन्द—न कहैंगे।

जानौं कहिहौं नाहिं, तेरी जात संकोच बस।
रहे मेरे मन माहिं कैथा तोड़े क्या मिलै ?

वीर—कहो कहो।

चन्द—(इशारे से बतलाता है)

वीर—मुँह से कहो।

चन्द—　धरे शिला पै हाथ, बैठाये जो जोड़ नित।
लीन्हें रांपी साथ, तुम हूँ सेनापति भये॥

वीर—तुम अपनी ऊँची जात भूल गए ?

चन्द—अरे मेरी जात को क्या हुआ है ?

वीर—कौन कहै ?

चन्द—कहो कहो।

वीर—(इशारे से बतला है कि चन्दनक चमार है)

चन्द—कहो, खुलके क्यों नहीं कहते ?

वीर—सुनिये, सुनिये,

तासा भाई ढोल है माय नगारा बाप।
ऐसी अच्छी जाति के हैं सेनापति आप॥

चन्द—(क्रोध से) अच्छा हम चमार हैं देखो भाई।

वीर—ओबे बहलीवाले, फेर बहली।

(वर्द्धमानक बहली फेरता है)

(वीरक बहली पर चढ़ना चाहता है, चन्दनक उसका पट्टा पकड़ कर गिरा देता है और लात मारता है)

वीर—(क्रोध से उठकर) अच्छा, तुम ने राजकाज करते हुये पट्टा पकड़ कर खींचा और लात मारी! रह तुझे हम कचहरी में चौरङ्ग न करावें तो वीरक नहीं।

चन्द—अबे! कचहरी जा चाहै दरबार जा, तू कुत्ता क्या कर सकता है?

वीर—अच्छा। (बाहर जाता है)

चन्द—(चारों ओर देख कर) जावे बहलीवाले जा। जो कोई पूछे तो कह देना कि चन्दनक और वीरक ने देख लिया है। वसंतसेना बाई! यह चिन्ह भी लेती जाओ (तलवार देता है)

आर्य—(तलवार लेकर हर्ष से)

लग्यो हाथ हथिआर, फरकति है दाहिनी भुजा।
विधि अनुकूल हमार, अब हम बचे संदेह बिन॥

चंद—बाई जी,

चंदन को जनि भूलियो विनय करौं कर जोरि।
कहौं नहीं कछु लोभ से प्रीति हिये महँ तोरि॥

आर्य—धनि गये हित संयोग बस चंदन चन्द समान।
सुधि करि हौं सच कीन्ह जो सिद्ध बचन भगवान॥

चन्द—अभय करें त्रिपुरारि; ब्रह्मा रवि हरि चंद तोहि।
राजिय निज रिपु मारि, शुंभ निशुंभहि देवि जिमि॥

(वर्द्धमानक बहली लेकर बाहर जाता है)

चन्द—(नेपथ्य की ओर देख कर) अरे, यह तो मेरा मित्र शर्विलक इसके पीछे जा रहा है? मैंने राजा के मुँह लगे बीरक से बैर किया, अब यहाँ ठहरना ठीक नहीं, अब मैं भी भाई बन्दों के साथ इसी से मिलूँ।

(बाहर जाता है)

सातवाँ अंक

[स्थान—पुष्पकरंड बाग में एक जगह]

(चारुदत्त और मैत्रेय आते हैं)

मैत्रे—देखिये, देखिये पुष्पकरंड बाग कैसा सोहावना है।

चारु—ठीक है,

बनियाँ से बिरवा लगैं खोले सौदा फूल।
मधुप सिपाही फिरत हैं लेत सुरस महसूल॥

मैत्रे—देखिये यह पत्थर की चौकी धोई नहीं गई तो भी कैसी अच्छी लगती है। आइये आइये इसी पर बैठें।

चारु—(बैठ कर) भाई, बर्द्धमानक ने बड़ी बेर लगाई।

मैत्रे—भाई हमने तो बर्द्धमानक से कह दिया था कि बसंतसेना को लेकर फुरती से आ जाना।

चारु—तो क्या करने लगा?

आगे रथ कोउ चलत मंद सो राह न पावत।
टूटि गई कै रास बहल कै टुटी घुमावत॥
परो राह में काठ देखि औरहि मग आवत।
धीरे हाँकत बैल? आपही मन्द चलावत?

(बहली लिये बर्द्धमानक आता है)

बर्द्ध—चल रे बैल।

आर्य—(आपही आप)

जहाँ सिपाही लखि परैं डरबस जाँहु सुखाय।
पायन में बेड़ी परी दुःख सन सकौं पराय॥

अनजाने मैं जात हौं चढ़ि सज्जन के यान।
बैठा कौआ झोंझ में कोयलबाज समान॥

अरे, नगर से तो दूर निकल आया अब बहली से उतर के पेड़ों के घने कुँज में घुस जाऊँ या बहली के मालिक से मिलूँ। कुँज में जाने का काम नहीं, चारुदत्त जी तो शरणागतवत्सल हैं; उन से मिलूँ।

मेरे छुटत दुःख सो देखी।
सुख पैहैं यह सुजन विशेखी॥
राखहुँ यहि गति मैं निज देहा।
ताके गुनबस नहि सन्देहा॥

बर्द्ध—यही है बाग, (चल कर) मैत्रेय जी!

मैत्रे—अजी बर्द्धमानक पुकार रहा है, बसन्तसेना आ गई।

चारु—बड़ी बात हुई।

मैत्रे—क्यों वे क्या करता रहा?

बर्द्ध—मैत्रेय जी! खफा न हो, गद्दी भूल गया था उसीके लिये रथ लौटा ले गया था; इसी फेरा फेरी में देर हो गई।

चारु—अच्छा रथ फेर। भाई मैत्रेय जी! बसंतसेना को उतार लो।

मैत्रे—अजी, क्या उसके पाँव में बेड़ियाँ पड़ी हैं जो आप नहीं उतरती? (उठ कर परदा उठा कर)।

अजी, यहां तो बसन्तसेना नहीं बसन्तसेन बैठा है।

चारु—भाई, हँसी का अवसर नहीं जानते? जब किसी के मिलने को जी चाहता है तो बेर बुरी लगती है; हम उतार लेंगे। (उठता है)।

आर्य—(देख कर) बहली का मालिक यही है। जैसा गुन सुनते थे वैसाही रूप भी है। अब मैं बच गया।

चारु—(बहली पर चढ़ कर देख कर) अरे, यह कौन हैं?

मृगपति के से कंध, सुंड से दोउ भुज धारै।
छाती चैाड़ी लाल दृगन सों चकित निहारै॥

जासु रूप अनुभाव परैं लखि अद्भुत ऐसे।
बेड़ी ताके एक पाँयँ डारी किन कैसे?

आप कौन हैं?

आर्य—मैं आर्यक अहीर हूँ आपकी शरण आया हूँ।

चारु—जी वही जिन्हें राजा पालक ने घोसीपुरे से पकड़वा के बांध रक्खा था?

आर्य—जी हां।

चारु—आये सौंह सँयोग बस तुम चढ़ि मेरे थान।
शरणागत तजिहौं नहीं जायँ मेरे बरु प्रान॥

(आर्यक हर्ष जनाता है)

चारु—बर्द्धमानक! बेड़ी उतार तो।

बर्द्ध—बहुत अच्छा। (बेड़ी उतार कर) जी, बेड़ी उतार दी।

आर्य—आपने स्नेह की कड़ा बेड़ी पहना दी।

मैत्रेय—यह तो छूटे। अब हम भागें।

चारु—चुप!

आर्य—चरुदत्त जो मैं आपकी भलमंसी सुन कर बहली पर चढ़ा था।

चारु—आपने बड़ी कृपा की।

आर्य—अब आज्ञा दीजिये तो जाऊँ।

चारु—जाइये।

आर्य—तो उतरता हूँ।

चारु—जी उतरिये न, आप की बेड़ी अभी कटी है इससे आप से भागा न जायगा इधर से बहुत लोग आते जाते हैं बहली में किसी को खटका न होगा बहली ही पर जाइये।

आर्य—जो आप की इच्छा।

चारु—मिलिये सुख सों हितन सों,

आर्य— तुम सम हित को तात।

चारु—मेरी हू सुधि राखियो

आर्य— भूल निजहु कोउ जात ?

चारु—चलत बचावैं सुर तुम्हैं,

आर्य— तुम मोहिं लोन बचाय।

चारु—अपनी भागन से बचे

आर्य— तुमहीं रहे सहाय ॥

चारु—तो जब तक राजा बहुत से सिपाही न दौड़ावें आप निकल जाइए।

आर्य—बहुत अच्छा ; ईश्वर चाहेगा तो फिर मिलेंगे।

(बहली पर बाहर जाता है)

चारु—पठै कोन अपराध मैं बागी निज रथ माहिं।
उचित हमैं ठहरन इहाँ अब एकहु छिन नाहिं ॥
बेगि पुराने कूप में बेड़ी देहु बहाय।
भेदिन सो चहुँओर की खबरि लेत नित राय ॥

(बाईं आँख का फड़कना जना कर) मैत्रेय ! वसन्तसेना के मिलने को जी बहुत घबड़ा रहा है।

प्रानप्रिया देखे बिना यहि छन हियो सकात।
फरकति बाईं आँखिहू असगुन बुरो लखात ॥

चलो चलैं (चल कर) अरे ! सामने ही सन्यासी का असगुन देख पड़ा। (सोच कर) अच्छा, यह इधर से आता है, हम इधर से चलैं।

(दोनों बाहर जाते हैं)

आठवाँ अंक

(स्थान—पुष्पकरंड बाग में दूसरी जगह)

(हाथ में भीगा कपड़ा लिए एक बौद्धसन्यासी आता है)

बौद्धसन्यासी—(गाता है)

मूढ़ धर्म संचय महँ लागो ॥

केवल करत पेट की चिंता ताहि वेगि अब त्यागो ॥
ध्यान नगाड़ा निज बजाय मन नित निसि बासर जागो।
धर्म बटोरि धरयो तेहि इन्द्रिय चोर जात लिये भागो ॥
साधो ! तेइ स्वर्ग अधिकारी ।
तेई सिद्ध तेइ धर्मधुरंधर तेइ नेमव्रतधारी ॥
इन्द्रिय नाम पाँचजन मारे हनी अविद्या नारी ।
पापपुरुष चंडालहि मारयो करी गाँव रखवारी ॥
तू क्यों ऐसो रूप बनावत !
सिर मुड़ाय कनपटी छिलावत दाढ़ी मोछ मुड़ावत ॥
जौलौं कूड़ा भरो चित्त में व्यर्थहि मुँह दिखरावत।
पाप छोड़ि चित विमल करत जो सोई शुद्ध कहावत ॥

गेरुआ बस्त्र तो ले लिया, अब राजा के साले के बाग़ में पोखरी में फींच कर निकल जाऊँ। (कुछ चलता है)

(परदे के पीछे) खड़ा रह बे योगी खड़ा रह !

सन्यासी—अरे बाप रे बाप ! यह तो राजा का साला संस्थानक आ रहा है । एक सन्यासी ने अपराध किया, अब जहाँ सन्यासी देखता है उसे बैल सा नाथ के बाहर निकाल देता है। अब कहाँ जाऊँ। अब बुद्ध जी महाराज को सरन हूँ ।

(विट के साथ संस्थानक आता है)

संस्था—खड़ा रह बे सन्यासी खड़ा रह ! हम बाजार में मूली की नाई तेरा सिर तोड़ेंगे । (मारता है)

विट—क्यों मारते हो विचारे के ? बेचारा संसार से बिरक्त होकर सन्यासी हो गया है। जाने दीजिये, आइये फुलवारी की सैर करैं ।

नहिं जिनके घरबार तऊ जो इहँ चलि आवैं ।
इन रूखन की छाँह बैठि घर के सुख पावैं ॥
बिन प्रबन्ध यह बाग दुष्ट के हृदय समाना ।
नये राज सम लगै भोगिबे को सुख नाना ॥

संस्था—भला हो उपासक जी प्रसन्न रहिए !

संस्था—देखिये, हमै गाली देता है।

विट—क्या कहता है ?

संस्था—अजी, हमें उपासक कहता है, क्या हम नाई हैं ?

विट—नहीं आप को बुद्ध का उपासक कहता है; आप की बड़ाई करता है।

संस्था—सुन बे जोगी, सुन !

सन्या—आप धन्य हैं ! आप पुन्य हैं।

संस्था—देखिये हमें धन्य पुन्य कहता है।

विट—अजी, तुम्हें धन्य पुन्य कहके तुम्हारा बखान करता है।

संस्था—तो यह यहाँ क्यों आया ?

सन्या—यही धाती फींचने।

संस्था—अबे पाजी जोगी यह बाग सब बागों में अच्छा बाग हमारे बहनोई ने दिया है, यहाँ कुत्ते और स्यार पानी पीते हैं ! हम ऐसे बीर बड़े आदमी इसमें नहाते भी नहीं और तू पुरानी हांडी के रंग की मैली धोती इसमें धोता है, तुझे एक ही बार में नरक पहुँचाते हैं।

विट—संस्थानक जी, जान पड़ता है अभी थोड़े ही दिन का यह जोगी है।

संस्था—तुम ने कैसे जाना ?

विट—

मुँड़ मुँड़ाए से आजुही कालिहकै नाहिं गई खोपरी उजराई।
थोरेहि काल से डारत काँध पै अंचल का नहिं दाग लखाई।
अंचल बाँधत नाँहि बनै ढकि लीन्ही है देह सबै लपटाई।
काँधे नहीं ठहरै लखु वस्त्र धरै तेहि बारहिं बार उठाई॥

सन्या—उपासक जी मैं अभी जोगी हुआ हूँ !

संस्था—अबे तू जनम से क्यों नहीं जोगी हुआ ? (मारता है)

सन्या—जय बुद्धजी की !

विट—अजी इस बिचारे को क्यों मारते हो ? छोड़ दो, जाने दो।

संस्था—अच्छा ठहर, हम सलाह कर लें।

विट—किस से ?

संस्था—अपने मन से।

विट—अच्छा खड़ा है।

संस्था—बेटे मन ! राजा मन ! यह सन्यासी जाय कि ठहरै ? (आपही आप) न ठहरै न सांस ले। (प्रकाश) अजी हमने अपने मन से पूँछ लिया, हमारा मन यह कहता है—

विट—क्या कहता है ?

संस्था—न जाइ न ठहरै ; न ऊपर की सांस ले न नीचे की, यहीं पड़के मरे।

सन्या—जय बुद्ध जी की ! तुम्हारी सरन !

विट—जाने दीजिये।

संस्था—अच्छा एक काम करके।

विट—कौन काम ?

संस्था—पुखरी का कीचड़ फेंक दे, पानी मैला न होने पावे। पानी बटोर के कीचड़ फेंकदे।

विट—ऐसे भी मूर्ख संसार में होते हैं !

उलटे ही समझैं सदा पाथरखंडप्रकार।
मूरख तरु से मांस के बढ़वत धरतीभार॥

सन्या—(हाथ से शाप देता है)

संस्था—क्या कहता है ?

विट—आपके गुन बखानता है।

संस्था—सुन बे सुन ! (सन्यासी बाहर जाता है)

विट—देखिये बाग की शोभा देखिये,

सोहैं तरवर बाग में धरि फलफूल अथोर।
लपटानी गाढ़ी लता जिनके चारहुँ ओर॥
लागत आपति से बचे अच्छे नृप के राज।
सुख भोगत नारिनसहित मानहु पैार समाज॥

संस्था—आप ठीक कहते हैं,

रंग रंग के फूल सजी सोहै यह धरती।
फूल भार सों डार गिरीसी मानहुँ परती॥
तरुफुनगी सों बेल लखौ नीचे को लटकैं।
कटहल के फल सरिस तरुन पै बनार मटकैं॥

विट—आइये इस पत्थर की चौकी पर बैठें।

संस्था—बैठिये। (विट के साथ बैठ जाता है) अजी, हम आज भी बसंतसेना को सोच रहे हैं। बुरे की बात ऐसी हमारे मन से निकलती नहीं।

विट—(आपही आप) इतना झिड़का गया और अब भी नहीं भूलता।

पाय अनादर तियन सों नीच-काम बढ़ि जात।
सज्जन मन नहि होय कै होय थोरही बात॥

संस्था—अजी, हमने स्थावरक से कभी कहा था कि बहली ले कर आ, अभी तक नहीं आया। हमें बड़ी भूख लगी है, दुपहर हो गई, पैदल भी नहीं चला जायगा, देखिये, देखिये,

बिगड़े बानर सरिस रबि नभ मैं लखो न जाय।
जरी जाति महि सुत मरे ज्यों दुरयोधनमाय॥

विट—ठीक है।

मुख से गिरावत घास बैठे छाँह पसु औंघात है।
बनहरिन प्यासे नीर ताता पियत नहीं अघात है॥
पुरराह में कोऊ चलत नहिं भइ धूप अब ऐसी कड़ी।
तजि जरत धरती छाँह में कहुँ है अवसि बहली खड़ी॥

संस्था—सूरज की किरनैं पड़ीं, मेरे सिर यह आय।
पंछी चिड़ियाँ पेड़ की डारन रहीं लुकाय॥
घुस बैठे घर माँहिं सब देखि कठिन यह घाम।
व्याकुल हाँफत हैं सकल कोउ बिधि बितवत याम॥

अजी, अभी तक लौंडा नहीं आया! अच्छा तो जी बहलाने के लिए कुछ गाऊँ (गाता है) सुना आपने, जो मैंने गाया।

विट—क्या कहना है, आप गंधर्व हैं!

संस्था—गंधर्व न हूँ तो फिर क्या हूँ ?

बच औ हींग समेत, मोथा जीरा सोंठ गुड़।
सेयों तौ केहि हेत, होत सुरीले हम नहीं॥

अजी लौंडा अब भी नहीं आया ?

विट—घबराइये न, आता होगा।

(बहली लिये स्थावरक आता है)

स्था—मैं बहुत डरता हूँ, दुपहर हो गई, राजा के साले बहुत खफा होंगे। जल्दी चल ! जल्दी !

बसंत—हाय, हाय, यह तो बर्द्धमानक की बोली नहीं है। यह क्या बात है ? क्या चारुदत्त जी ने बहली के बैलों की रपट बचाने की किसी और की बहली भेज दी है ? मेरी दाहिनी आँख फड़क रही है, कुछ अच्छा नहीं लगता।

संस्था—(रथ की घड़घड़ाहट सुन कर) अजी बहली आ गई।

विट—आपने कैसे जाना ?

संस्था—आप देखते नहीं बूढ़े सुअर को नाई घुरघुरा रही है।

विट—(देख कर) जी हां वह आई।

संस्था—बेटा स्थावरक आ गए !

स्था—जी हां।

संस्था—बहली भी आई ?

स्था—जी हां।

संस्था—बैल भी आये ?

स्था—जी हां।

संस्था—तुम भी आये ?

स्था—हाँ सरकार हम भी आये।

संस्था—अच्छा बहली भीतर ले आ।

स्था—किधर से ?

संस्था—जिधर दीवार गिरी है।

स्था—सरकार बैल मर जायँगे, बहली टूट जायगी, मैं भी मर जाऊँगा।

संस्था—अबे, हम राजा के साले हैं, बैल मरेंगे और ले लेंगे। बहली टूटेगी और बनवालेंगे, तू मरेगा और रथवान रख लेंगे।

स्था—सब हो जायगा मैं ही न रहूँगा।

संस्था—अबे सब नस जाय। जिधर दीवार गिरी है उधर ही से ले आ।

स्था—टूट री बहला, मेरो रे बैलो; गोसइयाँ भी तुम्हारा मरै। और बहलो आजायगी। अच्छा तो कइ दूँ (घुस कर) अरे नहीं टूटी! सरकार बहली आ गई।

संस्था—अबे, न बैल टूटे न रस्सी मरी न तू मरा?

स्था—नहीं सरकार।

संस्था—आइए बहली देखैं, नहीं आप ही देखैं आप बड़े गुरु हैं, आप का आदर है, आप आगे चलिये, आप पहिले सवार हूजिए।

विट—बहुत अच्छा (चढ़ना चाहता है)।

संस्था—ठहरो, ठहरो तुम्हारे बाप की बहली है जो आगे चढ़ोगे। बहली हमारी है, हम पहले चढ़ेंगे।

विट—आप ही ने तो कहा था।

संस्था—जो हम कहैं भी तो तुम्हें यह कहना चाहिये कि सरकार आप सवार हों।

विट—आप सवार हों।

संस्था—अच्छा हम सवार होते हैं। बेटे स्थावरक! बहली घुमाओ।

स्था—(घुमा कर) सरकार सवार हो जायँ।

संस्था—(बहली पर सवार होना चाहता है, वसंतसेना को देख डरता हुआ उतर कर विट के गले लग जाता

है) अजी बहली में राक्षसी है या चोर। जो राक्षसी है ते हम दोनों को मूस ले जायगी और जो चोर है तो दोनों को खा जायगी।

विट—डरिये न, डरिये न, बैलों की सवारी में राक्षसी कहाँ से आयेगी ? दुपहर की धूप में हम लोगों की आँख चौंधिया गई है। कहीं स्थावरक की परछाईं से न डर गये हो ?

संस्था—बेटे स्थावरक जीते हो ?

स्था—जी हाँ।

संस्था—देखिये बहली में एक लुगाई है, देखिये तो कौन है।

विट—अरे लुगाई कहाँ से आई !

भागीं बेगहि सीस झुकाई।
बरसत मेह बैल की नाईं॥

बसंत—(डरती हुई आपही आप) अरी मेरी आँखों का काँटा राजा का साला यहाँ बैठा है ! हाय अब क्या करूँ ! मुझ अभागिनी का यहाँ आना ऊसर में बीज की नाईं अकारथ गया। अब क्या करूँ ?

संस्था—यह लौंडा बड़ा डरपोक है। बहली नहीं देखता आप देख लीजिए।

विट—बहुत अच्छा।

संस्था—अरे, अरे, सिआर उड़ते हैं, कौए भागते हैं ; जब विट जी आँखों से खायँ, दाँतों से देखें तब तक हम भाग खड़े हों।

वि—(बसंतसेना को देख कर दुःख से आप ही आप) अरे हरनी बाघ के पीछे दौड़ रही है ! हाय, हाय,

शरदचन्द के सम सुभग करत सरोवर बास।
हँसी त्यागि मराल सोइ आई बायस पास॥

(अलग बसंतसेना से) बसंतसेना ! यह तुमने क्या किया ?
पहिले मान जनाय फिर लालच कै माय बस ?

बसंत—न। (सिर हिलाती है)

विट—मिली आपही आय, यही नीच पातुरपना ॥
हमने तुमसे पहिलो ही कहा था।
नीको लगै कि ना लगै मिलु गनि सबहि समान ॥

बसंत—बहली के धोखे से यहाँ आ गई, आप की सरन हूँ।

बिट—डरो नहीं हम देखो इसे धोखा देते हैं (संस्थानक के पास जाता है) अजी, इसमें सचमुच राक्षसी है।

संस्था—राक्षसी है तो तुम्हें क्यों नहीं मूसा और चोर है तो तुम्हें क्यों नहीं खा गया।

विट—क्या कीजियेगा जान के ? यहाँ से नगर तक वागही है पैदलही चले चलैं तो क्या बुरा।

संस्था—तो क्या होगा ?

विट—थोड़ा सा व्यायाम हो जायगा, बैलों की मेहनत बच जायगी।

संस्था—अच्छा स्थावरक ! बहली लेजा। नहीं, नहीं हम देवताओं बाम्हनों के आगे पांव पांव चलैंगे। नहीं, नहीं बहली पर जांयगे जिससे लोग दूर ही से देख कर कहैं कि राजा के साले जा रहे हैं।

विट—(आपही आप) इस विष की औषधि बड़ी कठिन है, अच्छा तो यों कहैं (प्रकाश) अजी बसन्तसेना आप से मिलने आई है।

बसन्त—(कान पर हाथ धर के) राम, राम, यह आप क्या कहते हैं।

संस्था—(हर्ष से) अजी हम से, ऐसे बली पुरुष बासुदेव से ?

विट—जी हाँ।

संस्था—तब तो बड़ी लक्ष्मी मिल गई। उस दिन मुझसे रूस गई थी अब आज पाँव पड़ के मनाऊँ।

विट—ठीक कहा।

संस्था—अच्छा अब हम पांव पड़ते हैं (बसन्तसेना के पास जा कर) अम्मा, मैआ हमारी बिनती सुनो, मान जाओ।

दसहू नहँ मिलाय कर जोरे।
सुन्दरि परौं चरन मैं तोरे॥
कीन्ह कामबस जो कछु दोषा।
छमिय दास मैं, करौ न रोषा॥

बसन्त—(क्रोध से) दुर हो, मुँह बन्द कर। (लात मारती है)

संस्था—चूम्यो जेहि नित मात, देवहु सौंह नवै न जो।
मारी तेहि सिर लात, मुर्दे को गीदड़ सरिस॥

अरे स्थावरक! लौंडे! तुझे यह कहाँ मिली?

संस्था—सरकार! राह में गांव की गाड़ियाँ खड़ी थीं, मैं अपनी बहली चारुदत्त की फुलवाड़ी के आगे खड़ी करके उतरा और गाड़ी का पहिया हटाने लगा तभी यह अपनी बहली के धोखे में इस पर चढ़ी होगी।

संस्था—अरे बहली के धोखे से आई है, मुझ से मिलने नहीं। उतर, उतर हमारी बहली से; दरिद्र चौधरी के लड़के के पास जाती है और हमारे बैल थकाती है! उतर, उतर।

बसंत—मैं चारुदत्त जी से मिलने को जाती थी यह बात सच है, मेरी कितनी बड़ाई हुई, अब तो जो होना हो सो हो।

संस्था— दसनह कमल सरिस जो धारै।
करै प्यार औ थप्पड़ मारै॥
सोई हाथ खींचैं तोहि ऐसे।
तारहि गिद्ध केश धरि जैसे॥

विट— गुनधारी तरुनीन के केश न पकरे जात।
नहि उपवन की बेलके तोरत है कोउ पात॥

आप ठहरिये, हम वसन्तसेना को उतारे लेते हैं।

(वसंतसेना उत्तर कर एक ओर खड़ी हो जाती है)

संस्था—(आप ही आप) इसने उस दिन मेरी बात न मान कर जो जलाया, आज लात मार कर और भी आग लगा दी, तो अब इसे मार ही डालूँ ; अच्छा अब यह करूँ (प्रकाश) अजी विट जी,

झालरवारी चादर झीनी।
सौ डोरे से रचि रचि बीनी॥
चहौ जो लेन खान पुनि मास।
पेट भरा औ हिए हुलास॥

विट—तो क्या करैं ?

संस्था—हमारे मन की बात करो।

विट—करैंगे, पर अकाज हमसे न होगा।

संस्था—अजी, अकाज की गंध भी नहीं है राक्षसी कहीं नहीं है।

विट—तो कहिए।

संस्था—वसन्तसेना को मार डालो।

विट—(कानों पर हाथ धर कर)

बाला है यह नारि अहै सोभा निज पुर की।
शील सुभाव न चाल जासु एकहु पातुर की॥
जो यहि बिन अपराध कछुक मैं यहि छन मारा।
जैहौं मैं केहि तरनि पापसागर के पारा॥

संस्था—अजी, हम तुम्हें एक डोंगा देंगे और इस सूने बाग में मारोगे तो तुम्हें कौन देखैगा।

विट—वनदेवी मोहि लखैं दिशा देखत मोहि सारी।
लखै चंद और सूर्य तपत जो किरन पसारी॥
अंतःकरन बयारि भूमि और धर्म अकासा।
साखी से नित पाप पुन्य सब लखैं प्रकासा॥

संस्था—अच्छा कपड़े की ओट में मारो।

विट—पागल तो नहीं हो गये हो ?

संस्था—यह बुड्ढा तो अधरम को डरता है, अच्छा स्थावरक से कहूँ। बेटे स्थावरक ! हम तुम्हें सोने के कड़े बनवा देंगे।

स्था—मैं पहन लूँगा।

संस्था—हम तुम्हें सोने की चौकी बनवा देंगे।

स्था—मैं उस पर बैठूँगा।

संस्था—जो भोजन खाने से बचैगा सब तुझी को देंगे।

स्था—मैं सब खा जाऊँगा।

संस्था—सब चेलों का चौधरी कर देंगे।

स्था—मैं भी हो जाऊँगा।

संस्था—अच्छा तो हमारी बात मानो।

स्था—सरकार सब कुछ करूँगा, अकाज न करूँगा।

संस्था—अकाज की गंध भी नहीं है।

स्था—तो कहिये।

संस्था—बसन्तसेना को मार डाल।

स्था—सरकार क्षमा करो, मेरेही गधेपन से यह बेचारी यहां आई है।

संस्था—अरे लौंडे ! तू भी हमारे कहने में नहीं है !

स्था—सरकार मेरे हाथ पैर के मालिक हैं, पाप पुन्य के नहीं। क्षमा कीजिये, मैं बहुत डरता हूँ।

संस्था—अबे, हमारा नौकर होकर किस को डरता है।

स्था—सरकार परलोक को।

संस्था—कौन है परलोक।

स्था—सरकार भले बुरे कामों का फल।

संस्था—भले कामों का फल कैसा होता है ?

स्था—जैसे आप हैं सोने से लसे।

संस्था—और बुरे काम का कैसा होता है ?

स्था—जैसे मैं और का दिया खाता हूँ। मैं अकाज न करूँगा।

संस्था—अबे न करैगा ? (स्थावरक को पीटता है) ।

स्था—सरकार मारिये चाहै पीटिये, अकाज न करूँगा ।

कर्मन को फल पाय भयों जन्म को दास मैं ।
अब सोइ पाप बढ़ाय मोल न लेहौं गति बुरी ॥

बसन्त—विट, जी तुम्हारी सरन हूँ ।

विट—अजी क्षमा कीजिये, वाह स्थावरक वाह !

यद्यपि दरिद्र दास यह अहई ।
पुराय पाप यह सोचत रहई ॥
धनी कुलीन यही कर स्वामी ।
गनै न कछुक कुमारगगामी ॥
ऐसे कर्म आगि किन लागत ।
बढ़ै अयोग योग जो त्यागत ॥
और का यह विषम दैव मन भावा ।
तुमहि स्वामि यदि दास बनावा ॥
यह न खात जो धान तुम्हारा ।
तुम पर करै न यह अधिकारा ॥

संस्था—(आपही आप) यह बुड्ढा तो अधरम से डरता है और लौंडा परलोक से ; हम ठहरे राजा के साले, हमैं किस का डर है ? (प्रकाश) अबे लौंडे जा तू कहीं अलग आड़ में बैठ ।

स्था—जो आज्ञा (बसन्तसेना से) बाई जी, मैं अब क्या करूँ ? (बाहर जाता है)

संस्था—(फेंट बाँधता हुआ) खड़ी रह बसन्तसेनियाँ, अभी तुझे मारता हूँ ।

विट—अरे, तुम मेरे आगे मारोगे ? (गला पकड़ लेता है)

संस्था—(गिर पड़ता है) अरे विट अपने मालिक को मारे डालता है ! (बेसुध हो जाता है, फिर आँख खोल कर)

घी औ मांस खिलाय हम पोखन कीन्ह तुम्हार ।
काम परे तुमही भये बैरी आज हमार ॥

(सोच कर) अच्छा, अब मैं दूसरा उपाय करूँ। इस बुड्ढे ने सिर हिला कर बसन्तसेना से कुछ कहा है अब इस को हटा कर बसन्तसेना को मारूँ। (प्रकाश) अजी आप क्या कहते हैं! हम इतने बड़े कुल के जन्मे ऐसा अकाज करैंगे! यह तो हमने इस लिये कहा था जिस में यह मान जाय।

विट— ऊँचे कुल से होय क्या शील बड़ाई देत।
बाढ़ैं उपजत हैं घने काटे अच्छे खेत॥

संस्था—अजी, यह तुम्हारे सामने लजाती है, तुम चले जाओ। इस लौंडे को हमने अभी कहा था कि अलग जा, ऐसा न हो भाग जाय, उसे पकड़ लाइये।

विट—(आपही आप)

नहिं पातुर मूरख पहं जाती।
मो कहं सौंह देखि सकुचाती॥
करौ एकंत दूर मैं जाई।
रतिरस बढ़त अकेलहि पाई॥

(प्रकाश) अब जाता हूँ।

बसन्त—(उसका आँचल पकड़ कर) मैं तो आपही की सरन हूँ।

विट—बसन्तसेना! डरिये नहीं। सँस्थानक जी! बसन्तसेना हम आपको सौंपे जाते हैं।

संस्था—हाँ, यह हमारे हाथ में थाती है।

विट—सच?

संस्था—हाँ सच।

विट—(कुछ दूर चल कर) अजी, ऐसा न हो हमारे चले जाने पर यह पाजी इसे मार डाले, लाओ आड़ में होकर देखैं यह क्या करता है। (आड़ में खड़ा हो जाता है)

संस्था—अब इसे मारूँ। ऐसा तो न हो यह कपटी बुड्ढा बाम्हन आड़ में होकर स्यार ऐसा गड़बड़ करै, तो, इसे

धोखा देने के लिए अब यह करूँ (फूल चुन कर बसन्तसेना से) आओ बसन्तसेना !

विट—अरे, अब तो इस का मन कुछ और हो गया। अब ठहरने का कुछ काम नहीं। (बाहर जाता है)

संस्था—धन देहौं करिहौं तोहि प्यार।
छुइ हौं सिर से चरन तुम्हार॥
तऊ मोंहि तुम जात बिहाई।
सेवक सन इतनी निठुराई ?

बसन्त—(आपही आप) इसमें क्या कहना है (सिर नीचा कर के)

नीच दुष्ट मैं जानति तोही।
क्यों धन लोभ दिखावत मोही॥
शुद्धचरित सुन्दर सब अङ्गा।
कमल तजै नहिं कबहुँक भृङ्गा॥

निर्धन हूँ कुलशीलयुत सेइय जतन समेत।
जन सुयोग सँग नेह करि पातुर जग जस लेत॥

और आम के पास रह कर अब ढाँख के पास कैसे रहूँ ?

संस्था—हरामजादी ! दरिद्र चारुदत्त को आम बताती है और मुझे ढाँख कहती है ! टेसू भी नहीं ! तू हम को गाली देने में भी चारुदत्त का नाम नहीं भूलती।

बसन्त—जो मन में बसा है वह कैसे भूलेगा ?

संस्था—आज तुझे और तेरे मन में रहनेवाले दोनों को मारता हूँ। दरिद्र चौधरी की चाहनेवाली, खड़ी रह।

बसन्त—कह फिर कह, मैं इस में अपनी बड़ाई समझती हूँ।

संस्था—अब लौंडी का बच्चा चारुदत्त तुझे बचाये।

बसन्त—देखते तो बचाते।

संस्था— कै वह द्रोपदपूत जटाऊ।
चानक कै रंभासुत राऊ॥

धुंधमार त्रिशंकु वह होई।
इन्द्र बालिसुत कै है सोई॥

और यह भी क्या देखेंगे?

भारत में सीता हनी जैसे चानकराज।
द्रुपदी हनी जटाउ ज्यों मारौं तोकहँ आज॥

(मारता है)

बसन्त—हाय! अम्मा कहाँ हो! हाय चारुदत्त जी! मेरे मन की आस मनही में रही। अब मैं मारी जा रही हूँ। अब जोर से चिल्लाऊँ। नहीं, नहीं बसन्तसेना को चिल्लाना बड़े लाज की बात है। चारुदत्त जी को प्रणाम!

संस्था—अब भी हरामजादी उसी पाजी का नाम लेती है (गला घोंट कर) मर हरामजादी।

बसन्त—जै चारुदत्त जी की!

संस्था—मर हरामजादी (उसका गला घोंट कर मार डालता है, बसन्तसेना गिर पड़ती है) (फिर हर्ष से)

यह दोष की मटकी सरिस अरु नीचपन की कोठरी।
तेहि रमन के हित काल के बस इहाँ आई यहि घरी॥
कैसे बखानों सूरता यह निज प्रचंड भुजान की।
यह मरिगई बिन साँस भारत माहिं जैसे जानकी॥
मैं चहत, यह मोहि चहति नहिं, यहि हेत यह मारी गई।
गर घोंटि सूने बाग में डरवाय फटकारी गई॥
जीवन अकारथ माय मोरी द्रोपदी को, बापको।
जो लख्यो नाहीं पुत्र के निज प्रबल तेज प्रताप को॥

वह डोकरा आता होगा (अलग हटकर खड़ा हो जाता है)

(स्थावरक के साथ विट आता है)

विट—स्थावरक को तो बुला लाया, अब संस्थानक को ढूढूं। अरे, राह में पैरों के चिन्ह से जान पड़ता है कि इसने स्त्री को मार डाला। अरे पापी! तूने ऐसा अकाज क्यों

किया ? तुम्ह पापी के देखने से हम लोगों को भी पाप लगेगा। कदाचित् जिस बात की मुझे शङ्का हो रही है वह झूठी निकले। भगवान सब कुशल करें। (संस्थानक के पास जाकर) हम स्थावरक को बुला लाये।

संस्था—विटजी आप भले आये। बेटे स्थावरक, तुमभी भले आए।

स्था—जी हाँ।

विट—हमारी थाती दो।

संस्था—कैसी थाती ?

विट—बसन्तसेना।

संस्था—गई।

विट—कहाँ गई।

संस्था—आप के पीछे ही तो।

विट—(शंका से) उधर तो नहीं गई।

संस्था—तुम किधर गये थे।

विट—पूरब।

संस्था—वह तो दक्खिन गई।

विट—हम भी तो दक्खिन गये थे।

संस्था—अजी वह उत्तर गई।

विट—तुम ठीक ठीक नहीं बतलाते, हमारे मन में बड़ी शंका होती है।

संस्था—तुम्हारे सिर अपने पैर की सौंह हमने उसे मार डाला।

विट—(दुख से) क्या सचमुच तुमने उसे मारही डाला ?

संस्था—हमारी बात का विश्वास न हो तो राजा के साले संस्थानक की बहादुरी देख लो।

विट—हाय, हाय! बड़ा अनर्थ हुआ (बेसुध होकर गिर पड़ता है)।

संस्था—अरे! विट जी बेसुध हो गये! उठिये उठिये।

स्था—हाय मैंने बिना देखे सुने बहली में लाके उन्हें पहले ही मार डाला था।

विट—(साँस लेकर करुणा से)

शील सनेह की नीर भरी सरि सी रति आनही देस सिधारी।
हा ! अति सुन्दरि भूषनहूँ को दई जिन शोभा स्वदेह में धारी॥
शील स्वभाव की मानो नदी, हमसे जनकी तुम पालनहारी।
रूप को सौदा भरी उजरी यह हाय ! मनोज की आज बजारी।

(आँखों में आंसू भर) के हाय !

हे पापी तैं काह बिचारा।
तैं पुरश्रियहि दोष बिन मारा॥

(आपही आप) अरे ऐसा न हो यह पाजी यह पाप मेरे सिर ठोंके तो अब यहाँ से चल दूँ। (चलना चाहता है, संस्थानक उसे पकड़ लेता है)

विट—दूर हो, हमैं मत छुओ हम जाते हैं।

संस्था—अरे, बसन्तसेना को मारके कहाँ भागे जाते हो ? हम ऐसे अनाथ हो गये।

विट—सिड़ी हुआ है ?

संस्था—सौ रुपये तोहि देइहौं अन्न वस्त्र के साथ।
ठोंको यह अपराध तुम और कोऊ के माथ॥

विट—दूर हो, तू अपने ही पास रख।

स्था—राम राम !

संस्था—(हँसता है)

विट—हँसु जनि, छूटै आज से संग हमार तुम्हार।
धिक है ऐसी प्रीति को जेहि थूकै संसार॥
होय न फिरि यहि जनम में कबहुँ तुम्हारो संग।
त्यागत टुटी कमान सम तुमहि होत गुनभंग॥

संस्था—अरे आओ आओ इस पुखरी में हम तुम खेलैं।

विट—रहे पतित जौलौं नहीं, तौलों सेवत तोहि।

जान्यो पुरजन पतित सम नीच सरिस नित मोहि ॥
तैं मारी तिय मैं रहौं कैसे तेरे संग ।
आधे दृग तोहि तिय लखैं डर बस काँपत अंग ॥

(करुणा से) वसन्तसेना !

पातुरकुल जनि होय फिरि सुन्दरि जन्म तुम्हार ।
जन्मौ ऊँचे वंश में जाके चरित उदार ॥

संस्था—हमारे बाग में वसंतसेना को मार के कहाँ भागा जाता है ? चल हमारे बहनोई के सामने अपनी जवाब-दिही कर।

विट—दूर हो पाजी (तलवार खींच लेता है)।

संस्था—(डरता हुआ पिछड़ कर) अरे डरता है तो जा।

विट—(आपही आप) यहाँ रहना ठीक नहीं ; जहाँ आर्यक शर्विलक हैं वहीं मैं भी चलूँ ।

(बाहर जाता है)

संस्था—जा भाड़ में जा। अबे लौंडे हमने कैसा काम किया ?

स्था—सरकार बहुत ही बुरा किया।

संस्था—अबे क्या कहता है बुरा किया कि अच्छा (अपने गहने उतार कर) यह ले और इन्हें पहिन, जब हम इन्हें पहनते हैं तभी तुम भी पहनना।

स्था—सरकार, यह गहने आपही के अच्छे लगते हैं, मैं इन्हें लेके क्या करूँ ?

संस्था—अच्छा तो जा बहली ले के महल के आगे ठहर, हम अभी आते हैं।

स्था—बहुत अच्छा।

(बाहर जाता है)

संस्था—विटराम तो अपना ही जी बचाने को भाग गये लौंडे को कोठे पर बंद करूँ नहीं तो चाल खुल जायगी। अब चलूँ । नहीं देख लूँ मर गई कि फिर मारूँ । नहीं इस में साँस नहीं। अच्छा तो दुपट्टे से ढाँक दूँ। अरे नहीं नहीं

इस पर मेरा नाम छपा है कोई पहचान लेगा। अजी सूखी पत्तियों के ढेर में छिपा दूँ। (छिपा कर सोच कर) अभी कचहरी जाके मुकदमा कायम करूँ कि गहनों के लिए चौधरी चारुदत्त ने हमारे पुष्पकरंड बाग में जाके बसन्तसेना को मार डाला।

करौं कपट सोइ नास अब चारुदत्त कर होय।
ऐसे अच्छे नगर में पशुहु न मारै कोय॥

तो अब चलूँ (कुछ चलकर देखकर) अरे! जिधर जाते हैं उधर हो यह पाजी योगी गेरुआ वस्त्र लिये आता है। मैंने इसे बाहर निकाल दिया था, ऐसा न हो मुझे देख के यह सब से कह दे कि इसी ने बसंतसेना को मारा, तो कैसे भागूँ (देखकर) जिधर दीवार गिरी है उधर ही फाँद जाऊँ।

लंका नगरी को चलत फाँदि हनूमतशैल।
जैसे गयो महेन्द्र कपि भूपताल की गैल॥

(बाहर जाता है)

(जल्दी से योगी आता है)

योगी—मैं ने अँचला तो फींच लिया अब इसे सुखाऊँ कहाँ, पेड़ की डाल पर डाल दूँ, ऊँ हूँ इस पर बन्दर हैं, फाड़ डालेंगे। भुईं में पसार दूँ, ऊँ हूँ गर्द बहुत है मैला हो जायगा। कहाँ सुखाऊँ? (देखकर) सूखी पत्तियों का ढेर लगा है इसी पर पसार दूँ (अँचला पसार देता है) जय बुद्ध की! (बैठ जाता है) अच्छा तो अब भजन गाऊँ (गाता है) सच तो यह है कि जब तक उस उपासिका से उरिन न हो जाऊँ जिसने जुआरी के हाथ से दस मोहर देकर मुझे छुड़ाया था तब तक मेरा धर्म कर्म सब व्यर्थ है; मैं तो उस के हाथ बिका सा हूँ (देख कर) अरे! यह पत्तियों के नीचे कौन साँस ले रहा है?

भीजे अँचलानीर से लू के सूखे पात।
पंछी से पानी परे फूलि फूलि उठि जात॥

(बसंतसेना होश में आकर अपना हाथ निकाल देती है)

योगी—अरे, यह तो सोने के गहने पहने स्त्री का हाथ निकला। अरे, दूसरा भी है। हमने तो यह हाथ कहीं देखा है, वही तो है जिसने हमें अभय किया था, अच्छा अब देखें। (पत्ते हटाकर देखता है) वही उपासिका तो है।

(बसंतसेना पानी माँगती है)

योगी—अरे पानी माँगती है, बावली बड़ी दूर है, क्या करूँ, तो यही अँचला इस के मुँह में निचोड़ दूँ।

(बसन्तसेना उठ बैठती है, योगी अपने कपड़े से हवा करता है)

बसन्त—आप कौन हैं।

योगी—उपासिका, भूल गईं? तुमने मुझे दस मोहर देकर मोल लिया था?

बसन्त—आप को मैंने देखा तो है पर जो आप कहते हैं उस की सुधि नहीं, मेरा चित्त ठिकाने नहीं।

योगी—उपासिका, यह क्या हुआ?

बसन्त—पातुर की गति।

योगी—उपासिका, उठो इस डाल को पकड़ लो।

(डाल झुका देता है बसन्तसेना उठ खड़ी होती है)

योगी—इसी मठ में मेरी गुरुबहिन रहती है; चलो वहीं चल कर बैठो; जब जी अच्छा हो जाय तो घर चलना; चलो धीरे धीरे चलो (चलता है) अरे हटो भाई हटो, यह जवान स्त्री है और मैं योगी, इसके साथ हूँ तो भी मेरा धर्म शुद्ध है।

संजम सों निज बस किये कर मुख इन्द्रिय जोइ।
हाकिम ताको क्या करै किये स्वर्ग सिधि सोइ॥

(दोनों बाहर जाते हैं)

नवाँ अंक

[स्थान—कचहरी]

(शोधनक आता है)

शोध—सरकार का हुकुम है कि कचहरी में जल्दी से इजलास ठीक करो ; तो कचहरी चलूँ । (चल कर) यही तो है कचहरी, सब ठीक कर दूँ । सब साफ हो गया तो अब जाकर इत्तिला कर दूँ (घूम कर देख कर) अरे यह पाजी राजा का साला यहीं आ रहा है इसके आगे से हट जाऊँ । (अलग खड़ा हो जाता है)

(उजले कपड़े पहने संस्थानक आता है)

संस्था— पानी जल औ सलिल नहाय ।
बाग बगीचा में बिरमाय ॥
बैठो नारि तियन के संग ।
गंधर्वन से सोहत अंग ॥
गाँठि कबहुँ जूरा कबहुँ कबहुँक छूटे केस ।
हम राजा के सार का रंग रंग का भेस ॥

बहुत दिनों पर मुझे कमल के डंठे के कीड़े की नाईं राह मिली तो अब किस को अपनी चाल से गिराऊँ (सोच कर) हाँ, हाँ, दरिद्री चारुदत्त को गिराना चाहिये । वह ऐसा कंगाल है कि उसको जो कलंक लगाऊँ सब लग जायगा । अच्छा तो कचहरी चल कर लिखाऊँ कि चारुदत्त ने बसन्तसेना को मार डाला । (चल कर देख कर) यही तो है कचहरी (फिर देख कर) इजलास तो सजा है जब तक हाकिम न आ जायँ तब तक इसी दूब पर बैठा रहूँ (बैठ जाता है)

शोध—(आगे देख कर) सरकार आ रहे हैं मैं भी उनके पास चलूँ । (आगे बढ़ता है)

(सेठ और कायथ के बीच में हाकिम आता है)

हाकिम—सेठ जी, लाला जी !

से० का०—जी ।

हाकिम—इंसाफ बिलकुल औरों के बस है और उनके मन का हाल समझना बहुत कठिन है ।

तजि न्याय झूठे दोष औरन नीच लोग लगावहीं ।
पुनि क्रोध बस निज दोष हाकिम सौंह नहीं बतावहीं ॥
दोऊ पच्छसन ह्वै पुष्ट दोष नरेश को लगि जात है ।
यहि कठिन नीतिविचार, निन्दा सुलभ सदा लखात है ॥
तजि न्याय झूठे दोष जन करि कोप कबहुं बतावहीं ।
ह्वै नष्ट सज्जन दोष निज व्यवहार में न जनावहीं ॥
दोउ पच्छदोष समेत तिन कहँ पाप नित लगि जात है ।
यहि कठिन न्याय विचार निन्दा सुलभ सदा लखात है ॥

क्योंकि, हाकिम को

समुझि जाय छल कपट शास्त्र में राखै बोधा ।
हित अनहित सम गनै करै कबहूँ नहिं क्रोधा ॥
बात चीत में चतुर धर्म में धरै लोभ अति ।
देखतही जनचरित देइ उत्तर सोइ दृढ़ मति ॥
दुख देइ सठन, पालै निबल निपुन रहै व्यवहार में ।
नृपकोप नसावै जतन सन लखि सोइ न्यायविचार में ॥

से० का०—आप के गुनों में भी जो दोष बताये तो चाँदनी को अँधेरा कहता है ।

हाकि०—शोधनक, चलो अदालत के कमरे की राह बताओ ।

शो—यही है, आप लोग बिराजें (सब जाकर बैठ जाते हैं)

हा—बाहर जाके पुकारो जिस का कुछ दावा हो तो हाज़िर हो ।

शो—बहुत अच्छा (बाहर जाके) जिस जिस को नालिश फिरियाद करनी हो हाज़िर हो ।

संस्था—(हर्ष से) हाकिम आ गया (अकड़ के चल कर) अजी हम बहादुर वासुदेव राजा के साले हैं हमारा मुक़द्दमा है ।

शो—(घबराहट से) अरे बापरे ! पहले इसी का मुकदमा होगा ! अच्छा आप ठहरिये, हम जाके इत्तिला कर दें (हाकिम के पास जाकर) सरकार ! राजा के साले एक मुकदमा लाये हैं।

हा—अरे, पहले राजा के सालेही का मुकदमा है ? सवेरे जो सूर्यग्रहन लगे तो समझा जाता है कि किसी बड़े भारी भलेमानुस का नास होगा । शोधनक ! वह मुकदमा ही बुरा होगा। जाओ बाहर कह दो कि आज तुम्हारा मुकदमा न होगा।

शो—बहुत अच्छा (संस्थानक के पास जाकर) सरकार कहते हैं कि आज मुकदमा न सुना जायगा।

संस्था—(क्रोध से) हमारा मुकदमा क्यों न सुना जायगा ? न सुना जायगा तो हम अपने बहनोई राजा पालक से कहेंगे, अपनी बहिन से कहेंगे, अपनी माँ से कहेंगे और इस हाकिम को छुड़वा देंगे ! दूसरा हाकिम आयेगा। (बाहर जाना चाहता है)

शो—ठहर जाइये, मैं हाकिम से कह दूँ (हाकिम के पास जाकर) सरकार, राजा के साले यह कहते हैं कि " न सुना जायगा " इत्यादि।

हा—वह गधा सब कुछ कर सकता है, जाओ कह दो कि आप का मुकदमा सुना जायगा।

शो—(संस्थानक के पास जाकर) आइये आप को बुला रहे हैं।

संस्था—पहले कहा कि न सुना जायगा, अब कहता है कि सुना जायगा, हाकिम भी हम से डरता है, जो हम कहेंगे वह उसे मानना पड़ेगा। अच्छा तो चलैं (आगे बढ़ता है) हम लोग अच्छे हैं, आप चाहैं अच्छे रहैं चाहैं न रहैं !

हा—(आप ही आप) वाह, नालिश तो करने आये कैसी बातैं करते हैं। (प्रकाश) आइये बैठिये।

संस्था - अजी, हमारा तो घर है जहाँ हमारा जी चाहैगा वहीं बैठैंगे । (सेठ से) यहाँ बैठैंगे (शोधनक से) नहीं यहाँ बैठैंगे (हाकिम के सिर पर हाथ रख कर) नहीं हम यहाँ बैठैंगे ।

(आसन पर बैठ जाता है)।

हा—आप का मुकद्मा है ?

संस्था—हूँ।

हा—कहिये।

संस्था—कान में कहैंगे ; हम ताड़ के बराबर बड़े कुल के हैं।

पितु हैं राजा के ससुर हम राजा के सार।
पितु के राज दमाद हैं नृप बहनोइ हमार ॥

हा—हम जानते हैं

ऊँचे कुल से होय क्या शील बड़ाई देत।
बाढैं फैलत हैं घने काँटे आछे खेत ॥

आप मुकद्मा कहिये।

संस्था—कहते तो हैं हमारा कुछ कसूर नहीं हमारे बहनोई ने खुश होकर हवा खाने को सब बागों का बाग पुष्पकरंड बाग हम को दिया था, वहाँ हम नित सैर करने सुखाने संवारने बढ़वाने कटवाने जाते हैं, वहाँ हमने संयोग से देखा कि एक लुगाई मरी पड़ी है।

हा—आप ने जाना कौन थी ?

संस्था—हाँ हम सोने के गहनों से लसी नगर की शोभा को कैसे न जानै ? किसी पाजी ने सूने बाग में जाकर धन के कारन गला घोट कर बसन्तसेना को मार डाला, मैंने नहीं (इतना कह कर फुरती से मुँह बन्द कर लेता है)

हा—वाह ! पहरेवालों की बड़ी भूल हुई। (सेठ और कायथ से) यह भी लिख लीजिये "मैंने नहीं" इस पर भी विचार किया जायगा।

कायथ—बहुत अच्छा (लिख कर) लिख लिया।

संस्था—(आप ही आप) अरे बाप रे, अरे जल्दी में मैंने खीर के लड्डू ऐसा अपने को बिगाड़ दिया ! अच्छा यह कहूँ (प्रकाश) अजो हाकिम ! हम ने कहा कि हमने देखा, क्या गड़बड़ करते हो ? (लिखा हुआ पैर के अंगूठे से पोंछ देता है)

हा—आप ने कैसे जाना कि धन के लिए मारी गई ?

संस्था—अजो, हम ने देखा कि गले में कुछ नहीं था और जहाँ जहाँ गहने पहिने जाते हैं वह सब जगहैं खाली थीं।

से० का०—ठीक है।

संस्था—(आपी ही आप) बड़ी बात, मेरे जी में जो आ गया।

हा—दो बातों का बिचार होना चाहिये।

से० का०—क्या क्या ?

हा—एक वाक्य के विचार से दूसरा अर्थ के विचार से। वाक्य का बिचार मुद्दई मुद्दाले से करना चाहिए, अर्थ हम आप विचार लेंगे।

से० का०—अच्छा तो पहिले वसन्तसेना की माँ को बुलाना चाहिये।

हा—ठीक है, शोधनक, जाओ वसन्तसेना की माँ को बुला लाओ ; उससे कह देना कि कुछ घबराने की बात नहीं।

शो—बहुत अच्छा (बाहर जाके पातुर की माँ के साथ आता है) आइये बाई जी।

बुढ़िया—मेरी लड़की अपने यार के घर अपनी जवानी का सुख भोगने गई और यह कहता है चलो तुम्हें हाकिम बुला रहा है, मेरे हाथ पाँव फूले जाते हैं और हिया थरथराता है। चलो भैया हाकिम कहाँ है।

शोध—आइये (दोनों चलते हैं) इजलास यही है, आइये चलिये।

बुढ़ि—(आगे बढ़ कर) आप लोग सुखी रहैं।

हा—आइये, बैठिये। (बुढ़िया बैठ जाती है)

संस्था—(आक्षेप से) आई री कुटनी आई।

हा—आप बसन्तसेना की माँ है ?

बुढ़िया—जी हाँ।

हा—बसन्तसेना इस बेर कहाँ गई ?

बुढ़ि—यार के घर गई।

हा—उसके यार का क्या नाम है ?

बुढ़ि—(आपही आप) हाय, हाय, कैसी बातैं पूछ रहे हैं ? (प्रकाश) ऐसी बातैं और कोई पूछे तो पूँछ ले, हाकिम के पूँछने की नहीं है।

हा—लाज का काम नहीं है मुकदमे में पूँछी जा रही है।

से० का—मुकदमे में पूँछी जा रही है, कुछ दोष नहीं, कहिये।

बुढ़ि—अरे मुकदमा है तो सुनिये, वह जो सार्थवाह विनयदत्त के पोते, सागर दत्त के लड़के चारुदत्त नाम सेठों के चौक में रहते हैं उन्हीं के घर मेरी बेटी गई है।

संस्था—सुना आपने, लिखिये, चारुदत्त के ऊपर मुकदमा है।

से० का०—चारुदत्त अगर उस के यार हुये तो कौन दोष है ?

हा—तो भी चारुदत्त से पूँछना चाहिये।

से० का०—ठीक है।

हा—धनदत्त ! लिखिये बसन्तसेना चारुदत्त जी के घर गई थी। क्या चारुदत्त जी को भी बुलाना पड़ेगा ? इसमें हम क्या करैं मुकदमा बुला रहा है। शोधनक ! जाओ चारुदत्त जी को बड़े आदर से बुला लाओ। घबराने न पायें, कहना कि एक काम ऐसा आ पड़ा है कि हाकिम आपसे कुछ पूँछा चाहते हैं।

शो—बहुत अच्छा।

(बाहर जाकर चारुदत्त के साथ फिर आता है)

चारु—(सोचकर)—

मेरे कुल अरु शील को जानत हैं नरनाह ।
दशा सोचि शंका तऊ उपजत है मन माँह ।

(फिर तर्क से आपही आप)

खुलो भेद जो ताहि बचावा ।
जो मेरी बहली चढ़ि आवा ॥
भेदिन भेद भूप सब पावत ।
जो यहि विधि मोहि पकरि बुलावत ॥

फिर विचारने का कौन काम है कचहरी में चलूँ । शोधनक ! कहां हैं हाकिम तुम्हारे ?

शो—आइये ।

चारु—(शङ्का से) यह क्या बात है ?

कौआ रोअत है एक ओरा ।
टेरत राजपुरुष करि सोरा ॥
फरकति बाँई आँखि हमारी ।
हिय डरपत लखि असगुन भारी ॥

शो—आइये, कुछ घबराने की बात नहीं है ।

चारु—(चल कर आगे देख कर)

सूखे तरु पर काग यह बैठो रवि की ओर ।
मो दिशि डारत बामदृग है कछु अनरथ घोर ॥

(फिर आगे देख कर) अरे, यह सांप कहाँ से निकल आया ?

छिटके काजल रङ्ग मेरी दिसि नैन उठावत ।
उजरे चारहु दाँत खोलि निज जीभ लपावत ॥
किये रोष बस कुटिल अंग निज पेट फुलावत ।
परो गैल में साँप हाय क्यों मो दिसि धावत ॥
भीगी हैं धरती नहीं पद क्यों फिसलत जात ।
फरकति बाँई आँखिहू काँपत बाँएँ गात ॥
यह पंछी एक ओर से रोवत बारहि बार ।
घोर मृत्यु के सगुन ए यहि में नहीं विचार ॥

भगवान कुशल करे।

शो—आइये इजलास यही है, चले आइये।

चारु—(चारों ओर देख कर) कचहरी की शोभा भी निराली है।

व्याकुल चलत दूत शंख औ लहर सम,
चिन्ता में मगन मंत्रि देखो नीर थीर से।
बकबक करैं बक सरिस चतुर लोग,
कायथ निहारैं बैठे भुजग वेपीर से।
एक ओर भेदी खड़े नाक औ मगर सम,
हाथी घोड़े द्वार डोलैं हिंसक अधीर से।
टेढ़े मेढ़े नीति से बिगारे तट संग सोहैं,
राजा के विचारभौन नीरधि गंभीर से॥

(चल कर सिर में चोट लगने का भाव बताता हुआ) यह दूसरा असगुन हुआ।

सोहैं रोवत काग फरकति बाईं आँखि है।
परो गैल में नाग कुशल करैं भगवान सब॥

अच्छा भीतर चलूँ।

हा—यही चारुदत्त जी हैं,

उठी नाक मुख दृग विशाल सुन्दर छवि ऐसे।
चारुदत्त सो करैं पाप कारन बिन कैसे?
हाथी घोड़े गाय बैल नरकी यह रीती।
अच्छे रूपहि सन स्वभाव की होय प्रतीती॥

चारु—हाकिम साहब, प्रणाम!

हा—(घबराहट जनाते हुये) आइये, आइये, शोधनक! आपको आसन दो।

शो—(आसन लाकर) आइये बिराजिये।

(चारुदत्त बैठ जाता है)

संस्था—(क्रोध से) आगया वे हत्यारे आगया! क्यों जी यहाँ न्याय और धर्म होता है? इस स्त्री मारने वाले हत्यारे को

आसन देते हो ? दे दो ! (गर्व से) अच्छा कुछ बात नहीं !

हा—चारुदत्त जी ! इस बुढ़िया की लड़की से कुछ मेल व्योहार, यारी है ?

चारु—किस की ?

हाकि—इसकी। (बुढ़िया को देखता है)

चारु—(उठ कर) बाई जो प्रणाम !

बुढ़िया—भैया जीते रहो (आपही आप) यही चारुदत्त जो हैं तो बेटी की जवानी सुफल हो गई।

हा—चारुदत्त जी ! कहिये पातुर से आप की दोस्ती है ?

चारु—(लाज का भाव बताता है)

संस्था—लाज जनाये डर किये सकै नहीं छिपि पाप।
मारी धन के हेत तिय ताहि छिपावत आप॥

से० का०—चारुदत्त जी लाज छोड़ दीजिये, मुक़दमा हो रहा है।

चारु—(लाज से) हम आप लोगों से क्या कहें, रंडी से हम से मेल है, इसमें जवानी का दोष है।

हाकि—बड़ा कठिन व्यवहार है छोड़ि दीजिये लाज।
सच में बार न लाइये छल को नाहीं काज॥

लाज छोड़ दो तुमसे व्यवहार पूँछा जा रहा है।

चारु—किस के साथ मुक़दमा है ?

संस्था—(अकड़ कर) मेरे साथ।

चारु—तेरे साथ है तो बुरा है।

संस्था—अरे हत्यारे ! तूने इतने गहनों से लसी बसंतसेनिया को मारा अब छल कपट करके छिपा रहा है।

चारु—क्या बेठिकाने की बातें कह रहा है।

हा—सच कहिये पातुर आप की आशना है ?

चारु—जी हाँ।

हाकि—बसन्तसेना कहाँ है ?

चारु—घर गई।

से० का०—कैसे गई, कब गई, अकेली गई, या किसी के साथ गई ?

चारु—(आपही आप) क्या कहें कि चुपके से चली गई।

से० का०—कहिये, बोलिये।

चारु—घर गई अब और हम क्या कहैं।

संस्था—हमारे पुष्पकरंड बाग में ले जाके उसे गला घोंटके मार डाला और अब कहते हो कि घर गई।

चारु—अरे क्या बकता है।

ऊँचे उड़त अकाश ज्यों चहापंख की छोर।
भीगो नीरदनीर सों जोपै मुख नहिं तोर॥
दोष लगावत झूठही उड़ी जाति है जोति।
कमल सरिस हेमंत के लखु मुखकी गति होति॥

हाकि—(अलग)

तरै सिंधु बाँधिय हवा हिमगिरि लेइ उठाय।
चारुदत्त में दोष कोउ कैसे सकै लगाय!

(प्रकाश) चारुदत्त भी कहीं ऐसा अनर्थ कर सकते हैं ?

संस्था—आप को मुकदमे में किसी का पच्छ न करना चाहिये।

हाकि—अरे मूर्ख !

तू नीच ह्वै श्रुति पढ़त तेरी जीभ क्यों नहिं कटि गिरै।
तू सूर दुपहर को लखत नहिं आँखि तेरी क्यों फिरै॥
तू हाथ डारत आगि में क्यों आँच लागि जरै नहीं।
तू चारुदत्तहि दोष देत है भूमि तोहि हरै नहीं॥

चारुदत्त जी ऐसा अकाज कैसे कर सकते हैं ?

जिन माँग्यो जो दिन बिचार सोइ तुरतहि दीन्हा।
सिंधुहि रतनविहीन निरा जलनिधि जिन कीन्हा॥
गुनमंगल की खानि परम सज्जन सो ऐसे।
बैरिहु जोग न काज करै सो धन हित कैसे ?

संस्था—अरे क्या न्याय में भी पक्षपात होगा ?

बुढ़िया—अरे पापी ! जब रात को थाती के गहने चोरी गये तब तो उन्होंने चारों समुद्रों का सार मोतियों का हार भेज दिया अब वह उन्हीं गहनों के लिये ऐसा अकाज करेंगे ? हाय बेटी ! (रोती है)

हाकि—चारुदत्त जी ! बसन्तसेना पाँव पांव गई कि बहली पर गई।

चारु—हमारे सामने नहीं गई, हम नहीं कह सकते कि पाँव पांव गई कि बहली पर गई।

(मुँह बिगाड़े हुए बीरक आता है)

बीर— लात मारि अपमान कीन्ह मोर जो चंदनक।
सोचत भयो बिहान कठिन बैर बाढ़ो हिये॥

अब कचहरी चलूँ (घुस कर) प्रणाम।

हाकि—अरे, नगररक्षा का अधिकारी बीरक है ! बीरक क्यों आये ?

बीर—जब आर्यक बंधन तोड़ कर भागा और मैं उसे ढूढ़ने लगा तो मैंने देखा कि एक बंद बहली सड़क पर जाती थी। मैंने चंदनक से कहा कि तुम तो देख चुके लाओ मैं भी देख लूँ इस पर उसने मुझे लात मारी सो मैं नालिश करने आया हूँ।

हाकि—तुम जानते हो किसकी बहली थी ?

बीर—जो बहली हाँकता था उसने कहा था कि चारुदत्त जी की बहली है और बसन्तसेना इस पर पुष्पकरंड बाग को जाती है।

संस्था—सुना आप लोगों ने।

हाकि—यह ससि निर्मलज्योति ग्रसन चहत तेहि राहु अब।
धारा मैली होति बिकट करारा कटि गिरत॥

बीरक ! अच्छा तुम्हारा न्याय पीछे होगा, बाहर सवार का घोड़ा है उस पर चढ़ कर अभी पुष्पकरंड बाग चले जाओ और देखो वहां कोई स्त्री मरी पड़ी है ?

बीर—बहुत अच्छा (बाहर जाकर फिर लौट आता है) मैं वहाँ गया था, मैंने वहाँ देखा कि एक स्त्री की लोथ स्यार और गिद्ध खा रहे हैं।

से० का०—तुमने कैसे जाना कि स्त्री की लोथ है ?

बीर—मैं ने देखा कि उसके बाल और हाथ पाँव पड़े थे।

हाकि०—संसार के व्यवहार बड़े टेढ़े बेढ़े होते हैं।

छानबीन ज्यों करै विचारा।
त्यों त्यों अरुझत यह व्यवहारा॥
न्यायविचार अहै टेढ़ा अति।
कीच गाय सम होति बुद्धिगति॥

चारु—(आपही आप)

झपटत है जैसे मधुप खिलत फूल को देखि।
परति विपति चहुँओर से अनरथ होत बिसेखि॥

हाकि—चारुदत्त जी सच सच कह दो क्या बात है।

चारु—जरै जो परगुन देखि बैरबस आँधर पाजी।
परबिनास बिन लखे होय कबहूँ नहिं राजी॥
लहि ऊँचो पद झूँठ साँच जो कछु कहि डारै।
है सोइ माननजोग, नहीं कोउ ताहि विचारै ?
इतनी हू नहिं कबहूँ कीनि जो हम निठुराई।
फूल चुनन के हेत खैंचि कै लता नवाई॥
भँवरपँखरंग दीर्घ केश सो पकरि पछारी।
मारी धन के लोभ रोवती तरुनी नारी ?

संस्था—क्यों जी हाकिम, तुम न्याय करने में भी पक्षपात करते हो जो इस पापी चारुदत्त को आसन पर बैठाते हो ?

हाकि—शोधनक, उठा दो।

(शोधनक चारुदत्त को आसन से उठा देता है)

चारु—बिचार लीजिये जो कुछ आप को करना हो विचार लीजिये।

संस्था—(आप ही आप हर्ष से) मैंने अपना पाप और के माथे ठोका, जहाँ चारुदत्त बैठा था वहीं मैं भी बैठूँ) चारुदत्त के आसन पर बैठ जाता है) चारुदत्त ! देखो, देखो, हमारी ओर देखो, कह दो कि मैंने मारा।

चारु—हाकिम जी, ("जरै जो" इत्यादि फिर पढ़ताहै)

हाय मित्र मैत्रेय ! जात मैं व्यर्थहि मारा।
हाय ब्राम्हणी ! बिमल विप्रकुल जन्म तुम्हारा॥
रोहसेन ! तुम हाय लखो नहिं संकट मेरा।
खेलखेलौनन माहिं वृथा उपजै सुख तेरा॥

हमने बसन्तसेना के पास उस की खबर लेने को और गाड़ी के लिये जो उसने गहने दिये थे उन्हें फेरने के लिये मैत्रेय को भेजा था न जानै क्या कर रहा है ?

(फेंट में गहने लिये मैत्रेय आता है)

मैत्रे—चारुदत्त जी ने मुझे बसन्तसेना के पास गहने फेरने को भेजा था और कहा था कि बसन्तसेना ने रोहसेन को अपने गहने देके उसकी माँ के पास भेज दिया था सो उसके गहने फेर आओ, हम नहीं ले सकते, तो अब चलूँ बसन्तसेना के पास चलूँ। (घूमके आकाश में) अजी रेभिल जी आप क्यों घबराये हुये हैं ? (सुन कर) क्या कहते हैं चारुदत्त जी आज कचहरी में बुलाये गये हैं। कोई होगा ऐसा वैसा काम तो पहले कचहरी चलूँ। बसन्तसेना के घर पीछे जाऊँगा (चल कर देख कर) यही तो है कचहरी (भीतर जाकर) भला हो आप लोगों का ! चारुदत्त जी कहाँ हैं।

हाकि—यह क्या खड़े हैं।

मैत्रे—क्यों भाई सब कुशल है ?

चारु—हो जायगी।

मैत्रे—क्यों भाई तुम घबराये से क्यों हो, तुम यहाँ क्यों बुलाये गये हो ?

चारु—भाई, मैं पापी हत्यार नांसि लोक परलोक सब।
नारी रतिअवतार बाकी यह कहि डारि है॥

मैत्रे—क्या क्या ?

चारु—(कान में कहता है)

मैत्रे—यह कौन कहता ?

चारु—(संस्थानक को देखा कर) यही विचारे हमारे लिये काल बन कर हम से कहला रहे हैं।

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) तो क्यों नहीं कह देते कि घर गई।

चारु—भाई सब कुछ कहा, कौन सुने ?

मैत्रे—जिन्होंने बाग मन्दिर विहार बाजार तालाब कुओं मन्दिरों से उज्जैनी को सज दिया वह अब कंगाल हो गये तो धन के लिये ऐसा अकाज करेंगे ? अरे राजा के साले, काणेली के पूत, पापों की गठरी, सोने से लसा सजा बन्दर ! कह मेरे सामने कह। जिन्होंने फूली लता को भी बल से खींच कर फूल नहीं तोड़े कि कहीं ऐसा न हो कि पल्लव टूट जाय, सो वह लोक परलोक दोनों के विरुद्ध ऐसा काम करेंगे ! रह वे हरामजादे ! जैसे तेरा मन कुटिल है वैसी मेरी लाठी भी है, इसी से तेरी खोपड़ी अभी तोड़ता हूँ।

संस्था—(क्रोध से) देखिये, देखिये, हमारा दावा चारुदत्त पर है, हमारी खोपड़ी तोड़नेवाला यह कौन है ? चुप रह वे पाजी बरुए चुप।

मैत्रे—(लाठी उठाकर 'कह कह' फिर पढ़ता है)

संस्था—(क्रोध से उठ कर मैत्रेय को मारता है, मैत्रेय भी उसे मारता है, मैत्रेय की फेंट से गहने गिर पड़ते हैं)

संस्था—(गहने उठाकर फुरती से) देखिये, देखिये, उसी बेचारी के गहने हैं (चारुदत्त से) क्यों, इन्हीं गहनों के लिये उसे मारा था ?

(हाकिम, सेठ और कायथ सिर नीचा कर लेते हैं)

चारु–(अलग मैत्रेय से)

गठरी गहनन की खुली बड़े कुअवसर आय।
गिरी बिधाताबाम बस देहै हमें गिराय॥

मैत्रे—अजी जो सच हाल है उसे क्यों नहीं कह देते ?

चारु—भाई, खोटी है बुधि नृपति की मरम सकै नहि जानि।
सोई मारो जात, है कहत दीन जो बानि॥

हाकि—हाय ! हाय !!

खीन बृहस्पति से कियो भौम विरोध प्रकास।
धूमकेतु एक और यह प्रगट्यो ताके पास॥

से० का०—(देख कर बसन्तसेना की मा से) बुड्ढी बाई यहीं तो हैं, यह गहनों को देखे वही हैं कि दूसरे।

बुढ़ि—(देख कर) वही हैं। वह नहीं है।

संस्था—अरी बूढ़ी कुटनी ! आँख से पहचान लिया मुँह से कहती है नहीं है।

बुढ़िया—दूर हो झूठे।

से० का०—ठीक ठीक कहो, वही गहने हैं कि नहीं।

बुढ़ि—गहने बहुत अच्छे बने हैं इसी से आँख नहीं हटी वह गहने नहीं हैं।

हाकि—बूढ़ी, इन गहनों को पहचानती हो ?

बुढ़ि—मैने कहा तो, पहचानती हूँ, सोनार ने कदाचित वैसे ही और बना दिये हों।

हाकि—देखिये सेठ जी !

भूषन, लखि कछु सिद्धि न होई।
वैसे और बनाये कोई॥
जो भूषन नर चतुर बनावत।
ताहिं एक में एक मिलावत॥

से० का०—यह गहने चारुदत्त जी के होंगे।

चारु—न।

से० का०—फिर किस के हैं ?

चारु—इसी बुढ़िया की लड़की के हैं।

से० का०— उनसे कैसे अलग हुये।

चारु—कैसे ही हो गये होंगे !

से० का०—चारुदत्त जी सच कहिए। देखिये —

सच से सुखही होय साँचे पाप न लागई।
सच के अच्छर दोइ सच न छिपाइय झूठ से॥

चारु—हम यह नहीं जानते कि गहने वही हैं कि दूसरे, हाँ इतना कह सकते हैं कि हमारे घर से आये हैं।

संस्था—बाग में जाके उसे मार डाला अब बातैं बना के छिपाते हो ?

हाकि—चारुदत्त जी सच कहिये।

हम सब चाहत हैं नहीं ह्वै हैं अनरथ घोर।
परि हैं तुम्हरी पीठ पर कोड़े परम कठोर॥

चारु—धार्मिक कुल में ऊपजे हम सन होय न पाप।
जो सशुझा पापी हमै मरत न रोकिय आप॥

(आपही आप) अब वसंतसेना नहीं है तो हमीं जी के क्या करैं (प्रकाश) अजी बात यह है—

मैं पापी हत्यार नासि लोक परलोक निज।
नारी रतिअवतार, बाको यह कहि डारि हैं॥

संस्था—मारी, तुम भी अपने मुँह से कहो कि मारी।

चारु—तुम तो कह चुके।

संस्था—सुनिये साहब सुनिये, इस ने मारा है, अब तो संशय न रह गया, अब इस दरिद्री चारुदत्त को देहदंड देना चाहिये।

हाकि—शोधनक ! राजा के साले ठीक कहते हैं। सिपाहियो ! पकड़ो इसे।

(सिपाही चारुदत्त को पकड़ लेता है)

बुढ़िया—साहब मेरी भी सुनिये, 'जब चोर ले गया' इत्यादि फिर पढ़ती है, और मरी तो मेरी लड़की मरी, मेरा लड़का क्यों मारा जाय? अब मुकदमा तो मुद्दई मुद्दाले में होता है, मैं मुद्दई हूँ मेरा दावा नहीं है, इन्हें छोड़ दीजिये।

संस्था—दूर हो कुटनी तू कौन है?

हाकि—बुड्ढी तुम जाओ, सिपाहियो इसे निकालदो।

बुढ़ि—('हाय बेटा हाय बेटा' कहती हुई और रोती हुई बाहर जाती है।)

संस्था—मैंने तो अपना काम कर लिया अब जाता हूँ।

(बाहर जाता है)

हाकि—चारुदत्त जी! निर्णय करना हमारा काम है आगे महाराज मालिक हैं। तो भी शोधनक! महाराज से बिनती करो, मनुजी का बचन है—

अपराधी बाम्हन नहीं कबहुँ बधन के जोग।
दीजै देशनिकारि तेहि भये सिद्ध अभियोग॥

शोध—बहुत अच्छा (बाहर जाकर फिर आकर आँखों में आँसू भर कर) सरकार! मैं महाराज के पास गया था, महाराज यह कहते हैं कि जिन गहनों के कारन बसंतसेना मारी गई वेही गले में बाँध सारे नगर में फिराकर ढँढोरा बजाते हुए दक्खिन के मसान में लेजाकर चारुदत्त को सूली चढ़ा दो। जो कोई ऐसा काम करेगा उसे ऐसा ही दंड दिया जायगा।

चारु—राजा पालक ने कैसा बेसमझे बूझे हुकुम दिया है।

परत आगि अन्याय के मंत्रिन के बस भूप।
नहि अचरज जो परत है घोर नरक के कूप॥
ए कुसगुन है राजके उजरे काग समान।
सहसन बिन अपराध के हरे जात जब प्रान॥

भाई मैत्रेय! जाओ हमारी ओर से मा को प्रणाम कहना, लड़के रोहसेन को तुम्हीं को सौंपता हूँ।

मैत्रे—जड़ ही कट गई तो पेड़ कैसे रह सकता है ?

चारु—अजी ऐसा न कहो।

गये लोक परलोक जो पुत्रहि तिनकी देह।
मेरे पीछे कीजिये रोहसेन से नेह॥

मैत्रे—भाई, हम तुम्हारे होके तुम्हारे बिना कैसे जियेंगे ?

चारु—अब हमें छोड़ो जो कुछ तुम्हें करना हो रोहसेन के साथ करो।

मैत्रे—अच्छा।

हाकि—शोधनक इस बाम्हन को हटा दो।

(शोधनक मैत्रेय को बाहर निकाल देता है)

हाकि—कोई है चाँडालों को हुकुम दो।

(चारुदत्त और शोधनक को छोड़ और सब बाहर जाते हैं)

शोध—आइये चारुदत्त जी !

चारु—(करुणा से) मैत्रेय ? ('क्या आज' इत्यादि फिर पढ़ता है) (आकाश में)

नीर तराजू आगि विषहु से करो विचारा।
होय सिद्ध अभियोग हरहु तो जीव हमारा॥
बाम्हन को तू बधत बात सुनि जो रिपुकेरी।
पुत्र पौत्र के संग कुगति ह्वै है तो तेरी॥

चलो हम चलते हैं (सब बाहर जाते हैं)

दसवाँ अंक

[स्थान—उज्जैन में बड़ी सड़क]

(दो चांडालों के साथ चारुदत्त आता है)

दोनों चांडाल—तुम का करौ विचार, बंधुआ पकरन में चतुर।
काटैं सिर एक बार, शूल चढ़ावैं तुरत हम॥

अरे हटो भाई ! यह चारुदत्त जी हैं,

हम जल्लाद दोऊ दिसि धारे।
कनयर की माला गल डारे॥
छिन छिन होत छीन यह कैसे।
घटत तेल के दीपक जैसे॥

चारु—(दुख से) परी धूरि सब देह पुनि भीगी द्रग के नीर।
पहिरे फूल मसान के चारिहु ओर शरीर॥
बलि समान मोहि जानि कै रक्तगंध तन लाग।
काँव काँव करि चलत हैं मोहि भखन को काग॥

दोनों चाँडा—हटो जी हटो ! क्या देखते हो,

सज्जनतरु यह कटत है कालकठोर कुठार।
सुजनपंछि सेवत रहे जाकी सुन्दर डार॥

चल रे चारुदत्त, चल !

चारु—भाग्य में क्या क्या बदा है कौन कह सकता है ? देखो मेरी क्या दशा हो रही है।

देवीचंदन को दिये अँग अँग थाप लगाय।
आटा डारो देह पर पशु मोहि दीन बनाय॥

(आगे देख कर) देखो लोगों का चित्त भी कैसा बदलता है ?
(करुणा से)—

जे जन मेरी दशा निहारत। ते निज मनुज जाति धिक्कारत॥
मोहि न सकै कोऊ जतन बचाई। कहैं स्वर्गसुख भोगहु जाई॥

दोनों चाँडा—हटो जी हटो ! क्या देखते हो ?

तारासंक्रम, सुजनबध गैया जबै बियाय।
इन्द्र बिसर्जन जनि लखौ भागौ आँखि बचाय॥

पहिला चाँडा —अरे अहित, देख, देख,

लिए जात हम बधन हित नगरी को सिरताज।
रोय उठ्यो आकाश, कै परत मेघ बिन गाज॥

दूसरा चाँडा—अरे !

रोवत नहिं आकाश यह बिन घन विज्जु न होइ।
पुरतिय चढ़ी अटान पै देखि उठीं ये रोइ॥
लिये जात हम बधन हित यहि सब लोग निहारि।
धूरि दबावत राह की नैनन से जल डारि॥

चारु—(देख कर करुणा से)

बैठीं हाट अटन पुरनारी।
खिरकिन सन मुखकमल निसारी॥
चारुदत्त हा! हाय! पुकारत।
आँसुधार नयनन से डारत॥

दोनों चाँडा—चल बे चारुदत्त चल! ढढोरा पीटने की जगह यही है। बजा बे ढोल, सुनो जी सुनो "यह सार्थवाह विनयदत्त का नाती सागरदत्त का लड़का चारुदत्त है। इस पापी ने थोड़े से धन के कारन पुष्पकरंडबाग में ले जाके वसंतसेना पातुर को गला घोंट कर मार डाला, यह धन के साथ पकड़ा गया अपने मुँह से भी कहता है; इस पर महाराज ने हमें इसके मारने का हुकुम दिया है; और जो कोई ऐसा लोक परलोक के विरुद्ध काम करेगा उसे भी राजा पालक ऐसा ही दंड देंगे"

चारु—(उदास होकर आपही आप)

कीन्हें यज्ञ अनेक बाग मन्दिर बनवाये।
जिन पुरखन बैठाय विप्र श्रुति पाठ कराये॥
मेरे मारन हित लगाय अपजस को टीका।
नाम लेत चंडाल हाय यहि छन तिनहीं का॥

(सोच कर दोनों कानों पर हाथ रखकर) हाय प्यारी वसंतसेना!

ओंठ प्रवाल समान चंद किरन से दाँत जहँ।
सो मुखरस करि पान अपजस विष कैसे पियों॥

दोनों चाँडा—हटो जी हटो,

सज्जनआरतिहरन जो गुनमनि को भंडार।
आज निसारो जात सो किये अशुभ सिंगार॥

और, सुख संपति में करत है सोच फिकिर सब कोय।
बिपति परे पै हित करत जन जग दुर्लभ होय॥

चारु—(चारो ओर देख कर)

आँचल सन ढाँके मुख फेरे।
जात दूर साथी अब मेरे॥
सुख के दिन औरहु हित होई।
बिपत परे पै हित नहिं कोई॥

दोनों चाँडा—मैंने सब को हटा दिया अब इसे ले चलो।

चारु—('मैत्रेय क्या' इत्यादि फिर पढ़ता है)

(परदे के पीछे हाय चाचा ! हाय चारुदत्त जी !

चारु—(सुन कर करुणा से) अरे चौधरी ! हम तुमसे एक माँगन माँगते हैं।

चाँडा—अरे हमसे माँगन माँगते हो ?

चारु—राम ! राम ! बेसमझे बूझे काम करनेवाला पालक चाँडाल है, तुम तो उससे अच्छे हो। हम चाहते हैं मरने से पहिले बेटे का मुँह देख लें।

दोनों चाँडा—बहुत अच्छा।

(परदे के पीछे) हाय चाचा, हाय बाबू।

चारु—(सुन कर करुणा से) चौधरी, हम अपने बेटे का मुँह देखना चाहते हैं ; वह आ रहा है।

चाँडा—हटो जी हटो, चारुदत्त अपने बेटे का मुँह देख लें। (नेपथ्य की ओर देख कर) इधर आइये, इधर आ बे लड़के, इधर। (बाहर जाते हैं)

[दूसरा स्थान—सड़क पर दूसरी जगह]

(रोहसेन के साथ मैत्रेय आता है)

मैत्रे—चलो भैया चलो, तुम्हारे बाप को मारने के लिये जा रहे हैं।

रोह—हाय ! चाचाजी हाय !!

मैत्रे—हाय ! भाई तुम्हें कहाँ ढूढ़ें ।

(चंडालों के साथ चरुदत्त आता है)

चारु—(बेटे और मैत्रेय को देख कर) हाय बेटे, मैत्रेय, (करुणा से) हाय ! यह लड़का

रहि हौं नित परलोक में पानी काज अधीर ।
देइ न सकिहैं पेट भरि नाम्हीं अँजुरिन नीर ॥

अब मेरे पास क्या है जो बेटे को दूँ (जनेऊ देख कर) यही है ।

मोती को नहिं सोन को सोहै वाम्हनगात ।
देवपितर को भाग नित जेहि सन दीन्हो जात ॥

(जनेऊ उतारता है)

पहिला चाँडा—अरे चारुदत्त, इधर आ ।

दूसरा चाँडा—क्यों रे, चारुदत्त जी को तुकार के पुकारता है ? देख—

संपति में कै विपति में बिना रोक दिन राति ।
हथिनी मतवारी सरिस नित होतव्यता जाति ॥

और, मिटो नाम पदवी, मिटी कै नहिं पूजनजोग ।
राहु ग्रसे जो चंद्र को कै नहिं पूजत लोग ॥

रोह—अरे चाँडालो ! चाचा को कहाँ लिये जाते हो ?

चारु— भैया, गर सोहत कनयर की माला ।
कंध शूल हिय शोक विशाला ॥
मख मँह काग सरिस बलि काजू ।
जाहुँ मसान मरन हित आजू ॥

चाँडा—अरे !

जन्मे से चंडालकुल कोउ चंडाल न होय ।
सज्जन नासन चहत जो चाँडाल नर सोय ॥

रोह—अरे तुम चाचा को क्यों मारते हो ?

चांडा—भैया हम क्या करैं, राजा का हुकुम ऐसा ही है।

रोह—तो मुझे मार डालो, चाचा को छोड़ दो।

चांडा—भैया तुम लाख बरस जियो, तुम बहुत अच्छे लड़के हो।

चारु—(आँसू भरकर लड़के को गले लगाकर)

धनी दरिद सम दुहुन के एकै नेह अधार।
हियो करै शीतल सदा चंदन की अनुहार॥

('गर सोहत कनइर' इत्यादि फिर पढ़ता है, देखकर आपही आप 'आँचल सन' इत्यादि फिर पढ़ता है)।

मैत्रे—भाई चाँडालो ! चारुदत्त जी को छोड़ दो, हमें मार डालो।

चारु—राम ! राम ! यह क्या कहते हो (देख कर आपही आप) "सुख यह" इत्यादि फिर पढ़ता है। (प्रकाश "बैठो" इत्यादि फिर पढ़ता है)

पहिला चांडा—हटो ! क्या देखते हैं।

लाग्यो अपजस घोर छोड़ी आसा जियन की।
बूड़त टूटत डोर सोने के कलसे सरिस॥

चारु—(करुणा से "ओंठ प्रवाल समान" इत्यादि फिर पढ़ता है)

दूसरा चांडा—अरे फिर पुकार दे, ढंढोरा पीट दे।

पहिला चाँडा—फिर ढंढोरा पीट कर "सुनो जी" इत्यादि पढ़ता है।

चारु— भई हाय मेरी ऐसी गति।
प्राणदंडहू में नहिं कछु छति॥
यहै होत सुनि दुःख अपारा।
कहै जो नीच ताहि मैं मारा॥

(सब बाहर जाते हैं)

(तीसरा स्थान—सरकारी सड़क पर तीसरी जगह)

(कोठे के ऊपर स्थावरक बँधा खड़ा है)

स्था—(ढंढोंरा सुन कर घबराहट से) हाय ! हाय ! चारुदत्त बेकसूर मारे जाते हैं। मुझे मेरे मालिक ने यहाँ बाँध रक्खा है तो यहीं से चिल्लाऊँ। सुनो भाई सुनो ! मुझ पापी ने बहली के हेर फेर से वसन्तसेना का पुष्पकरगड बाग में पहुँचाया, वहाँ मेरे मालिक ने उससे कहा मेरे पास रह। जब उसने न माना तो गला घोंट कर मार डाला। इस भलेमानुस ने नहीं। अरे मैं दूर हूँ इस से मेरी बात कोई नहीं सुनता। अब क्या करूँ, कूद पड़ूँ। (सोच कर) मेरे कूदने से चारुदत्त जी बच जायँगे। अच्छा तो इसी टूटी खिड़की की राह से कूद पड़ूँ ; मेरे मरने से क्या बिगड़ेगा—यह विचारे न रहेंगे तो भले मानुसों को सरन कौन देगा ? मर भी जाऊँगा तो मुझे स्वर्ग धरा है (कूद कर) अरे, मैं तो बच गया ! बेड़ी टूट गई ! चलूँ जहाँ चाँडाल ढंढोरा पीट रहे हैं, वहीं चलूँ (देख कर) अरे ओ चाँडालो ! हटो भाई हटो।

(दोनों चाँडालों के साथ चारुदत्त आता है)

दोनों चाँडाल—अरे कौन हटो हटो करता है ?

स्था—("सुनो भाई सुनो" इत्यादि फिर पढ़ता है)

चारु—अरे, फँसा काल के फंद में सूखे में ज्यों धान।
मोहि बचावन काज को आवत मेघ समान॥

आप लोगों ने सुना है।

केवल डरत कलंक को मरत डरत नहिं कोइ।
अजस मिटे को मरनहूँ पुत्रजन्म सम होइ॥

और, नीच मूढ़ अति वैरबस दूषनभरो शरीर।
मारो मेरे सुजसपै विष बुझाय यह तीर॥

दोनों चाँडा—स्थावरक ! सच कहते हो ?

स्था—सच नहीं तो क्या ? इसी डर से तो मुझे कोठे ऊपर बेड़ी पहना के बंद किया कि किसी से कह न दूँ ।

(संस्थानक आता है)

संस्था—(हर्ष से)।

मछरी साग पात तरकारी।
खट्टी कड़ुई माँस बघारीं॥
चीनी के संग भात बनावा।
हम सुख सन अपने घर खावा॥

(सुन कर) फूटे काँसे के बरतन की नाईं चाँडालों की बोली सुन पड़ती है और ढंढोरा पिट रहा है, इससे जान पड़ता है कि चारुदत्त को सूली देने के लिये जा रहे हैं; तो मैं भी चल कर देखूँ। वैरी के मरने से मन को बड़ी खुशी होती है। हम ने सुना है कि जो लोग वैरी का मारा जाना देखते हैं उन्हें दूसरे जन्म में आँख का रोग नहीं होता। हम बहुत दिन से ताक में रहे; विषम गाँठ में जैसे कीड़ा घुस जाता वैसे ही अवसर पाकर चारुदत्त के नास का उपाय किया, अब अपनी अटारी पर चढ़ कर अपना करतब देखें। (चढ़ कर देख कर, अरे) दरिद्र चारुदत्त को मारने के लिये जाते हैं तो इतनी भीड़ इकट्ठी हो रही है, जब कहीं हम ऐसे बहादुर को मारने ले जाँयगे तो कैसा होगा? (देख कर) अरे, नये बैल की नाईं रँग के इसे दक्खिन ले जा रहे हैं, हमारे महल के नीचे क्यों ढंढोरा बन्द किया गया। (देख कर) अरे स्थावरक लौंडा कहाँ गया? ऐसा न हो कहीं जाके भाँड़ा फोड़ दे। देखें कहाँ गया (उतर कर चाँडालों के पास जाता है)।

स्था—देखिये यह आगये।

दोनों चाँडाल—देहु किवाड़े चुप रहौ भागो छाँड़ो गैल।
दुष्टपने की सींग को आवत है यह बैल॥

संस्था—हटो जी हटो। (आगे बढ़ कर) बेटे स्थावरक आओ चलो।

स्था—अरे नीच! बसन्तसेना को मारके तेरा पेट नहीं भरा, अब याचकों के कल्पवृक्ष चारुदत्त को भी मारना चाहता है?

संस्था—अबे हीरा मोती के डिब्बे लिये ऐसी लुगाई हम मारैंगे?

सब—तुम्हींने तो मारा, चारुदत्तजी ने नहीं मारा।

संस्था—कौन कहता है।

सब—यही भलामानुस।

संस्था—(अलग डरता हुआ) अरे बापरे बाप! मैंने क्या किया? लौंडे को अच्छी तरह न बाँधा था। मेरे पाप का साखी यही है। (सोचकर) अच्छा तो अब यह करूँ (प्रकाश) अजी यह लौंडा झूठ बोलता है, इसने हमारा सोना चुराया था सो हमने इसे मारा पीटा था, यह तो हमारा बैरी है, इसका कहना कैसे सच हो सका है? (आड़ करके स्थावरक को सोने का कड़ा देता है) बेटे स्थावरक! यह लो और कह दो कि चारुदत्त ने मारा है।

स्था—(कड़ा लेकर) देखो लोगो, यह हमें कड़े का लालच दे रहा है।

संस्था—(स्थावरक के हाथ से कड़ा छीन कर) देखिये, यही कड़ा है जिसके कारन हमने इसे बाँधा था। अजी चाँडालो! हमने इसे गहनों के घर में रक्खा था, इसने सोना चुराया, हमने इसे मारा पीटा था, तुम्हें परतीत न हो तो इसकी पीठ देख लो।

दोनों चाँडाल—हाँ जी, आप सच कहते हैं, बिगड़ा हुआ नौकर क्या क्या नहीं कहता।

स्था—हा! दासपना कैसा बुरा होता है कि सच बोलो तो भी कोई परतीत नहीं करता। (करुणा से) चारुदत्त जी! मेरा क्या बस है? (पाँव पड़ता है)।

चारु—उठहु तात कारन बिना भे तुम बंधु हमार।
करी दया तुम सुजन पै बूड़त दुःख अपार॥

मोहि बचावन हेत तुम कीन्हें बहुत उपाय।
सब कुछ कीन्हो तात तुम दैव न मानत, हाय!

दोनों चाँडा—सरकार! इस लौंडे को मार कर निकाल दीजिये।

संस्था—निकल बे (बाहर निकाल देता है) अरे चाँडालो! क्यों देर कर रहे हो, मारो इसे।

चांडा—तुम्है बड़ी उतावली है तो; तुम्हीं मारो।

रोह—अरे चाँडालो! चाचा को छोड़ दो, मुझे मारो।

संस्था—अजी इस को भी मारो, इस के लड़के को भी मारो।

चारु—यह गधा सब कुछ कर सकता है, बेटा तुम अपनी माँ के पास चले जाओ।

रोह—मैं जाके क्या करूँ?

चारु—चले जाव तीरथ अवै लै माता निज साथ।
नहिं अचरज पितुदोष जो बीते तुम्हरे माथ॥

भाई मैत्रेय, इसे ले जाओ।

मैत्रे—भाई, मैं तुम्हारे बिना जी सकता हूँ?

चारु—भाई, तुम को क्या हुआ, तुम क्यों मरना चाहते हो?

मैत्रे—(आपही आप) यह ठीक नहीं। बिना चारुदत्त के मैं जी नहीं सकता। लड़का ब्राह्मणी को सौंप कर मैं भी इनके साथ चलूँ। (प्रकाश) भाई, इन्हें पहुँचा आऊँ (चारुदत्त के पाँव पड़ता है, लड़का भी रोता हुआ चारुदत्त के पाँव पड़ता है)

संस्था—अजी, हम तुमसे कहते हैं कि इसको भी मारो, इसके लड़के को भी मारो।

(चारुदत्त डर का भाव बताता है)

दोनों चांडा—राजा का यह हुकुम नहीं है कि बेटे को भी मारो, जा बे लड़के भाग जा।

(रोहसेन मैत्रेय के साथ जाता है)

दोनों चांडा—यह तीसरी जगह है, यहाँ ढँढोरा पीटो (फिर ढँढोरा पीट कर सुनो जी इत्यादि कहते हैं)

संस्था—लोगों का विश्वास नहीं होता (प्रकाश) अबे चारुदत्त ! लोगों का परतीत नहीं होती, तू अपने मुँह से कह कि मैंने बसन्तसेना को मारा।

चारु—(चुप रहता है)

संस्था—अजी चारुदत्त नहीं बोलता तो तुम लाठी से मार के इससे कहलाओ।

चांडा—(लाठी उठा के) चारुदत्त, कहो।

चारु—(करुणा से) डूबो महा विपति के सागर।
नहिं मोहि दुःख नहीं मोहि कछु डर॥
कहन परत प्यारिहि मैं मारा।
यहै जरावत हृदय हमारा॥

संस्था—अबे चारुदत्त ! "लोगों को परतीत नहीं" (इत्यादि फिर पढ़ता है)

चारु—अरे, नगर के लोगो "मैं पापी हत्यार" (इत्यादि फिर पढ़ता है)

संस्था—मारी।

चारु—हाँ।

पहिला चाँडा—अजी आज तुम्हारी बारी है।

दूसरा चाँडा—न, तुम्हारी है।

पहिला चाँडा—अच्छा लिख के देखो (बैठकर लिखते हैं)

पहिला चाँडा—अच्छा, जो मेरी बारी है तो ठहर जाओ।

दूसरा चाँडा—क्यों ?

पहिला चाँडा—बाप जब मरते थे तो कहने लगे 'बेटा वीरक जब तुम्हारी बारी मारने की हो तो उतावली न करना'।

दूसरा चाँडा—क्यों ?

पहिला चाँडा—कदाचित कोई भलामानुस रुपया दे के छुड़ा ले, राजा के लड़का हो जाय और सब बँधुए छोड़ दिये जांय, हाथी बिगड़े और उसके गड़बड़ में बँधुआ छूट जाय, राज पलट जाय और बँधुए छोड़ दिये जाँय।

दूसरा चाँडा—अरे, क्या कहता है राज पलट जाय!

पहिला चाँडा—अच्छा लाओ, फिर लिख के देखें आज किसकी बारी है।

संस्था—अजी, चारुदत्त को जल्दी मारो। (इतना कह कर स्थावरक के साथ एकान्त में खड़ा हो जाता है)!

दोनों चाँडा—चारुदत्त जी, मालिक का हुकुम है हमारा दोष नहीं है, तुम्हें जिसकी सुध करना हो उसकी सुध करलो।

चारु—अपने खोटे भाग बली रिपु की कुटिलाई।
लाग्यो तदपि कलङ्क होय जो धर्म सहाई॥
तो सुरपति के धाम औरहू कहुँ जहँ होई।
मेटै शीलस्वभाव दोष मेरे सब सोई॥

अब हम कहाँ जायँ?

पहिला चाँडा—(आगे दिखला कर) वह देखो आगे दक्खिन का मसान है जिसको देखकर बँधुओं के प्रान निकल जाते हैं। देखो, देखो,

खीचैं आधी देह स्यार नीचे से ठाढ़े।
आधी सूली रहै टँगी खीसैं सब काढ़े॥

चारु—हाय मैं अभागा क्या करूँ? (ऐसा कह कर बैठ जाता है)

संस्था—अभी न जाऊँ, चारुदत्त को मरता देख लूँ तब जाऊँ। (घूम के देख कर) अरे यह तो बैठ गया।

पहिला चाँडा—चारुदत्त डर गये।

चारु—(उठ कर) रे मूर्ख! "केवल डरत कलङ्क से" (इत्यादि फिर पढ़ता है।)

चाँडा—चारुदत्त जी, आकाश में सूर्य चन्द्रमा रहते हैं उन पर भी बिपत पड़ती है, हम लोगों की कौन गिनती है ; कोई उठ के गिरता है कोई गिर के उठता है।

गिरत उठत फिरि फिरि जियत फिरि फिरि मिलत शरीर।
यह बिचारि घबराहु जनि धरो समुझि मन धीर॥

दूसरा चाँडाल—यह ढंढोरा पीटने की चौथी जगह है पीट दो (ढँढोरा पीट कर "सुनो जी सुनो" इत्यादि फिर पढ़ता है।)

चारु—हाय प्यारी वसन्तसेना, "ओंठ प्रवाल समान" (इत्यादि फिर कहता है) (चाँडालों के साथ बाहर जाता है)

[चौथा स्थान—सड़क पर एक दूसरी जगह]

[बसंतसेना के साथ संवाहक योगी आता है]

योगी—मेरे इस जोगी के भेस ने भी बड़ा उपकार किया जो हारी माँदी बसंतसेना को चंगी करके फिर घर पहुँचाता हूँ। उपासिका ! तुम को कहाँ पहुँचा दूँ।

बसंत—मुझे चारुदत्त जी के घर ले चलिये, जैसे कोकाबेली को चन्द्रमा के देखने से सुख होता है वैसे ही उन्हें देख कर मैं भी सुखी हो जाऊँगी।

योगी—(आपही आप) किस राह चलूँ ? (सोच कर) बड़ी सड़क से चलूँ। (प्रकाश) उपासिका आइये, बड़ी सड़क से चलैं, और आज यहाँ इतनी भीड़ भाड़ हल्ला गुल्ला क्यों हो रहा है ?

बसंत—(आगे देख कर) अरे, आज यहाँ इतनी भीड़ क्यों है ? जोगी जी पूछिये तो आज क्या है जो सारी उज्जैनी उमड़ी सी पड़ती है ?

(चारुदत्त दो चाण्डालों के साथ आता है)

दोनों चांडा—यह सब से पिछली जगह है, यहाँ पर ढंढोरा पीट दो (ढंढोरा पीट कर) चारुदत्त जी सम्हल जाइये, डरिये नहीं अभी एक छिन में आप का काम निपटा जाता है।

चारु—हे भगवान !

योगी—(सुन कर घबराहट से) उपासिका ! चारुदत्त जी को मारने को लिये जा रहे हैं और कहते हैं कि इसने बसन्तसेना को मार डाला है।

बसंत—हाय ! हाय ! मुझ अभागिनी के कारन चारुदत्त जी मारे जा रहे हैं, जोगी जी जल्दी चलिये।

योगी—आइये, आइये चारुदत्त जी मरने न पायें, हम लोग उनके पास पहुँच जायँ। अरे हटो भाई !

बसंत—हटो जी हटो !

दोनों चाँडा—चारुदत्त जी ! मालिक का हुकुम है जिसकी सुध करना हो उसकी सुध कर लीजिए।

चारु—" हम क्या कहें " (इत्यादि फिर पढ़ता है)

पहिला चाँडा—(तलवार खींच कर) चारुदत्त जी ! सीधे खड़े हो जाइये, एक ही वार में हम आपको स्वर्ग पहुँचाते हैं। (चारुदत्त सीधा खड़ा हो जाता है, चाँडाल उसे मारना चाहता है पर उसके हाथ से तलवार गिर पड़ती है)

चाँडा—अरे, बल करि मूठी से पकरि खैंची गही सम्हारि।
बिजुरीसी क्यों गिरिपरी धरती पर तरवारि॥

मुझे तो अब जान पड़ता है कि चारुदत्त जी बच गये। भगवती सहवासिनी देवी, चारुदत्त जी छूट जायँ तो चांडाल कुल पर बड़ी कृपा हो।

दूसरा चाँडा—हम लोगों को जो कुछ हुकुम है सो करो।

पहिला चाँडा—अच्छा।

(दोनों चारुदत्त को सूली पर चढ़ाना चाहते हैं)

योगी और बसंत—अरे अरे क्या करते हो? क्या करते हो?

बसंत—अरे मैंही अभागिनी हूँ जिसके कारन यह मारे जा रहे हैं।

चाँडा—(देख कर)

झपटी आवति कौन यह पीठ केश छिटकाय।
हाँ हाँ हाँ हाँ करति है दूनौं हाथ उठाय॥

बसंत—चारुदत्त जी यह क्या है? (दौड़ कर गिर पड़ती है)

योगी—चारुदत्त जी यह क्या हुआ? पैरों पर गिर पड़ता है।

पहिला चाँडा—(डरता हुआ हट कर) बसंतसेना! बहुत अच्छा हुआ कि हमने बेकसूर को नहीं मारा।

योगी—(उठ कर) चारुदत्त जीते हैं?

दोनों चांडा—अजी, चारुदत्त जी सौ बरस जियें!

बसंत—(बड़े हर्ष से) मैं जी गई।

दोनों चाँडा—महाराज यज्ञमंदिर में बैठे हैं, उनसे यह हाल कह आवें।

संस्था—(बसन्तसेना को देख कर डरता हुआ) अरे बाप रे बाप! इस हरामजादी को किसने जिला दिया! मेरे तो प्रान निकल गये, अब भागूँ। (भाग जाता है)

चाँडा—(आगे बढ़ कर) महाराज ने यह हुकुम दिया है कि जिसने बसन्तसेना को मारा हो उसे मारो। (बाहर जाता है)

चारु—(अचरज से)

बधन हेत खाँड़ा उठो होत काल को कौर।
मोहि बचावत कौन यह आय गई यह ठौर॥

(देख कर) बसंतसेना यह दुसरी है?
यही स्वर्ग से कै उतरी है?

घबराहट में देख परी है।
वही अहै कै नहीं मरी है॥
मोहि जिआवन सोइ, कै उतरी यह स्वर्ग से?
कै दूसरि यह कोइ, रूप वही का है धरे?

बसंत—(उठ कर पैरों पर पड़ कर) चारुदत्त जी! मैं वही पापिनी हूँ जिसके कारन तुम्हारी यह दशा हुई।

(परदे के पीछे)

बड़ा अचरज है कि बसन्तसेना जीती है!

चारु—(सुनकर उठकर आँखें बन्द किये हुये हर्ष से) प्यारी, तुम बसन्तसेना हो?

बसंत—मैं ही अभागिनी हूँ।

चारु—(देखकर हर्ष से) यह बसंतसेना है? (आनन्द से)

आँसुन नहवावत उरज मोहि मृत्युबस देखि।
आई ज्यावन मोहि जनु विद्या कोउ बिसेखि॥

प्यारी बसंतसेना,

तव हित चलन चहत मम प्राना।
तुमही आय कीन्ह मम त्राना॥
प्रियसंगमकर यही प्रभावा।
मरि कै कौन जीव फिर आवा॥

प्यारी, देखो—

लाल बस्त्र बधचीन्ह प फूलन की यह माल।
लागैं बरसिंगार से दुलहिन आवन काल॥
चलत बजावत ढोल जो मोहि मारन के हेत।
तिनकी व्याहमृदंग ज्यों बोल सुनाई देत॥

बसंत—यह आपने क्या किया?

चारु—प्यारी, मैंने तुमको मारा।

पहिले को वैरी बली यहि छन औसर पाय।
आप नरक में जाय किय मेरे नासउपाय॥

बसंत—(कान पर हाथ धर कर) राम, राम ! उसी राजा के साले ने मुझे मारा था ।

चारु—(योगी को देखकर) यह कौन है ?

बसंत—उस पापी ने तो अपनी जान मुझे मार ही डाला था इस साधू ने फिर जिला लिया ।

चारु—भाई, तुम कौन हो जो बिना कारन हमारे सहाय हुये ?

योगी—आप मुझे नहीं पहचानते ? मैं आपके हाथ पाँव दबाने वाला संवाहक हूँ । मुझे जुआरियों ने पकड़ा था, सो आपका सेवक जानके बाई जी ने अपना गहना देकर मुझे छुड़ाया ! जुए से ऐसा जी घबराया कि मैं बुद्धमत का जोगी हो गया । यह बाई जी बहली के हेर फेर से पुष्पकरंडबाग पहुँची, वहाँ उस पापी ने इनसे कहा कि तू मुझे नहीं चाहती और इनको गला घोंट कर मार डाला । मैंने देखा—

(परदे के पीछे हुल्लड़ होता है)

जय जय श्रीवृषकेतु दत्तमख जिन संहारा ।
जय षट्वदन कुमार क्रौंच जिन शैल बिदारा ॥
जय आर्यक नृप जीति लीन निज शत्रुहि मारी ।
ध्वजा सरिस कैलास लसत धरती जिन सारी ॥

(घबराया हुआ शर्विलक आता है)

शर्वि—पालक नृपहि नरक पहुँचाई ।
आर्यक कहँ नरनाह बनाई ॥
सिर धरि तासु बचन अब आवौं ।
चारुदत्त की बिपति छुड़ावौं ॥
बिना मंत्रि बल नृप सो नासी ।
समाधान मन करि पुरवासी ॥
लीन्ह राज निज प्रबल प्रभाऊ ।
बलको राज मनहुँ सुरराऊ ॥

(आगे यह देख कर) जहाँ यह भीड़ लगी है वहीं होंगे। राजा आर्यक का पहिला काम चारुदत्त जी को बचाना है, उसे भगवान सुफल करें। अच्छा (जल्दी चल कर) हटो रे हटो (देखकर) चारुदत्त जी जीते हैं ? बसन्तसेना भी यहीं है ! हमारे स्वामी के मनोरथ पूरे हो गये।

बूड़न चाहत महा दुःख के सिंधु अपारा।
प्रिया शील की खानि ताहि निज गुनन उबारा॥
धन्य भाग हम सबन केर देखे यहि अवसर।
महापुरुष, यह ग्रहन छुटे चाँदनि सँग हिमकर॥

मैंने तो बड़ा पाप किया है, इनके सामने कैसे जाऊँ ? अजी सिधाई सब जगह अच्छी लगती है। (आगे बढ़ कर हाथ जोड़ कर) चारुदत्त जी !

चारु—आप कौन हैं ?

शर्वि—तुम्हरे घर जिन सेंध करि थाती लई चुराय।
दोषी सो माँगत अभय सरन तुम्हारी आय॥

चारु—आप ऐसा न कहिए, आपने तो बड़ी कृपा की थी। (गले लगाता है)

शर्वि—आर्यचरित आर्यक नृपति राखत कुल औ मान।
मारचो पालक भूप को मख महँ पशू समान॥

चारु—क्या ?

शर्वि—गयो तुम्हारी सरन जो तुम्हरे रथ चढ़ि जोइ।
मारो पालक भूप को मख महँ पशु सम सोइ॥

चारु—शर्विलक, वही जिन्हें राजा पालक ने घोसीपुरे से बुलाकर बिना कारन कैद किया था और तुमने छुड़ाया था ?

शर्वि—जी हाँ।

चारु—बहुत अच्छा हुआ।

शर्वि—आपके मित्र राजा आर्यक ने राज पाते ही वेणा के किनारे कुशावती का राज आपको दिया। आपको मित्र

की पहिली बात तो माननी ही चाहिये (घूम कर) अरे, उस पाजी राजा के साले को पकड़ तो लाओ।

(परदे के पीछे)—बहुत अच्छा, सरकार।

शर्वि—राजा आर्यक ने कहा है कि हम को यह राज आप ही की कृपा से मिला है; इसे आपही संभालें।

चारु—हमारी कृपा इसमें क्या थी ?

(परदे के पीछे)

अरे राजा के साले ! चल अपने दुष्टपने का फल ले।

(संस्थानक का हाथ पीछे बंधा हुआ है और उसे दो सिपाही लाते हैं)

संस्था—अरे दैया रे दैया !

दूर हेराना गदहा जैसे।
कूकुर सम लाये मोहि तैसे॥

(चारों ओर देख कर) मैं तो चारों ओर से बँध गया अब मेरा बचानेवाला कोई नहीं है – कहाँ जाऊँ क्या करूँ ? (सोच कर) बिपति में पड़े को सरन देनेवाला यही है (आगे बढ़ कर) चारुदत्त जी दुहाई है ! मुझे बचाइये !

(परदे के पीछे)

चारुदत्त जी, इसे हमारे हवाले कीजिये हम इसको मारैं।

संस्था—(चारुदत्त से) दुहाई है ! तुम्हारी सरन हूँ !

चारु—(दया से) शरणागत को अभय।

शर्वि—(घबड़ा कर) अजी, इसको चारुदत्त के आगे से ले जाओ। कहिये इस पाजी को क्या किया जाय ?

भले बाँधि अँग अँग खिंचवाइय ?
कै यहि कुत्तन से नुचवाइय ?
कै यहि की बोटी कटवाइय ?
कै यहि सूली पर चढ़वाइय ?

चारु—जो हम कहेंगे वह कीजियेगा ?

शर्वि—इसमें भी कुछ संदेह है ?

संस्था—चारुदत्त जी दुहाई है ! तुम्हारी सरन हूँ ! तुम अपनी ओर देखो। मैं ऐसा काम फिर न करूँगा।

(परदे के पीछे) मारो इस पापी को, क्यों छोड़ते हो ?

(बसन्तसेना चारुदत्त के गले से माला उतार कर संस्थानक को पहिना देती है)

संस्था—अरी ! अब हम तुझे न मारेंगे, हमें बचा ले।

शर्वि—अजी हटाओ इस को। चारुदत्त जी, कहिये इस पापी का क्या किया जाय ?

चारु—जो हम कहेंगे वही कीजियेगा।

शर्वि—इस में भी कुछ संदेह है ?

चारु—सच ?

शर्वि—सच।

चारु—तो इसे जल्दी—

शर्वि—मार डालें ?

चारु—नहीं छोड़ दीजिये।

शर्वि—क्यों ?

चारु—वैरी जब अपराध करै और पैरों पर पड़ कर सरन माँगे तो उस पर हथियार नहीं उठाना चाहिये।

शर्वि—तो इसे कुत्तों से नुचवा डालें ?

चारु—नहीं, उपकार से मारना चाहिये।

शर्वि—कहिये क्या करें ?

चारु—छोड़ दीजिये।

शर्वि—छोड़ दो।

संस्था—अरे बच गये ! बच गये !

(सिपाहियों के साथ बाहर जाता है)

(परदे के पीछे हुलड़ होता है)

अरे, चारुदत्त जी की बहू धूताबाई आँचल पकड़े हुए लड़के को झटक कर जलती आग में कूदना चाहती हैं, लोग उन्हें रो रो कर रोकना चाहते हैं पर नहीं मानती।

शर्वि—(सुन कर नेपथ्य की ओर देख कर) अरे क्या है चंदनक ?

(चंदनक आता है)

चंद—देखिये, महाराज के महल के दक्खिन कैसी भीड़ इकट्ठी हो रही है। चारुदत्त जी की बहू धूतावाई (इत्यादि फिर कहता है) मैंने तो उनसे कहा कि साहस न कीजिये, चारुदत्त जी अभी जीते हैं, पर दुख से व्याकुल कौन सुनै, कौन मानै ?

चारु—(घबरा कर) हाय प्रिया, तुम ने मेरे जीते जी क्या ठान लिया (ऊपर देख कर साँस लेकर)

चरित तुम्हारे जोग रहे न जो यहि लोक के।
करन स्वर्गसुखभोग पति बिन सती उचित नहीं ॥

(बेसुध हो जाता है)

शर्वि—ओह ! सब बिगड़ा जाता है !
जल्दी को तो काज, आप यहाँ बेसुध परे।
सब बिगरत है आज, कियो जतन जेहि हेत यह ॥

बसंत—उठिये, चल कर बाईजी को जिलाइये, आप के घबराने से अनर्थ हो जायगा।

चारु—(जाग कर जल्दी से उठ कर) हा प्रिया ! कहाँ हो बोलो ?

चंद—इधर आइये, इधर।

शर्वि—बाईजी आग के पास पहुँच गई हैं, जल्दी चलिये।

चारु—(जल्दी जल्दी चलता है)

(सब बाहर जाते हैं)

(पाँचवाँ स्थरन—एक खुली जगह में एक ओर आग जल
रही है, धूता का आँचल रोहसेन खींच रहा है,
रदनिका और मैत्रेय पास खड़े हैं)

धूता—(आँखों में आँसू भर कर) बेटा मुझे छोड़ दो, मैं आर्यपुत्र का अमंगल सुनना नहीं चाहती, मुझे छोड़ दो।

(उठ कर अंचल छुड़ा कर आग के पास जाती है)

रोह—अम्मा ठहरी रहो, मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता।

(दौड़कर फिर अंचल पकड़ लेता है)

मैत्रे—बाईजी, ब्राह्मणी को अलग चिता पर बैठना पाप लिखा है।

धूता—मैं पाप कर लूँगी, मैं आर्यपुत्र का अमंगल सुनना नहीं चाहती। रदनिका! लड़के को पकड़ ले।

रद—(करुणा से) बाई जी! मुझे आप क्या कहती हैं?

धूता—(मैत्रेय को देख कर) आपही पकड़ लीजिये।

मैत्रे—(घबरा कर) अब आप काज सिद्ध करना चाहती हैं तो बाम्हन को आप से आगे करना चाहिये, मैं आप के आगे चलता हूँ।

धूता—इन दोनों ने तो जवाब दे दिया (लड़के को गले लगा कर) बेटा! तुम आप सम्हले खड़े रहो, हमलोगों को तिलाँजली देना, मेरे सब मनोरथ मिट्टी में मिल गये, अब आर्यपुत्र तुम्हारे सम्हालने वाले नहीं।

(शर्विलक के साथ चारुदत्त आता है)

चारु—(सुन कर दौड़ कर)हमी लड़के को सम्हालेंगे।

(लड़के को गोद में उठा कर गले लगा लेता है)

धूता—(देख कर) यह तो आर्यपुत्र की सी बोली जान पड़ती है। (फिर देख कर) बड़ी बात हुई, आर्यपुत्र आपही आ गये।

रोह—(देख कर हर्ष से) अरे चाचा मुझे उठा रहे हैं ! (धूता से) चाचा ने मुझे पकड़ लिया ।

(चारुदत्त को लिपट जाता है)

चारु—(धूता से)

प्रानप्रिया आछत प्रियहि ठान्यो मन यह काह ?
मूदै नलिनी नैन कहुँ बिन अथये दिननाह ?

धूता—आर्यपुत्र ! इसी से तो जड़ कहलाती है ।

मैत्रे—(देख कर हर्ष से) चारुदत्त जी को इन आँखों से फिर देख लिया ! वाह रे सती का प्रभाव ! कि आग में कूदना ठान लिया था तो पति मौत से बच गया ! (चारुदत्त से) जय हो ! बधाई है !!

चारु—आओ जी, मैत्रेय । (गले लगाता है)

रद—कैसा अच्छा संजोग है । (चारुदत्त के पाँव पड़ती है)

चारु—(रदनिका की पीठ पर, हाथ धर कर) रदनिका उठो (हाथ पकड़ कर उठाता है)

धूता—(बसन्तसेना को देखकर) कहो बहिन सब कुशलक्षेम ?

बसन्त—अब जाके कुशल हुई । (एक दूसरी से मिलती हैं)

शर्वि—बधाई है !

चारु—आपकी कृपा से ।

शर्वि—बसन्तसेना बाई ! राजा आप पर प्रसन्न होकर आप को बहू की पदवी देते हैं ।

बसन्त—जी, मेरे मनोरथ पूरे हो गये ।

शर्वि—(बसन्तसेना के ऊपर चादर डाल कर घूँघट काढ़ देता है) (चारुदत्त से) कहिये जोगी का क्या किया जाय ?

चारु—कहो जोगी तुम क्या चाहते हो ?

योगी—संसार का उलट फेर देख कर अब मेरा सन्यास में आदर दूना हो गया ।

चारु—भाई, इसने अपना मन पक्का कर लिया, यह राज भर में सब बिहारों का कुलपति कर दिया जाय ।

शर्विं—जो आप की इच्छा।

जोगी—मैं भी यही चाहता हूँ।

बसन्त—मेरे भी मन की बात हुई।

शर्वि—और स्थावरक?

चारु—वह आज से दास न रहे, दोनों चाँडाल चाँडालों के चौधरी कर दिये जायँ, चंदनक दंडनायक किया जाय और राजा के साले का जो पहिले काम था वही अब भी रहे।

शर्वि—जो आप की आज्ञा, पर उस का बचना ठीक नहीं।

चारु—हम उसको अभय कर चुके।

शर्वि—कहिये और भी कोई ऐसा काम है जो मैं कर सकता हूँ?

चारु—इस से बढ़ के और क्या होगा?

मिटो अजस पायन परो बैरी दियो छुड़ाय।
निज हित आर्यक नृप भयो रिपु जर मूल नसाय॥
मिली प्रिया यह फेरि मोहि भयो आप सों नेह।
का चहिये अब और जो कहैं हमै तुम देह॥

एकन को भरपूर करै अरु एकन तुच्छ बनावती है।
ऊँचे उठावति एकहि एकहि खैंचि कै नीचे गिरावती है॥
साथ किये हित वैरिन को यह लोक की रीति जनावती है।
कूप को यंत्रघरी सी सबै भवितव्यता नित्य नचावती है॥
पूरी रहै धन धान सों भूमि औ गाय सबै जग होंहि दुधारी।
औसर पै बरसैं बदरा जनआनँद हेत नहै सुखयारी॥
लोग रहैं सब नित्य सुखी द्विज साधु रहैं विधि सों व्रतधारी।
शत्रु नसाय सबै यहि देश की धर्म से भूप करैं रखवारी॥

(सब बाहर जाते हैं)

॥ इति॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.



